CRISTO

हिंदी व्याकरण

सहायक पुस्तिका 1 से 8 तक

हिंदी व्याकरण–1

1. विभिन्न ध्वनियाँ

स्वयं करें।

2. ध्वनियों का प्रयोग

(क) 4. ✓, प्रश्न **(ख)**, **(ग)**, **(घ)**, **(ङ)**, **(च)**, **(छ)** स्वयं करें।

3. भाषा

(क) 1. जिस साधन के द्वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं, उसे भाषा कहते हैं। 2. भाषा के निम्नलिखित दो रूप हैं–(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा। 3. हम जो कुछ भी किसी अभिप्राय से मुख से बोलते हैं, वह भाषा का मौखिक रूप कहलाता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। 4. जब हम अपने विचार लिखकर प्रकट करते हैं, तो यह भाषा का लिखित रूप होता है। इसे ही लिखित भाषा कहते हैं। **(ख)** हिंदी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, बंगाली **(ग)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓ 8. ✓ **(घ)** 1. भाषाएँ 2. गूँगों 3. बोलकर, लिखकर 4. मौखिक **(ङ)** स्वयं करें। **(च)** यदि भाषा न होती तो हम गूँगों की तरह व्यवहार करते।

4. वर्ण-विचार

(क) 1. जिस मूल ध्वनि के टुकड़े न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं। 2. किसी भाषा के समस्त वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। **(ख)** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ **(ग)** शंख, ऊँट, साँप, ताँगा, कंघा, पंख, बंदर, पूँछ, बाँस **(घ)** 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) **(ङ)** 1. श, ष, स, ह 2. क्ष, त्र, ज्ञ, श्र **(च)** 1. क, ख, ग, घ, ङ 2. च, छ, ज, झ, ञ 3. ट, ठ, ड, ढ, ण 4. त, थ, द, ध, न 5. प, फ, ब, भ, म।

5. स्वरों की मात्राएँ

(क) 1. स्वरों के बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं। 2. ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ 3. 'अ' स्वर का मात्रा-चिह्न नहीं होता। **(ख)** कुत्ता, बिल्ली, गाय, हाथी, जूते, छतरी, चील, चूहा, सितार, ज़ेबरा, मछली, कुरसी, गमला, रिक्शा, हथौड़ी **(ग)** मोर, टेलीविज़न, बीन, घोड़ा, पुस्तक, फूल, ताला, कौआ, कोट **(घ)** आ, ओ, उ, उ, ए, ई, ऋ, ऊ, ऋ, उ, आ, उ, ए, ऊ

6. शब्द-रचना

(क) वर्णों के ऐसे मेल को शब्द कहते हैं, जिसका कोई अर्थ हो। **(ख)** कलम, मटर, गोभी, गाय, गधा, तोता **(ग)** थरमस, कटहल, गेंद, संतरा, तरबूज, कागज़, जहाज़, विमान, नाव, कलम, पीपल, बरगद, सरकस, मकान, दुकान **(घ)** कंघा, साबुन, तौलिया, पलंग, बरतन, चप्पल, जूते, मोबाइल, जल, भोजन, दूध, कुरसी **(ङ)** नल, रामपुर, बस, करेला, जल, लखनऊ, कान, पपीता, कलम, बनारस, नाक, नमकीन, कमरख, टमाटर, जीभ, चूरन, रेलगाड़ी, तलवार, सिर, कमीज़ **(च)** कौआ, चिड़ियाँ, लड़के, लड़कियाँ, झूले, पेड़, फूल, घास, पार्क, व्यक्ति, खंभा, बिजली के तार, बुढ़िया, बैडमिंटन रैकेट, शटल, स्लाइडर, छड़ी, पत्थर, झाड़ी, बैंच, दीवार, प्रवेश द्वार, बच्चे, पत्ते।

7. पर्यायवाची शब्द

(क) रमा, गज, वृक्ष, कुसुम **(ख)** सूरज, रवि घोड़ा, अश्व ध्वज, पताका पक्षी, चिड़िया **(ग)** 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

8. विलोम शब्द

(क) दोष, मित्र, निर्धन, अपकार, असत्य, बुराई, पराजय, दूर, विष, नरक, अज्ञान, कुपुत्र

(ख) 1. (य) 2. (द) 3. (अ) 4. (व) 5. (स) 6. (ल) 7. (ब) 8. (र) **(ग)** 1. जो शब्द परस्पर विपरीत अर्थ बताएँ, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। 2. विलोम शब्दों को विपरीतार्थी शब्दों के नाम से भी जाना जाता है। **(घ)** 1. हलका 2. रंक 3. सेवक 4. गरीब

9. समान ध्वनि वाले शब्द

(क) सायंकाल, काला, जड़, कीमत, पका हुआ, मज़बूत, बराबर, वस्तुएँ आदि, हँसने की क्रिया, एक पक्षी **(ख)** 1. **पिता**–रवि के पिता अध्यापक हैं। **पीता**–रवि प्रतिदिन दूध पीता है। 2. **शाम**–वह शाम को खेलता है। **श्याम**–वह श्याम रंग का है। 3. **समान**–रजत सभी से समान व्यवहार करता है। **सामान**–उसने सारा सामान कमरे में रख दिया।

10. वाक्यांश के लिए एक शब्द

(क) 1. कामचोर 2. मूक 3. सहपाठी 4. सत्यवादी **(ख)** 1. दोषी 2. बधिर 3. निर्दोष 4. वाचाल 5. अनपढ़

11. एक-अनेक

(क) स्वयं करें। **(ख)** गमले, थैले, कमीज़ें, उँगलियाँ, ताले, पेंसिलें, बिल्लियाँ, डिब्बे, रुपए, करेले, आँखें, बच्चे, नालियाँ, साड़ियाँ, डालियाँ

12. कैसा? कितना?

(क) काला कौआ, **लंबा** कोट, **पीला** फूल, **लाल** साड़ी, **गुलाबी** गुब्बारा, **हरी** पत्ती **(ख) चार** केले, **एक** आम, **चार** संतरे, **तीन** मुरगियाँ, **छह** मछलियाँ, **छह** पेंसिलें **(ग) बड़ा** तरबूज, **दो** बिल्लियाँ, **मीठे** रसगुल्ले, **नीली** कमीज़, **बुद्धिमान** बालक, **गरम** चाय।

13. काम बताने वाले शब्द

(क) बच्चे होली खेल रहे हैं। औरत जलते दीये लिए खड़ी है। लड़का अनार बम जला रहा है। लोग दीपावली मना रहे हैं। लड़की जलती हुई फुलझड़ी लिए खड़ी है। **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✗ 8. ✗ **(ग)** 1. चला रहा है 2. झूल रही है 3. फुटबॉल खेल रहा है 5. पढ़ रहा है।

हिंदी व्याकरण–2

1. भाषा

(क) 1. वह साधन, जिसके द्वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं, उसे भाषा कहते हैं। 2. जब मुख से बोलकर विचार प्रकट किए जाते हैं और सुनकर समझे जाते हैं, तो वह भाषा का मौखिक रूप होता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। 3. पढ़ने योग्य जो कुछ लिखा जाता है, वह भाषा का लिखित रूप होता है। इसे ही लिखित भाषा कहते हैं। 4. ध्वनियों को लिखित रूप देने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। ये चिह्न जिस रूप में लिखे जाते हैं, उसे लिपि कहते हैं। 5. कहीं-कहीं किसी क्षेत्र विशेष में भाषा विशेष रीति से बोली जाती है। इसे उस स्थान की बोली कहते हैं। **(ख)** 1. मातृभाषा 2. अनेक 3. भाषा 4. हिंदी 5. देवनागरी **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, हरियाणा, बिहार, छत्तीसगढ़ **(ङ)** लिखित रूप, लिखित रूप, मौखिक रूप, लिखित रूप

2. वर्ण-विचार

(क) 1. जिस मूल ध्वनि के खंड न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं। 2. जब वर्णों को क्रमबद्ध रूप में सुव्यवस्थित करते हैं, तब उसे वर्णमाला कहते हैं। 3. वर्णों के दो भेद हैं– (1) स्वर (2) व्यंजन। 4. जिस वर्ण का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है, उसे स्वर कहते हैं। 5. जो वर्ण स्वर-ध्वनि की सहायता से बोला जाता है, उसे व्यंजन कहते हैं। 6. जो व्यंजन दो भिन्न व्यंजनों के योग से बनता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। 7. जिस ध्वनि का उच्चारण करते

समय वायु नाक से निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। **(ख)** ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** कौ, खु, गृ, घी, चि, छि, जो, झौ, पृ, मी, फि, यो, बौ, रु, भृ, ली **(ङ)** केतली, गुलाब, जिराफ़, दाँत, अँगूठी **(च)** असली–ी, दिवाकर–ि, ा, भारतीय–ा, ी अशोभनीय–ो, ी कुसुमलता–ु, ु, ा पीपली–ी, ी छुआछूत–ु, ा, ू बिल्ली–ि, ी पौधा–ौ, ा

3. वर्ण-संयोग

(क) य्, प्, भ्, ल्, फ्, म्, ठ्, ब्, च्, ज्, क्, त्, झ्, ख्, थ्, ञ्, ग्, ध्, क्ष्, त्र्, न्, श्, स्, ह् **(घ)** **च्च**–ब्ब, ट्ट, प्प, म्म, ल्ल, द्द, त्त **सच्चा**–गुब्बारा, मिट्टी, छप्पर, अम्मा, बल्ला, गद्दा, पत्ता **खच्चर**–धब्बा, पट्टी, गप्प, सम्मान, बिल्ली, भद्दा, गत्ता **(ग)** 1. बस्ता 2. गद्दा 3. बल्ब 4. गुलदस्ता 5. अन्न **(घ)** 1. दिव्य 2. शिल्पा 3. स्मिता 4. बुद्ध 5. कृष्ण 6. स्नेहा 7. दीप्ति 8. नित्या **(ङ)** लट्टू, ट्रक, फ्रॉक

4. शब्द

(क) 1. वर्णों के ऐसे समूह को शब्द कहते हैं, जिसका कोई अर्थ हो। 2. जिस शब्द का कोई–न–कोई अर्थ होता है, उसे सार्थक शब्द कहते हैं। 3. जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। 4. निरर्थक शब्द सार्थक शब्दों के साथ जुड़कर सारवान हो जाते हैं। **(ख)** कबूतर, कार, गाय, टी०वी, संतरा, पंखा **(ग)** 1. सार्थक 2. निरर्थक 3. सार्थक 4. सार्थक 5. निरर्थक **(घ)** कमल, छत, डमरू, धनुष, खरगोश, जहाज़, ढपली, नमक, गगन, झरना, तबला, पतंग, घर, टमाटर, थल, फल, चरखा, ठठेरा, दवात, बकरा

5. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. किसी शब्द का समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. पर्यायवाची शब्दों को समानार्थी शब्दों के नाम से भी जाना जाता है। **(ख)** वृक्ष/तरु, धेनु/गौ, कपि/वानर, काक/काग, पंकज/कमल, सूर्य/रवि, ध्वज/पताका, मीन/मत्स्य, नेत्र/नयन, सर्प/नाग **(ग)** 1. (द) 2. (र) 3. (अ) 4. (य) 5. (ब) 6. (स) **(घ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ)

6. विलोम शब्द

(क) 1. किसी शब्द का उलटा (विपरीत) अर्थ व्यक्त करने वाले शब्द को विलोम शब्द कहते हैं। 2. विलोम शब्दों को विपरीतार्थी शब्द के नाम से भी जाना जाता है। **(ख)** अंधकार, अहित, परतंत्र, अन्याय, घृणा, चोटी, पुण्य, दोष, ठंडा, उत्तर, पराजय, न्यून, कुपुत्र, विष, सस्ता, दंड **(ग)** 1. अज्ञानी 2. पका 3. दुर्जन 4. पीछे 5. अस्वस्थ 6. दोषों 7. अपवित्र 8. हानि, दुःख **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✗ 7. ✓ 8. ✓ **(ङ)** 1. (य) 2. (ल) 3. (श) 4. (स) 5. (व) 6. (अ) 7. (ब) 8. (स) 9. (र) 10. (द) **(च)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (स) 6. (स)

7. वाक्यांश के लिए एक शब्द

(क) वह उपयुक्त शब्द जो वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त होकर अभिप्राय को पूर्ण रूप से प्रकट करता है, उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं। **(ख)** 1. कामचोर 2. सदाचारी 3. साप्ताहिक 4. शताब्दी 5. अल्पज्ञ 6. सर्वोच्च 7. दानी 8. अतिथि 9. वाचाल 10. दर्शनीय **(ग)** 1. देखने वाला 2. पढ़ने वाला 3. लिखने वाला 4. दान देने वाला 5. प्रतिदिन होने वाला 6. प्रतिमाह होने वाला 7. अधिक बोलने वाला 8. कम बोलने वाला 9. जिसने पाप किया हो 10. जिसका अंत न हो 11. प्रतिमाह होने वाला 12. प्रतिवर्ष होने वाला **(घ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स) 6. (स) 7. (अ) 8. (स) 9. (अ) 10. (ब) **(ङ)** 1. महाराणा प्रताप निर्भय थे। 2. हमें अतिथि का आदर–सत्कार करना चाहिए।

3. श्रवण कुमार सदाचारी था। 4. भारत के प्राचीन मंदिर दर्शनीय हैं। 5. कर्ण दानी व्यक्ति था।

8. समान ध्वनि वाले शब्द

(क) 1. ठिकाना, पेड़ का पत्ता 2. भगवान का भोग, राजमहल 3. देना, दीपक 4. आकाश, बहुत बड़ा ढेर 5. एक पक्षी का नाम, हँसने की क्रिया 6. सुबह से शाम तक का समय, गरीब

9. नाम बताने वाले शब्द

(क) 1. नाम बताने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। **(ख)** 1. लड़की 2. चिड़िया 3. बिल्ली 4. शेर 5. लड़का 6. बगीचे 7. कुत्ता **(ग)** गणेश, भगतसिंह, राम, बंदर, मोर, ज़ेबरा **(घ)** 1. और 2. स्वयं करें। 3. लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, दिल्ली, मुंबई 4. लालकिला, ताजमहल, कुतुबमीनार, चारमीनार, जंतर-मंतर 5. भारत, चीन, जापान, अमेरिका, रूस 6. आम, केला, तरबूज, सेब, अमरूद 7. गुलाब, कमल, गैंदा, सूरजमुखी, चमेली

10. एक और अनेक

(क) 1. व्याकरण में संख्या को वचन कहते हैं। 2. संख्या में एक होने को एकवचन कहते हैं। 3. संख्या में एक से अधिक (अनेक) होने को बहुवचन कहते हैं। **(ख)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** बच्चे, दरवाज़े, खिड़कियाँ, महिलाएँ, चींटियाँ, झाड़ियाँ, मकड़ियाँ, जूते, तारे, साड़ियाँ, आँखें, कुत्ते, गधे, करेले, कमीज़ें, चरखे **(घ)** सेना, संतरा, भेड़, बकरा, पौधा, छिपकली, जलेबी, परी, प्याला, केला, अँगूठी, चप्पल, पहाड़ी, देवी, टोपी, लकड़ी **(ङ)** बहुवचन, बहुवचन, एकवचन, एकवचन, बहुवचन, एकवचन

11. लिंग

(क) पुल्लिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग **(ख)** 1. राहुल पिता जी के साथ मंदिर गया। 2. माता जी ने नौकरानी को घर भेज दिया। 3. छात्र समय पर विद्यालय पहुँच गया। 4. शेरनी ने हिरनी का पीछा किया। 5. दादी जी ने लड़की को निकट बुलाया। **(ग)** सेविका, नौकरानी, दरज़िन, मालिन, गाय, ग्वालिन, दादी, ममेरी, बंदरिया, स्त्री, अध्यापिका, मुरगी **(घ)** शेर, मालिक, अभिनेता, गायक, राजा, घोड़ा, लड़का, छात्र, भगवान, देव, भाई, गुड्डा

12. कैसा? और कितना?

(क) हरी, पका, लाल, पीली, ऊँचे, स्वादिष्ट **(ख)** तीन, आठ, चार, साफ़, स्वादिष्ट, तीन **(ग)** 1. भूखा 2. प्यासा 3. नई 4. पुराने 5. क्रोधित 6. पुरानी 7. मैले 8. भला 9. गरम 10. ठंडा 11. लाल 12. विशाल **(घ)** 1. कौआ 2. नींबू 3. केले 4. लड़का 5. पत्ता 6. धागा 7. कपड़ा 8. आदमी 9. जूता 10. छड़ी 11. पर्वत 12. रास्ता 13. गड्ढा 14. लट्ठे 15. पुल 16. रुपये 17. आदमी 18. लोग 19. दोस्त 20. सेब 21. भाई 22. करेला 23. बहन 24. पहलवान 25. व्यक्ति 26. आसमान 27. पेंसिलें 28. भाई 29. सिक्का 30. बहन

13. क्रिया शब्द

(क) 1. पोंछा लगाना, रेंकना, नहाना, देखना, चढ़ना, सींचना **(ख)** 1. धो रहा है। 2. बजा रहा है। 3. पढ़ रही हैं। 4. जा रही है। 5. पी रही है।

हिंदी व्याकरण-3

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. वह साधन जिसके द्वारा हम अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं उसे भाषा कहते हैं। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। 3. ध्वनि-चिह्नों (वर्णों) को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं। 4. मुख से जो कुछ बोला और कानों से सुना जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप होता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। 5. जब विचार लिखकर प्रकट किए जाते हैं, तब जो कुछ लिखा जाता है, वह भाषा का लिखित रूप होता है। इसे ही

लिखित भाषा कहते हैं। 6. व्याकरण वह शास्त्र है, जो हमें भाषा को शुद्ध रूप से प्रयोग करने के नियमों का ज्ञान कराता है। **(ख)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (स) **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. भाषा 2. मौखिक 3. फ़ारसी 4. बोली 5. भाषा **(ङ)** 1. हिंदी 2. संस्कृत 3. तमिल 4. मराठी 5. बाँग्ला **(च)** 1. (च) 2. (द) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके खंड (टुकड़े) न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं। 2. जिस वर्ण का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावट आती है, उसे व्यंजन कहते हैं। 3. जिन स्वरों के बोलने में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है—अ, इ, उ, ऋ। 4. जिन स्वरों के बोलने में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। 5. जिस वर्ण का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावट आती है, उसे व्यंजन कहते हैं। **(ख)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ **(ग)** 1. अंत:स्थ 2. ऊष्म 3. संयुक्त 4. पवर्ग 5. दीर्घ **(घ)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (अ) **(ङ) साँप**-अनुनासिक, **रंग**-अनुस्वार, **संग**-अनुस्वार, **काँच**-अनुनासिक, **ऊँट**-अनुनासिक, **कंठ**-अनुस्वार, **पूँछ**-अनुनासिक, **ताँगा**-अनुनासिक, **ठंडा**-अनुस्वार, **मुँह**-अनुनासिक

3. वर्ण-संयोग

(क) स्वर-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ **मात्राएँ**-×, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ **(ख)** च, छ, ज, झ, ञ, क, ख, ग, घ, ङ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, ह, ष, प, फ, भ **(ग) मात्रा**-ृ, ै, ा, ी, ि, ू, ो, ु, े **स्वर**-ऋ, ऐ, आ, ई, इ, ऊ, ओ, उ, ए **(घ)** ट्रक, ड्रम, मच्छर, मक्खी

4. शब्द-विचार

(क) 1. वर्णों का ऐसा मेल अथवा समूह जिसका कोई अर्थ हो, उसे शब्द कहते हैं। 2. अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद हैं—(1) एकार्थी शब्द (2) पर्यायवाची शब्द (3) विलोम शब्द (4) अनेकार्थी शब्द 3. जिन शब्दों का अर्थ प्रत्येक स्थान व परिस्थिति में पूर्ववत् रहता है अर्थात् बदलता नहीं है, उन्हें एकार्थी शब्द कहा जाता है। 4. जो शब्द प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। 5. हिंदी में प्रचलित वे शब्द जो देश की विभिन्न बोलियों के द्वारा हिंदी भाषा में स्थान पा गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं; जैसे-थैला, डिबिया, बेटा, रोटी, झटपट, लड़का, कपड़ा, पेड़, पगडंडी, ईंट, सड़क आदि। 6. हिंदी में कुछ विदेशी भाषाओं के शब्द स्थान पाकर प्रचलित हो गए हैं। ऐसे शब्द विदेशी या आगत शब्द कहलाते हैं। 7. संस्कृत भाषा का वह शब्द जो हिंदी भाषा में ज्यों-का-त्यों प्रयोग किया जाता है, उसे तत्सम शब्द कहते हैं। **(ख)** रात्रि, सर्व, गुहा, नृत्य, घट, चंद्र, कीट, मत्स्य, वार्ता, कूप भ्रमर, मयूर, दिवस, पिपासा, हस्त, काक, कर्ण, प्रस्तर **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✓

5. पर्यायवाची शब्द

(क) 1. परस्पर समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. पर्यायवाची शब्दों को समानार्थी शब्दों के नाम से भी जाना जाता है। **(ख)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) **(ग)** 1. (य) 2. (ल) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स) 7. (श) 8. (र) 9. (द) 10. (व) **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

6. विलोम शब्द

(क) 1. परस्पर विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। 2. विलोम शब्द को विपरीतार्थी शब्द के नाम से भी जाना जाता है। **(ख) (क)** 1. (य) 2. (र) 3. (ल) 4.

(व) 5. (ब) 6. (स) 7. (द) 8. (अ) **(ख)** 1. (य) 2. (र) 3. (ल) 4. (व) 5. (अ) 6. (स) 7. (ब) 8. (द) **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. निंदा 2. कठोर 3. विपक्ष 4. अनैतिक

7. वाक्यांश के लिए एक शब्द

(क) 1. प्रियदर्शी 2. निर्दोष 3. मितभाषी 4. परीक्षक 5. परीक्षार्थी 6. वाचाल **(ख)** 1. जो सबका हित चाहता हो। 2. जो शास्त्रों की जानकारी रखता हो 3. जो ईश्वर में विश्वास रखता हो 4. जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो **(ग)** 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

8. मुहावरे

(क) 1. जो वाक्यांश शाब्दिक अर्थ के लिए नहीं अपितु विशेष अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है, उसे मुहावरा कहते हैं। 2. मुहावरों के मूल रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता। **(ख)** 1. अनपढ़ 2. मूर्ख बनाना 3. सबको समान समझना 4. बहुत दिनों बाद दिखाई देना 5. बहुत मेहनत करना **(ग)** 1. अक्ल चकराना 2. शर्मिंदा होना 3. सितारा चमकना 4. बहुत चालाक होना 5. खिल उठना **(घ)** 1. कितना ही ज़ोर लगाओ, यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी। 2. कोल्हू का बैल बनकर रामू परिवार के लिए दो वक्त के भोजन का प्रबंध कर पाता है। 3. दुष्ट सदा सज्जनों पर कीचड़ उछालते रहते हैं।

9. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, जाति, दशा, अवस्था या भाव आदि का नाम बताने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के पाँच भेद होते हैं–(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा (4) समूहवाचक संज्ञा (5) पदार्थवाचक संज्ञा 2. जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, वह व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाता है; जैसे–राम, भगत सिंह, विवेकानंद, रामायण, लालकिला, रामचरितमानस, दिल्ली, जापान आदि। 3. जिस शब्द से किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों आदि का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–बालक, मनुष्य, पशु, कुत्ता, बिल्ली, शेर, पेड़, पुस्तक, मैदान, शहर आदि। 4. जो शब्द किसी प्राणी या पदार्थ की दशा या अवस्था का बोध कराता है, भाववाचक संज्ञा कहलाता है; जैसे–सुख, दु:ख, जवानी, बुढ़ापा, बचपन, क्रोध आदि। 5. जिस शब्द से समूह या समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे–परिवार, कक्षा, दल, सेना, गुच्छा, भीड़ आदि। **(ख)** 1. थैला, बाज़ार 2. लोग 3. भीड़ 4. सैनिक, सीमा 5. बच्चा 6. गन्ने, मिठास 7. सोने, आभूषण 8. अमित, पत्र 9. बंदर, दीवार 10. कृष्ण, कंस **(ग)** **गीता**–व्यक्तिवाचक, **पुस्तक**–जातिवाचक, **नारियल**–जातिवाचक, **कार**–जातिवाचक, **ईमानदारी**–भाववाचक, **साइकिल**–जातिवाचक, **गुच्छा**–समूहवाचक, **चेतक**–व्यक्तिवाचक, **मयूरी**–व्यक्तिवाचक, **राम**–व्यक्तिवाचक, **नगर**–जातिवाचक, **घोड़ा**–जातिवाचक, **राजधानी**–जातिवाचक, **प्रधानमंत्री**–जातिवाचक, **देश**–जातिवाचक, **फल**–जातिवाचक, **गाँव**–जातिवाचक, **सीता**–व्यक्तिवाचक, **मकान**–जातिवाचक, **मोहन**–व्यक्तिवाचक, **चाँदी**–पदार्थवाचक **(घ)** **माता**–मातृत्व, **कठोर**–कठोरता, **गरम**–गरमी, **पिता**–पितृत्व, **कोमल**–कोमलता, **ठंडा**–ठंड, **चलना**–चाल, **लाल**–लालिमा, **उदार**–उदारता, **गरीब**–गरीबी, **सफ़ेद**–सफ़ेदी, **लड़का**–लड़कपन, **सुंदर**–सुंदरता, **नीला**–नीलिमा, **बच्चा**–बचपन, **ईमानदार**–ईमानदारी, **लड़का**–लड़कपन, **मित्र**–मित्रता, **लिखना**–लिखाई, **दुष्ट**–दुष्टता, **शिशु**–शैशव, **वीर**–वीरता, **कायर**–कायरता, **पराया**–परायापन **(ङ)** 1. द्रौपदी मुर्मू 2. नरेंद्र मोदी 3. नई दिल्ली 4. अयोध्या 5. रामायण

10. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री अथवा पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग

कहते हैं। 2. जिन शब्दों से पुरुष (नर) जाति का बोध हो, उन्हें पुल्लिंग कहा जाता है; जैसे– बालक, पुरुष, मोर, हाथी, बैल, शेर। 3. जिन शब्दों से स्त्री (मादा) जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहा जाता है; जैसे–बालिका, स्त्री, मोरनी, हथिनी, गाय, शेरनी। **(ख)** **वृद्ध**–पुल्लिंग, **सेठ**–पुल्लिंग, **पहाड़**–पुल्लिंग, **मच्छर**–सदैव पुल्लिंग, **बकरी**–स्त्रीलिंग, **खटमल**–सदैव पुल्लिंग, **लोहा**–पुल्लिंग, **मक्खी**–सदैव स्त्रीलिंग, **भेड़**–सदैव स्त्रीलिंग, **छिपकली**–सदैव स्त्रीलिंग, **कुत्ता**–पुल्लिंग, **सेना**–स्त्रीलिंग, **राजकुमारी**–स्त्रीलिंग, **रस्सा**–पुल्लिंग **(ग)** गाय, शिक्षिका, बालिका, मालकिन, स्त्री, मादा, शेरनी, वधू, मोरनी, पुत्री, मालिन, महोदया, चाची, श्रीमती **(घ)** धावक, नर छिपकली, गायक, नर तितली, राजा, नर चील, सेवक, नर चिड़िया, बेटा, पंडित, अध्यापक, नेता, धोबी, भील **(ङ) सदा स्त्रीलिंग रहने वाले**–1. चिड़िया 2. चील 3. मछली **सदा पुल्लिंग रहने वाले**–1. कछुआ 2. खरगोश 3. भालू

11. वचन

(क) 1. संख्या दर्शाने वाले शब्द (संज्ञा) के रूप को वचन कहते हैं। 2. शब्द के जिस रूप से एक प्राणी अथवा वस्तु का बोध होता है, वह एकवचन होता है; जैसे–कुत्ता, तोता, पुस्तक, कुरसी, बिल्ली आदि। 3. शब्द के जिस रूप से दो या दो से अधिक प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध होता है, वह बहुवचन होता है। जैसे–कुत्ते, तोते, पुस्तकें, कुरसियाँ, बिल्लियाँ आदि। 4. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है; जैसे–पिता जी सो रहे हैं।, दादा जी बैठे हैं।, गुरु जी आ रहे हैं।, माता जी बाज़ार गई हैं। **(ख)** **बहन**–एकवचन, **लू**–एकवचन, **पतंग**–एकवचन, **जूँ**–एकवचन, **मालाएँ**–बहुवचन, **चींटियाँ**–बहुवचन, **चूहे**–बहुवचन, **छड़ी**–एकवचन, **साड़ियाँ**–बहुवचन, **केले**–बहुवचन, **कमरा**–एकवचन, **कहानियाँ**–बहुवचन, **जूते**–बहुवचन, **इच्छाएँ**–बहुवचन, **मूली**–एकवचन, **शक्ति**–एकवचन **(ग)** कहानी, साड़ी, सेना, झाड़ी, कमरा, गऊ, जूता, ढेला **(घ)** चूहे, ग्वाले, गउएँ, शिक्षिकाएँ, चिड़ियाँ, डिब्बे, शीशे, धेनुएँ, कलियाँ, खीरे, खाटें, वस्तुएँ, बातें, घड़े, पंखे, मेले **(ङ) बहुवचन बनाने के तीन नियम–**

(1) पुल्लिंग शब्द के अंतिम 'आ' को 'ए' कर देने से–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के	कुत्ता	कुत्ते

(2) स्त्रीलिंग शब्द के अंतिम 'इ' में 'याँ' जोड़कर अथवा 'ई' को 'इयाँ' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
नीति	नीतियाँ	शक्ति	शक्तियाँ

(3) स्त्रीलिंग शब्द के अंतिम 'अ' को 'एँ (ँ)' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
रात	रातें	बात	बातें

(च) 1. घोड़े 2. मछली 3. मक्खियाँ **(छ)** 1. लड़के बैठ गए। 2. गरमी हो रही है, पंखा चला दो 3. केले उधर रखे हैं। 4. जूता यहाँ रखा है। **(ज)** 1. तोते उड़ गए। 2. धोबी कपड़े धो रहे हैं। 3. चोर पकड़े गए।

12. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। 2. जो सर्वनाम बात कहने वाले, बात सुनने वाले तथा किसी अन्य व्यक्ति या प्राणी के लिए प्रयोग होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। 3. जिस सर्वनाम का निकट या दूर की निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करने के लिए प्रयोग किया जाता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते

हैं। 4. जिस सर्वनाम से किसी निश्चित प्राणी या वस्तु का बोध नहीं होता, उसे अनिश्चय-वाचक सर्वनाम कहते हैं। 5. जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। **(ख)** 1. वह 2. मैं 3. किसने 4. कोई 5. क्या **(ग)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) **(घ)** 1. बात कहने वाला अपने लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–**(i) **मैं** बाज़ार गया था। (ii) **मुझे** बैठ जाने दो। (iii) **हम** झूठ नहीं बोलेंगे। (iv) **हमें** जाने दो। 2. बात कहने वाला बात सुनने वाले के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–** (i) मैं **तुम्हें** पुस्तक दूँगा। **तू** चुप रह। (ii) **तुम** घर जाओ। (iii) **आप** कब आएँगे? 3. बात कहने वाला **किसी** अन्य व्यक्ति के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–**(i) **वह** कब आया? (ii) **वे** कब गए? (iii) **उसे** बुलाओ। (iv) **उन्हें** बैठा दो। **(ङ)** 1. मुझे 2. उसे 3. किसने **(च)** 1. माता जी रसोईघर में हैं। वे भोजन पका रही हैं। 2. पिता जी काम पर गए हैं। वे पाँच बजे लौटेंगे। 3. मुन्ना सो रहा है। वह थोड़ी देर में उठ जाएगा। 4. मैदान में कुछ कुत्ते हैं। वे भौंक रहे हैं।

13. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं। 2. विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। **(ख)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (ब) 10. (अ) 11. (ब) 12. (अ) **(ग) गरम** चाय, **लंबा** बाँस, **मीठा** दूध, **ठंडी** आइसक्रीम, **ऊँचा** वृक्ष, **एक** केला, **मीठा** आम, **काला** कौआ, **गहरी** झील, **ऊँची** पहाड़ी, **शरारती** लड़के, **लाल** गुलाब, **हरा** मैदान, **खट्टा** नींबू, **सुंदर** फूल, **पका** फल **(घ) विशेषण–**1. ऊँचे, छोटे 2. तीसरा 3. दयालु 4. बुद्धिमान, मूर्ख 5. भूखा 6. प्यासा 7. गहरी 8. चालाक 9. एक किलोग्राम, साठ 10. दो सौ **विशेष्य–**1. पेड़, फल 2. लड़का 3. बालक 4. सविता, टिंकू 5. शेर 6. कौआ 7. खाई 8. लोमड़ी 9. मटर, रुपए 10. रुपए

14. क्रिया

(क) 1. जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं। 2. वाक्य में जिस कर्ता के साथ कर्म का प्रयोग होता है, उस वाक्य की क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं। 3. जिस वाक्य को अपना अभिप्राय प्रकट करने के लिए कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उस वाक्य में प्रयुक्त क्रिया को अकर्मक क्रिया कहते हैं। 4. वाक्य में कार्य को करने वाले को कर्ता कहते हैं। 5. कर्ता द्वारा की जाने वाली क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। **(ख)** 1. लिखा 2. चमकी 3. डरता है 4. गए 5. खाया 6. है 7. बनाई 8. जाएँगे। **(ग) कर्ता–**1. बढ़ई 2. ज्योति 3. नेता 4. धोबी 5. दादा जी **कर्म–**1. कुरसी 2. खीर 3. गुड़िया 4. कपड़े 5. आम **(घ)** 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. सकर्मक 6. सकर्मक 7. सकर्मक 8. सकर्मक 9. अकर्मक 10. अकर्मक 11. सकर्मक 12. अकर्मक 13. सकर्मक 14. सकर्मक 15. अकर्मक

15. काल

(क) 1. क्रिया के घटित होने के समय को ही व्याकरण में काल कहते हैं। 2. क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ था, उसे भूतकाल कहते हैं। **उदाहरण–**(1) बच्चा सो गया। (2) दादा जी बाज़ार गए थे। (3) नेहा स्कूल गई। (4) बाग में मोर था। 3. क्रियाओं के जिस रूप से यह प्रकट हो कि कार्य अब भी जारी है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं। **उदाहरण–**(1) नेहा बैठी है। (2) राजू स्कूल जाता है। (3) मैं पढ़ रहा हूँ। (4) बच्चे खेल रहे हैं। 4. क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के होने का

बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं। **उदाहरण–**(1) अगले माह वह अपना जन्मदिन मनाएगा। (2) राजू फल तोड़ेगा। (3) ग्वालिन गाय का दूध निकालेगी। (4) बच्चे मेला देखने जाएँगे। **(ख)** 1. वर्तमानकाल 2. भविष्यत्काल 3. भूतकाल 4. वर्तमानकाल 5. वर्तमानकाल 6. भूतकाल 7. भविष्यत्काल **(ग) भूतकाल–**1. रवि बाज़ार गया। 2. कल बारिश हुई थी। **वर्तमानकाल–** 1. नेहा मंदिर जाती है। 2. विनय पढ़ रहा है। **भविष्यत् काल–**1. हम मेला देखने जाएँगे। 2. स्मिता कविता सुनाएगी। **(घ)** 1. राजीव घर जा रहा है। 2. घोड़े हिनहिना रहे थे। 3. धोबी कपड़े धोएँगे। 4. लड़के शोर मचा रहे थे। 5. पक्षी घोंसले में जाएँगे। 6. बादल गरज रहे थे। 7. पिता जी बाज़ार जा रहे हैं। 8. मैं मंदिर जा रहा हूँ। **(ङ)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (अ)

हिंदी व्याकरण–4

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. जिस माध्यम से हम अपने विचार प्रकट करते हैं और दूसरों के विचार समझ पाते हैं, उसे भाषा कहते हैं। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। 3. ध्वनि चिह्नों को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं। 4. वह शास्त्र जो हमें किसी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने, बोलने तथा पढ़ने के नियमों का ज्ञान कराता है उसे व्याकरण कहते हैं। **(ख)** 1. जब हम अपने विचार मुख से बोलकर प्रकट करते हैं, तो यह भाषा का मौखिक रूप होता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। बातचीत, भाषण, वाद-विचार, कहानी, कथा या घटना का वर्णन सुनाने में भाषा के इस रूप को ही प्रयोग किया जाता है। 2. अपने भावों या विचारों को लिखकर प्रकट करने में भाषा का जो रूप दिखाई पड़ता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। पत्र, लेख, पुस्तक, समाचार-पत्र आदि में भाषा के लिखित रूप का ही प्रयोग किया जाता है। 3. बालक अपने परिवार अथवा माता के संपर्क में रहकर वही भाषा सीख जाता है, जो उसकी माता बोलती है। वही उसकी मातृभाषा होती है। किसी हिंदी भाषी परिवार में जन्म लेने वाला बालक प्रारंभ से ही हिंदी भाषा के परिवेश में रहकर हिंदी भाषा ही सीख सकता है। यही उसकी मातृभाषा होगी। 4. जब कोई भाषा राष्ट्र के अधिकांश भू-भाग पर बोली व समझी जाती है, तो वह राष्ट्रभाषा बन जाती है। हिंदी भारतवर्ष के अधिकांश भू-भाग पर बोली व समझी जाने के कारण राष्ट्रभाषा के रूप में जानी जाती है। **(ग)** 1. संस्कृत 2. बोली 3. वाणी 4. मातृभाषा 5. फ़ारसी **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके खंड न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं। वर्ण के दो भेद होते हैं–(क) स्वर (ख) व्यंजन 2. किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी वर्णों के निश्चित व क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। 3. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है अर्थात् जिनके उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में कोई रुकावट न आती हो, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वरों के दो भेद होते हैं–(क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्घ स्वर 4. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावटें आती हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों के तीन भेद हैं–(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अंत:स्थ व्यंजन (ग) ऊष्म व्यंजन **(ख)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓ **(ग)** 1. जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है। इनकी संख्या चार है–अ, इ, उ, ऋ 2. जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक (ह्रस्व स्वर से लगभग दुगुना) समय लगता है, उन्हें 'दीर्घ स्वर' कहा जाता है। दीर्घ स्वरों की संख्या सात है–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ 3. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वायु कंठ, जीभ और तालु को स्पर्श करती है, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है–य, र, ल, व 4. जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख में ऊष्मा

उत्पन्न होती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है—श, ष, स, ह 5. जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय वायु मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या पच्चीस है। इनके अंतर्गत कवर्ग से पवर्ग तक के सभी व्यंजन आते हैं। **(घ) ऊँट**–अनुनासिक, **भँवरा**–अनुनासिक, **दंश**–अनुस्वार, **अंडा**–अनुस्वार, **शंख**–अनुस्वार, **अँगूठा**–अनुनासिक, **गाँठ**–अनुनासिक, **पाँच**–अनुनासिक, **कंघा**–अनुस्वार, **पंख**–अनुस्वार **(ङ)** 1. दो भिन्न व्यंजनों के संयोग से बनने वाले व्यंजन 'संयुक्त व्यंजन' कहलाते हैं। **उदाहरण—**क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र 2. जब एक व्यंजन ध्वनि अपने जैसी ही अन्य ध्वनि से संयुक्त होती है, तो द्वित्व व्यंजन की रचना होती है; जैसे—क् + क = क्क (लक्कड़), म् + म = म्म (चम्मच), प् + प = प्प (छप्पर) आदि। **(च) संयुक्त व्यंजन—**कक्षा, त्रिशूल, ज्ञानी, पत्र, क्षमा, श्रवण **द्वित्व व्यंजन—**उल्लू, छप्पर, पत्ता, छज्जा, किस्सा, बच्चा।

3. वर्ण-संयोग

(क) 1. वर्णों (ध्वनियों) का नियमपूर्वक संयोग जिससे वह अर्थ प्रकट कर सके, वर्ण-संयोग कहलाता है। 2. विचार प्रकट करने हेतु ध्वनियों (वर्णों) का संयोग किया जाता है। इस संयोग से शब्द और शब्दों के योग से वाक्य-संरचना की जाती है। 3. शब्द-रचना हेतु व्यंजन के बाद आने पर स्वर का रूप बदल जाता है। इस बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं। **(ख)** जब 'र' के साथ स्वर नहीं होता, तो यह अगले वर्ण के ऊपर रेफ़ (र्‍) के रूप में लिखा जाता है; जैसे—(र् + म = र्म (कर्म)। जब स्वर रहित व्यंजन के बाद पूरा 'र' जोड़ा जाता है, तो यह उस व्यंजन के नीचे मिलाकर आड़ी रेखा (्र) के रूप में लिखा जाता है; जैसे—क् + र = क्र (क्रम), प् + र = प्र (प्रथम), ग् + र = ग्र (समग्र) आदि।

ट् और ड् के साथ 'र' मिलाने पर यह निम्नलिखित रूप पाता है-ट् + र = ट्र (राष्ट्र, ट्रक), ड् + र = ड्र (ड्रम, ड्रैस) आदि। स् और त् में 'र' मिलाने पर यह निम्नलिखित रूप में लिखा जाता है-स् + र = स्र (सहस्र, स्रोत), त् + र = त्र (त्रय, चित्र, मित्र)

(ग) 'स्' + र – स्रोत, स्राव, सहस्र **'त्' + र –** चित्र, पत्र, मित्र **(घ) क-क्**-पक्का, मक्का **च-च्**-बच्चा, कच्चा, **ज-ज्**-छज्जा, सज्जा, **ध-ध्**-ध्यान, मध्य, **प-प्**-प्याज, प्यासा, **स-स्**-रस्सी, किस्म, **म-म्**-म्यान, सम्मान, **भ-भ्**-सभ्य, अलभ्य, **ब-ब्**-ब्याज, सब्ज़ी, **व-व्**-भव्य, व्यास

4. शब्द-विचार

(क) 1. वर्णों का ऐसा मेल अथवा समूह जिसका कोई अर्थ हो, उसे शब्द कहते हैं। **उदाहरण—**ह् + आ + थ् + ई = हाथी। 2. शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है, तो वह पद कहलाता है। वाक्य से पृथक रहने पर ही वह शब्द होता है। उदाहरण—(1) सत्य बोलो! (इस वाक्य में दो पद हैं।) (2) चरित्र को पूँजी मानो। (इस वाक्य में चार पद हैं।) 3. शब्दों के वर्गीकरण के चार आधार हैं—(क) अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण (ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण (ग) रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण (घ) प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण 4. जो शब्द प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे—**उत्तर—**उत्तर दिशा, जवाब **आम—**सामान्य, आम का फल **कर—**हाथ, किरण, सूँड़, टैक्स **कनक—**सोना, गेहूँ, धतूरा 5. हिंदी में प्रचलित वे शब्द जो देश की विभिन्न बोलियों द्वारा हिंदी भाषा में स्थान पा गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं; जैसे—कपड़ा, पेड़, पगडंडी, ईंट, थैला, डिबिया, बेटा, रोटी, झटपट, लड़का, सड़क आदि। 6. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक तथा काल के अनुसार परिवर्तन या विकार आ जाता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। 7. जिन शब्दों के रूप में लिंग,

वचन, कारक तथा काल के कारण कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(ग)** सर्व, घट, भ्राता, हस्त, वार्ता, कदली, गुहा, कूप **(घ)** नाच, छेद, सीतल, नाक, कौआ, हँसी, भौंरा, पत्थर, कुआँ, नाव, भाई, मुँह **(ङ)** 1. जो शब्द किसी के प्रति नाम-रूप में प्रसिद्ध हो गए हों तथा जिनके खंड सार्थक न हों, उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है; जैसे—घर, मेज़, हाथी, मोर आदि। इन शब्दों के खंड (घर=घ+र, मेज़=मे+ज़, हाथी=हा+थी, मोर=मो+र) कोई अर्थ नहीं देते। 2. जो शब्द दो शब्दों के योग से बने हों तथा खंड करने पर जिनके प्रत्येक खंड का कोई सार्थक अर्थ हो, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे—पाठशाला= पाठ+शाला, सेनापति=सेना+पति, डाकघर=डाक+घर, रसोईघर=रसोई+घर 3. एक से अधिक शब्दों के मेल से बने ऐसे शब्द जिनके प्रयोग उनके खंडों के अर्थ से भिन्न किसी विशिष्ट अर्थ में प्रसिद्ध हो गए हों, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं। **उदाहरण**—नीलकंठ=नील+ कंठ (नीले कंठ वाला)—शिवजी, दशानन=दश+आनन (दस मुखों वाला)—रावण 4. हिंदी में कुछ विदेशी भाषाओं के शब्द स्थान पाकर प्रचलित हो गए हैं। ऐसे शब्द विदेशी या आगत शब्द कहलाते हैं। **उदाहरण—अंग्रेज़ी से**—स्टेशन, कोट, टेलीफ़ोन, बटन, कप, प्लेट, नर्स, डॉक्टर, फ़ोटो, जज, पुलिस आदि। **अरबी से**—इरादा, नकद, जिला, रिश्वत, मुल्ला, औरत, ईमान आदि। **फ़ारसी से**—फ़कीर, मौलवी, तारीख, दरबार, नमूना, मकान, आदमी आदि। 5. संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिंदी भाषा में ज्यों-के-त्यों प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे- अग्नि, घृत, दुग्ध, दिवस, रात्रि, धेनु, आम्र, व्याघ्र आदि। 6. संस्कृत के वे शब्द, जो कुछ बदले हुए रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे—घृत-घी, दुग्ध-दूध, रात्रि-रात, व्याघ्र-बाघ आदि। **(च)** 1. थैला, रोटी, सड़क 2. स्टेशन, औरत, तारीख 3. घर, मेज़, मोर 4. सेनापति, रसोईघर, पाठशाला 5. लंबोदर, पंकज, नीलकंठ

5. शब्द-भंडार

(क) 1. दिनकर, भानु 2. तड़ाग, पुष्कर 3. बगीचा, वाटिका 4. खग, नभचर **(ख)** 1. पराजय 2. दुष्कर्म 3. अपकर्ष 4. अस्त **(ग)** 1. आस्तिक 2. निराकार 3. यथाशक्ति 4. गोपनीय

6. मुहावरे

(क) 1. 'मुहावरा' शब्द का अर्थ है—अभ्यास। 2. कभी-कभी निरंतर प्रयोग एवं अभ्यास से कोई उक्ति चमत्कारपूर्ण अर्थ देने लगती है, ऐसी उक्ति को 'मुहावरा' कहा जाता है। 3. ऐसा वाक्यांश जो अपने मूल शाब्दिक अर्थ का छोड़कर उससे अलग किसी विशेष अर्थ की प्रतीति कराए, मुहावरा कहलाता है। **(ख)** 1. सच्चाई का ज्ञान होना **वाक्य-प्रयोग**—परीक्षा में फेल हो जाने पर सविता की आँखें खुल गईं। 2. सावधान होना **वाक्य-प्रयोग**—खिड़की पर खट-खट की आवाज़ सुनकर रोहित के कान खड़े हो गए। 3. शिकायत करना **वाक्य-प्रयोग**—प्रियंका ने शिवानी के खिलाफ़ अध्यापिका के कान भर दिए। 4. अच्छे दिन आना **वाक्य-प्रयोग**—सोहन को अच्छी नौकरी मिल गई है। अब तो उसके दिन फिर जाएँगे। 5. शेखी मारना **वाक्य-प्रयोग**—कुछ लोग काम तो करते नहीं, बस गाल बजाते रहते हैं। **(ग)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब)

7. संज्ञा

(क) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे- सुभाषचंद्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई, कलम, मंदिर, चौराहा, दिल्ली, ईमानदारी, सुंदरता, बचपन आदि। 2. संज्ञा के भेद हैं—(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा (4) पदार्थवाचक संज्ञा (5) समूहवाचक संज्ञा 3. जो संज्ञा शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराता है, वह व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाता है; जैसे—जवाहरलाल नेहरू,

रामायण, ताजमहल, हिमालय, लोटस टेंपल आदि। 4. जिस संज्ञा शब्द से एक ही जाति के सभी प्राणियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–लड़का, घोड़ा, पुस्तक, फल, पेड़, नदी, शहर आदि। 5. जिस संज्ञा शब्द से किसी पदार्थ या प्राणी के भाव, गुण, दशा या स्थिति का बोध हो, वह भाववाचक संज्ञा कहलाता है; जैसे-प्रेम, घृणा, ममता, क्रोध, त्याग, प्रतिभा, दयालुता, अच्छाई, कोमलता, मुधरता, कुटिलता, भय, साहस आदि। 6. जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-सेना, सभा, गुच्छा, परिवार, भीड़, जनता, कक्षा आदि। 7. जिस संज्ञा शब्द से पदार्थ का बोध होता है, उसे पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-सोना, चाँदी, लोहा, दूध, लकड़ी आदि। **(ख)** जातिवाचक संज्ञा एक ही जाति के सभी प्राणियों या वस्तुओं का बोध कराती है जबकि व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराती है। **(ग) बालक**-जातिवाचक, **सुंदरता**-भाववाचक, **कोयल**-जातिवाचक, **परिवार**- समूहवाचक, **बंदर**-जातिवाचक, **गुच्छा**-समूहवाचक, **क्रोध**-भाववाचक, **दिल्ली**-व्यक्तिवाचक, **बचपन**-भाववाचक, **केरल**-व्यक्तिवाचक, **घोड़ा**-जातिवाचक, **लोहा**-पदार्थवाचक, **पुस्तक**-जातिवाचक, **करेला**-जातिवाचक, **सोना**-पदार्थवाचक, **शहर**-जातिवाचक **(घ)** गरीबी, आपा, पकड़, मूर्खता, लिखाई, हँसी, चाल, अमीरी, धुलाई, गरीबी, कोमलता, परायापन **(ङ)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(च)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

8. लिंग

(क) 1. पुरुष व स्त्री जाति की पहचान कराने वाले शब्द को लिंग कहते हैं। 2. पुरुष या नर जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे-लड़का, शेर, घोड़ा, मोर, बैल आदि। 3. स्त्री या मादा जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे-लड़की, शेरनी, घोड़ी, मोरनी, गाय आदि। **(ख)** 1. मादा 2. वीरांगना 3. मोरनी 4. शिष्या 5. युवती 6. चोरनी 7. बुढ़िया 8. बेटी 9. धोबिन 10. नौकरानी 11. पुत्री 12. देवी **(ग)** 1. घोड़ा 2. रूपवान 3. बलवान 4. बैल 5. पुत्रवान 6. विद्वान 7. तेली 8. भगवान 9. चूहा 10. ऊँट 11. श्रीमान 12. ब्राह्मण **(घ)** 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग 6. स्त्रीलिंग 7. पुल्लिंग 8. पुल्लिंग 9. पुल्लिंग 10. पुल्लिंग 11. पुल्लिंग 12. पुल्लिंग **(ङ)** 1. राजा दास को पुरस्कार देगा। 2. मामी जी बकरी लाईं। 3. अध्यापिकाएँ छात्राओं को पढ़ाएँगी। 4. लड़के ने भिखारी की हँसी उड़ाई। 5. भगवती वरदान देने के लिए प्रकट हो गईं। **(च)** 1. (य) 2. (र) 3. (ल) 4. (व) 5. (श) 6. (ष) 7. (अ) 8. (ब) 9. (स) 10. (द) **(छ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ)

9. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से प्राणी या वस्तु की संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो भेद होते हैं–(1) एकवचन (2) बहुवचन 2. वचन परिवर्तन के दो नियम–

(1) अंतिम 'आ' को 'ए' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पंखा	पंखे	घोड़ा	घोड़े	तोता	तोते
बच्चा	बच्चे	छाता	छाते	कमरा	कमरे

(2) अंत में 'एँ' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
शाखा	शाखाएँ	कविता	कविताएँ	महिला	महिलाएँ
कथा	कथाएँ	कन्या	कन्याएँ	लेखिका	लेखिकाएँ

3. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन शब्द का प्रयोग किया जाता है। **उदाहरण**–(1) आप

कहाँ जा रहे हैं? (2) महात्मा गाँधी जी महान थे। (3) अध्यापक पाठ पढ़ा रहे हैं। **(ख)** छाते, ऋतुएँ, कन्याएँ, रानियाँ, कथाएँ, शहनाइयाँ, लुएँ, शाखाएँ **(ग)** निधि, पुस्तक, सभा, मात्रा, रस्सी, नाला, लड़की, तिथि **(घ)** 1. लड़के 2. स्त्रियाँ 3. कुत्ते 4. बकरियाँ

10. कारक

(क) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम का जो रूप क्रिया से अपना संबंध प्रकट करता है, उसे कारक कहते हैं। 2. संज्ञा या सर्वनाम 'ने, को, से, के लिए, पर' आदि शब्द-चिह्नों द्वारा क्रिया से संबंध प्रकट करते हैं। ये शब्द-चिह्न विभक्ति-चिह्न, 'कारक-चिह्न' अथवा 'परसर्ग' कहलाते हैं। 3.

	कारक के भेद	**विभक्ति-चिह्न**
1.	कर्ता कारक	ने
2.	कर्म कारक	को
3.	करण कारक	से, के द्वारा
4.	संप्रदान कारक	के लिए, को
5.	अपादान कारक	से (पृथकता के अर्थ में)
6.	संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री
7.	अधिकरण कारक	में, पर
8.	संबोधन कारक	हे, अरे

(ख) 1. अधिकरण कारक 2. संप्रदान कारक 3. कर्ता कारक 4. कर्म कारक 5. अपादान कारक **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(ङ)** 1. हे राम! सबका भला कर। 2. गंगा हिमालय से निकलती है। 3. रोहित रीमा के लिए फ्रॉक लाया है। 4. मछली पानी में रहती है।

11. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं 2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं– (1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) प्रश्नवाचक सर्वनाम (5) संबंधवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम 3. जो सर्वनाम बात को कहने वाले, सुनने वाले अथवा किसी अन्य व्यक्ति या प्राणी (जो उपस्थित नहीं होता) के लिए प्रयोग किया जाता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। 4. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद होते हैं–(i) उत्तम पुरुष (ii) मध्यम पुरुष (iii) अन्य पुरुष **(i) उत्तम पुरुष–(कहने या बोलने वाला)**–मैं, हम, मुझे **(ii) मध्यम पुरुष (सुनने वाला)**–तू, तुम, तुम्हें, आप **(iii) अन्य पुरुष (अन्य व्यक्ति)**–वह, वे, उसे, उन्हें। **उदाहरण**–(i) **मैं** पढ़ रहा हूँ। (ii) **तुम** सो रहे हो। (iii) **वह** क्या कर रहा है? **(ख)** 1. वह 2. मैं 3. क्या 4. कुछ 5. जो, वह **(ग)** 1. वे सर्वनाम जो वाक्य के दूसरे सर्वनामों से संबंध प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-जो-सो, जैसा-वैसा, जिसे-उसे, जिसकी-उसकी आदि। 2. वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–यह, ये, वह, वे। 3. वे सर्वनाम जो किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-कोई, किसी, कुछ आदि। **(घ)** 1. मैं अपना काम कर रहा हूँ। 2. तू अपना काम कर। 3. मुझे कुछ मालूम नहीं है। 4. यह किसका थैला है? 5. किसी से कुरसी उठवा लीजिए। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. कौन 2. वह 3. किसने 4. स्वयं 5. क्या **(छ)** 1. (ब) 2. (ब)

12. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं। उदाहरण– रीमा बुद्धिमती छात्रा है। वह पतली तथा चुस्त है। **संज्ञा**–रीमा, **सर्वनाम**–वह **विशेषण**–

बुद्धिमती, पतली, चुस्त 2. जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे– लाल गुलाब, ईमानदार आदमी में 'गुलाब' व 'आदमी' विशेष्य हैं। 3. विशेषण के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं–(1) गुणवाचक विशेषण (2) संख्यावाचक विशेषण (3) परिमाणवाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण (5) व्यक्तिवाचक विशेषण **(ख)** 1. भारी 2. सरल 3. थोड़ी 4. यह 5. इलाहाबादी 6. दो दर्जन 7. चार 8. सफ़ेद 9. काली 10. भारतीय 11. वह 12. कई **(ग)** 1. आदमी 2. इमारत 3. अनाज 4. आम 5. बालक **(घ)** 1. निश्चित संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–तीन, सात, दसवाँ, प्रथम आदि। 2. निश्चित संख्या का बोध न कराने वाले शब्दों को अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–कई, कुछ, बहुत-से, सभी, सब आदि। **(ङ)** 1. सरल 2. परिश्रमी 3. कुछ 4. वह 5. बूढ़ा 6. निर्बल **(च)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(छ) उत्तरावस्था**–प्रियतर, अधिक ईमानदार, अधिक बुद्धिमान, कठिनतर, दृढ़तर **उत्तमावस्था**– प्रियतम, सबसे अधिक ईमानदार, सबसे अधिक बुद्धिमान, कठिनतम, दृढ़तम **(ज)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ)

13. क्रिया एवं काल

(क) 1. जिस शब्द से कार्य का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं। 2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 3. क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। काल के भेदों के नाम हैं–(1) भूतकाल (2) वर्तमानकाल (3) भविष्यत्काल **(ख)** 1. लिखा 2. पकड़ा 3. गया 4. हँस रहा है 5. रोता है। **(ग)** 1. जिस क्रिया के साथ कर्म होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–गाय दूध देती है। रामू फल बेचता है। इन वाक्यों में 'दूध' तथा 'फल' कर्म हैं। 2. जिन क्रियाओं में कर्म नहीं होता, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। इन क्रियाओं का प्रभाव सीधे कर्ता पर पड़ता है; जैसे–चिड़िया उड़ गई। लड़की रो रही है। **(घ)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(ङ)** 1. वर्तमानकाल 2. भूतकाल 3. भूतकाल 4. भविष्यत्काल 5. भूतकाल 6. वर्तमानकाल **(च)** 1. क्रिया–आना, धातु–आ। 2. क्रिया–खाना, धातु-खा। 3. क्रिया–लिखना, धातु-लिख। 4. क्रिया–देना, धातु-दे। 5. क्रिया–बैठना, धातु-बैठ। **(छ)** 1. मीरा चाय बनाएगी। 2. बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। 3. हम सिनेमा देखने जा रहे हैं। 4. राजू सोएगा। 5. माता जी बाज़ार जा रही हैं। 6. राजीव पत्र लिख रहा था।

14. अविकारी शब्द

(क) 1. जो शब्द लिंग, वचन व काल के अनुसार अपना रूप नहीं बदलता है, उसे अव्यय कहते हैं। अव्यय चार प्रकार के होते हैं–(क) क्रियाविशेषण (ख) समुच्चयबोधक (ग) संबंधबोधक (घ) विस्मयादिबोधक 2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **उदाहरण**–(i) हिरन तेज़ दौड़ता है। (ii) कछुआ धीरे-धीरे चलता है। (iii) मैं रोज़ सैर पर जाती हूँ। (iv) रमा उधर जा रही है। 3. (1) रीतिवाचक क्रियाविशेषण : **उदाहरण**– धीरे-धीरे, पैदल, मुसकराकर, अचानक, झटपट, तेज़ी से आदि। (2) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण : **उदाहरण**–बहुत, कम, ज़्यादा, इतना, उतना, जितना, पर्याप्त, थोड़ा, खूब आदि। (3) कालवाचक क्रियाविशेषण : **उदाहरण**–अभी-अभी, प्रतिदिन, कभी, तभी, सदा, आज, कल आदि। (4) स्थानवाचक क्रियाविशेषण : **उदाहरण**–यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर, अंदर, इधर, उधर, आगे आदि। 4. जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करता है, उसे समुच्चयबोधक कहते हैं। समुच्चयबोधक के मुख्यत: दो भेद होते हैं–(1) समानाधिकरण समुच्चयबोधक (2) व्यधिकरण समुच्चयबोधक 5. जो शब्द हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, करुणा, दु:ख, भय आदि भावों को प्रकट करता है, उसे

विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। 6. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट करे, उसे संबंधबोधक कहते हैं। **(ख)** 1. के कारण 2. कम 3. क्योंकि 4. वाह! **(ग)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (द) **(घ)** 1. के बिना 2. के साथ 3. पास 4. के सामने 5. से बाहर **(ङ)** 1. दाएँ-बाएँ, स्थानवाचक 2. थोड़ा, परिमाणवाचक 3. यहाँ, स्थानवाचक 4. अचानक, रीतिवाचक 5. धीरे-धीरे, रीतिवाचक **(च)** 1. अरे 2. दूर हो 3. वाह 4. वाह **(छ)** 1. पर 2. परंतु 3. या 4. ताकि **(ज)** 1. रवि, तुरंत भीतर आओ। 2. रवि बाहर खेल रहा है। 3. मेरे घर के निकट बाज़ार है। 4. माता-पिता भगवान के समान होते हैं। 5. मैंने उसे बुलाया किंतु वह नहीं आया। 6. परिश्रम करो अन्यथा फेल हो जाओगे। 7. छि:! कितनी गंदगी है। 8. बाप रे बाप! कितनी ऊँची इमारत है।

15. विराम-चिह्न

(क) 1. लिखते समय रुकने का संकेत देने तथा कथन का आशय समझाने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, ऐसे प्रत्येक चिह्न को विराम-चिह्न कहते हैं। 2. प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग वाक्य में प्रश्न पूछने के बाद किया जाता है। 3. पूर्ण विराम का प्रयोग विधिवाचक व आदेशसूचक वाक्यों के अंत में तथा अल्प विराम का प्रयोग वाक्य के बीच में अपनी बात में थोड़ा विराम देने के लिए किया जाता है। 4. विस्मयादिबोधक चिह्न की आवश्यकता वाक्यों में हर्ष, शोक, संबोधन, आश्चर्य व घृणा के भावों को प्रकट करने के लिए पड़ती है। 5. जब किसी वाक्य में अल्प विराम से थोड़ा अधिक रुकना हो तो वहाँ अर्ध विराम का प्रयोग करते हैं। 6. उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं–**(क) इकहरा उद्धरण चिह्न**–किसी व्यक्ति के नाम के साथ उसका उपनाम लिखते समय तथा वाक्य में किसी पुस्तक, व्यक्ति आदि का उल्लेख करते समय इकहरा उद्धरण चिह्न लगाते हैं; जैसे–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' प्रसिद्ध कवि थे। **(ख) दोहरा उद्धरण चिह्न**–किसी व्यक्ति के कथन को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए दोहरा उद्धरण चिह्न लगाते हैं; जैसे–बाल गंगाधर तिलक ने कहा था, ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' **(ख)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) **(ग)** 1. योजक 2. दोहरे उद्धरण 3. पूर्ण विराम 4. अर्ध विराम 5. विस्मयादिबोधक **(घ)** 1. (ब) 2. (य) 3. (द) 4. (अ) 5. (स) **(ङ)** 1. अमिता यहाँ से कब गई है? 2. गोपी, शिवानी, शैलेश और सुनीता घर चले गए। 3. वाह! कितना सुंदर फूल है। 4. अब मैं घर जाना चाहता हूँ। 5. तिलक ने कहा, ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' **(च)** 1. शुभ, तुम्हारा घर कहाँ है? 2. भूमि धीरे-धीरे चल रही है। 3. अरे! यह क्या हो गया? 4. गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' लिखी। 5. हमारे देश में अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। 6. क्या तुम मुझे बता सकते हो कि उचित मार्ग क्या है? 7. भीलराज, आप क्या चाहते हैं? 8. 'होली', 'दीपावली', 'वर्षा', 'किसान' अथवा 'कुली' पर निबंध लिखिए।

हिंदी व्याकरण–5

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करता है। भाषा के दो भेद हैं (1) मौखिक (2) लिखित। 2. भाषा के दो रूप हैं–(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा 3. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। 4. भाषा के लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं। (i) संस्कृत, हिंदी तथा मराठी की लिपि देवनागरी है। (ii) उर्दू की लिपि फ़ारसी है। (iii) पंजाबी की लिपि गुरुमुखी है। (iv) अंग्रेज़ी की लिपि रोमन है। 5. जो शास्त्र हमें किसी भाषा की शुद्धता के नियम सिखाता है उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के तीन अंग हैं–(i) वर्ण-विचार (ii) शब्द-विचार (iii)

वाक्य-विचार **(ख)** रेडियो से गीत सुनना-**मौखिक**, नौकरी के लिए आवेदन-पत्र लिखना-**लिखित**, माता का बच्चे को लोरी सुनाना-**मौखिक**, नए स्थान पर किसी का पता पूछना-**मौखिक**, पंडितजी द्वारा श्लोक बोलना-**मौखिक**, पुत्र द्वारा पिता को पत्र लिखना-**लिखित**। **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. लिखित 2. देवनागरी 3. लिपि 4. हिंदी 5. फ़ारसी **(ङ)** 1. **मातृभाषा :** बालक अपने परिवार या माता से जो भाषा सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं। किसी हिंदी भाषी परिवार में जन्म लेने वाला बालक प्रारंभ से ही हिंदी भाषा के परिवेश में रहकर हिंदी सीखता है। यही उसकी मातृभाषा होती है। 2. **प्रादेशिक भाषा :** किसी प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा प्रादेशिक भाषा कहलाती है; जैसे–बंगाल में बाँग्ला, महाराष्ट्र में मराठी, तमिलनाडु में तमिल, असम में असमी, केरल में मलयालम बोली व लिखी जाती है। ये वहाँ की प्रादेशिक भाषाएँ हैं। 3. **राष्ट्रभाषा:** कोई भाषा विकसित होते-होते जब इस स्थिति में पहुँच जाती है कि संपूर्ण राष्ट्र के अधिकांश लोग दैनिक जीवन में उसका व्यवहार करने लगते हैं, तो वह भाषा राष्ट्रभाषा का स्थान ले लेती है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है। 4. **अंतर्राष्ट्रीय भाषा :** जब कोई भाषा विश्व के अनेक राष्ट्रों द्वारा अपना ली जाती है, तो वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्थान पा लेती है; जैसे–अंग्रेज़ी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। **(च)** उत्तर प्रदेश-हिंदी, महाराष्ट्र-मराठी, पंजाब-पंजाबी, गुजरात-गुजराती, बंगाल-बाँग्ला, तमिलनाडु-तमिल, असम-असमी, केरल-मलयालम, आंध्र-प्रदेश-तेलुगु, कर्नाटक-कन्नड़

2. वर्ण-विचार

(क) 1. वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और खंड न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं। इसके दो रूप हैं। 2. स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले या बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या 11 है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावट आती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों का उच्चारण स्वर-ध्वनि की सहायता से किया जाता है; जैसे–क् + अ = क, म् + अ = म, श् + अ = श आदि। 3. उच्चारण की दृष्टि से स्वर के तीन भेद होते हैं– **(1) ह्रस्व स्वर**–ह्रस्व का अर्थ है–छोटा या कम। जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का अर्थात् कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये हैं–अ, इ, उ, ऋ **(2) दीर्घ स्वर**–दीर्घ का अर्थ है–बड़ा या अधिक। जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में अधिक अर्थात् दुगुना (दो मात्राओं का) समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते है। 'आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ' दीर्घ स्वर कहलाते हैं। **(3) प्लुत स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगे, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर का उच्चारण दूर से किसी को बुलाने पर तथा संस्कृत भाषा के मंत्र आदि के उच्चारण के लिए होता है; जैसे-ओ३म्, रामू३ आदि। इसे त्रिमात्रिक (तीन मात्रा वाला) स्वर भी कहते हैं। 4. ओ३म् प्लुत स्वर का उदाहरण है। 5. स्पर्श व्यंजनों के वर्ण हैं–क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म। 6. **अं** (अनुस्वार) तथा **अः** (विसर्ग) को अयोगवाह कहा जाता है। इनका न स्वरों से योग (मेल) होता है और न ही व्यंजनों से। इनकी स्वतंत्र गति नहीं होती। स्वरों के साथ प्रयुक्त होने के कारण ये व्यंजन नहीं बन पाते तथा स्वतंत्र रूप से गति न होने के कारण ये स्वर भी नहीं कहे जा सकते। **(ख)** 1. दो भिन्न व्यंजनों के मेल से बनने वाला ऐसा व्यंजन जिसका लिखित रूप ही बदल जाए, संयुक्त व्यंजन कहलाता है। इनकी संख्या चार है। (i) क्ष = क् + ष (ii) त्र = त् + र (iii) ज्ञ = ज् + ञ (iv) श्र = श् + र 2. अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि शब्दों का हिंदी में प्रयोग किया जाने लगा है। ये शब्द आगत शब्द

कहलाते हैं तथा इनमें प्रयुक्त विशेष ध्वनियाँ आगत ध्वनियाँ कहलाती हैं। 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' आदि आगत ध्वनियाँ व्यंजनों के रूप में हिंदी में प्रयोग की जाती हैं; जैसे–ताक़, ख़त, बाग़, सज़ा, फ़न आदि। 'ऑ' भी आगत ध्वनि है, जो स्वर के रूप में प्रयोग की जाती है; जैसे–टॉफ़ी, हॉकी, डॉक्टर आदि। 3. जब एक व्यंजन अपने ही जैसे अन्य व्यंजन से मिलकर एक हो जाता है, उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। द्वित्व व्यंजन में पहला व्यंजन स्वर रहित होता है; जैसे– (i) क् + क = क्क – पक्का, चक्की (ii) त् + त = त्त – कुत्ता, गत्ता 4. **अनुस्वार (ं)**–इसके उच्चारण में केवल नाक से हवा निकलती है। यह व्यंजन के पहले पाँच वर्गों (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग) के अंतिम वर्णों के अर्धांश के समान नासिका से उच्चारण पाता है तथा व्यंजन के ऊपर बिंदु (ं) के रूप में दर्शाया जाता है; जैसे–शंख, कंघा, गंगा, मंच आदि। 5. **अनुनासिक (ँ)**–इसे चंद्रबिंदु (ँ) भी कहा जाता है। इसके उच्चारण में नाक और मुख, दोनों से हवा एक साथ निकलती है; जैसे–ऊँट, हँस, मुँह आदि।

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. क्रमबद्ध समूह 2. दो 3. अनुस्वार 4. छोटा 5. बड़ा **(ङ) पंख**–अनुस्वार, **टाँग**–अनुनासिक, **साँप**– अनुनासिक, **ऊँट**– अनुनासिक, **डंक**–अनुस्वार, **जाँच**–अनुनासिक, **नंदन**–अनुस्वार, **कंस**– अनुस्वार, **तंदूर**– अनुस्वार, **आँख**–अनुनासिक, **ताँगा**–अनुनासिक, **कंगन**–अनुस्वार **(च) पत्र**–प् + अ + त् + र् + अ, **आराम**–आ + र् + आ + म् + अ, **नाविक**–न् + आ + व् + इ + क् + अ, **विश्राम**– व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ, **व्यापारिक**–व् + य् + आ + प् + आ + र् + इ + क् + अ, **पथिक**–प् + अ + थ् + इ + क् + अ **(छ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ)

3. शब्द-विचार

(क) 1. एक अथवा अनेक वर्णों के संयोग से बने सार्थक-समूह को **शब्द** कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त शब्द के व्यावहारिक रूप को **पद** कहते हैं। 2. संस्कृत भाषा के वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–क्षेत्र, अश्रु, दुग्ध, अग्नि, चंद्र आदि। संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में आते-आते जिन शब्दों में थोड़ा-बहुत अंतर आ गया है, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे–खेत, आँसू, दूध, आग, चाँद आदि। 3. जो शब्द एक ही अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें एकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे–पुस्तक, लोहा, खंभा, टोपी, रोटी आदि। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे–(i) कर– हाथ, टैक्स, किरण, सूँड़ (ii) अधर– निचला होंठ, पाताल, निराधर, शून्य 4. रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं–1. रूढ़ 2. यौगिक 3. योगरूढ़ **(1) रूढ़ शब्द**–जो शब्द किन्हीं अन्य शब्दों के योग से नहीं बनते तथा खंड कर देने पर निरर्थक हो जाते हैं, वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं। ये शब्द किसी विशेष वस्तु के लिए प्रसिद्ध हो गए हैं; जैसे–घर, रथ, पानी, माता, कान, नाक आदि। **(2) यौगिक शब्द**–जो शब्द दो शब्दों के मेल से बनते हैं, वे यौगिक शब्द कहलाते हैं। इस प्रकार के शब्द संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि से बनते हैं। इनके खंड करने पर भी अर्थ निकलता है; जैसे–वनराज (वन + राज), राजकुमार (राज + कुमार), रसोईघर (रसोई + घर), दूधवाला (दूध + वाला) आदि। 5. जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण परिवर्तन आ जाता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण विकारी शब्द हैं। जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता तथा एक ही रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। इन्हें अव्यय भी कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं। 6. जो शब्द विभिन्न क्षेत्रों के ग्रामीण जनसमुदाय द्वारा निर्मित होकर हिंदी की बोलियों के माध्यम से

हिंदी भाषा में आए हैं, वे देशज शब्द हैं। जैसे–गाड़ी, लोटा, बेटा। जो शब्द विदेशी भाषाओं– अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, चीनी, पुर्तगाली आदि से हिंदी भाषा में आ गए हैं वे विदेशी शब्द कहलाते हैं। जैसे-कार, बटन (अंग्रेज़ी भाषा), खर्च, दरोगा (अरबी भाषा), दुकान, फासला (फ़ारसी भाषा), चाकू, तोप (तुर्की भाषा), कमरा, तौलिया (पुर्तगाली भाषा), कूपन, इंजीनियर (फ्रांसीसी भाषा), लीची, चाय (चीनी भाषा), डेल्टा, एटम (यूनानी भाषा)। **(ख) यौगिक**–वनराज, राजकुमार, रसोईघर **रूढ़**–घर, रथ, पानी **योगरूढ़**– पंकज, पीतांबर, गिरिधारी **विदेशी**–स्कूल, कैंची, पटाखा **विकारी**–लड़का, तुम, काला **अविकारी**–जल्दी, किंतु, धीरे **(ग)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) 6. (अ) **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ **(ङ)** 1. समानता 2. विपरीत 3. अविकारी 4. योगरूढ़ 5. विदेशी

4. शब्द-रचना

(क) 1. शब्द-निर्माण के लिए शब्दों से पूर्व जो शब्दांश जोड़ा जाता है, उसे उपसर्ग कहते हैं। **उदाहरण**–प्र+चार=प्रचार, प्र+लय=प्रलय, अन+पढ़=अनपढ़, शुभ+इच्छु=शुभेच्छु, सूर्य+उदय= सूर्योदय, स+हित=सहित 2. नए शब्द की रचना हेतु मूल शब्द के अंत में जो शब्दांश जोड़ा जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं। **उदाहरण**–भूख + आ = भूखा, गरम + ई = गरमी, सप्ताह + इक = साप्ताहिक 3. जब दो वर्ण पास-पास होते हैं तो व्याकरण के नियमानुसार उनके मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं। **उदाहरण**–परम + अणु = परमाणु, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, इति + आदि = इत्यादि, जगत् + ईश = जगदीश 4. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। **उदाहरण**–पेट भरकर = भरपेट, गृह को आगत = गृहागत, दिन-दिन = प्रतिदिन, स्वर्ग को प्राप्त = स्वर्गप्राप्त **(ख)** जगदीश, विद्यालय, चरणामृत, हिमालय, हरीश, सतीश, कवींद्र, महेंद्र, शिवालय, गिरीश **(ग)** 1. आ 2. आई 3. इत 4. ईय 5. आवट 6. त्व **(घ)** 1. अन्याय, अबोध 2. पराजय, पराभव 3. अधिकार, अधिपति 4. दुर्बल, दुर्लभ 5. अवनति, अवतार 6. अत्यंत, अतिक्रमण 7. प्रचार, प्रवीण 8. सम्मेलन, संयोग **(ङ)** 1. सम्मानित 2. भूखा 3. नगरीय 4. पहला 5. बुराई 6. ममेरा **(च)** 1. विद्यालय 2. मनचाहा 3. स्वर्गप्राप्त 4. रातोंरात 5. भरपेट 6. प्रत्येक 7. नीलकमल 8. माता-पिता **(छ)** 1. वर्णों 2. शब्दों 3. ईय 4. अनादर 5. अधिक **(ज)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5 ✗ **(झ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

5. शब्द-भंडार

(क) 1. परस्पर समान अर्थों वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं। **उदाहरण–जल**–पानी, अंबु, तोय, सलिल, नीर, उदक, जीवन, वारि, पय, अमृत 2. परस्पर विरुद्ध, उलटा या विपरीत अर्थ का ज्ञान कराने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा, काला-गोरा। 3. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। 4. हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द प्रचलित हैं, जो समान अर्थ का बोध या आभास कराते हैं; परंतु वे समानार्थक नहीं होते। एक समान अर्थ का आभास देने वाले शब्दों के अर्थ का प्रयोग व्यवहार में कर दिया जाता है। इन शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म भेद होता है; जैसे–'भागना' एवं 'दौड़ना', बोलचाल में प्रायः दोनों शब्दों का प्रयोग होता है और कभी-कभी अज्ञानतावश हम इन दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ के रूप में कर देते हैं, जबकि दोनों के अर्थ में पर्याप्त अंतर है। ये शब्द एक जैसे अर्थ की प्रतीति करा रहे हैं परंतु इन दोनों का अर्थ अलग-अलग है। 'भागना' अर्थात् भय के कारण भागना और 'दौड़ना' अर्थात् स्वाभाविक या प्रतियोगिता के लिए दौड़ना। 5. एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के

उदाहरण–(1) **असफल**–जिन्हें फल न मिला हो, विफल **निष्फल**–व्यर्थ, निरर्थक (2) **अस्त्र**–फेंककर चलाया जाने वाला हथियार, यथा–बाण, तोप आदि **शस्त्र**–हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार, यथा–लाठी, तलवार 6. वाक्यांश को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने वाले शब्द को वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं। **(ख)** अमंगल, वियोग, विनाश, अर्वाचीन, गतिहीन, आगमन, अधीर, स्तुति, पराजय **(ग)** 1. चिड़िया, विहग, द्विज 2. माँ, मातृ, जननी 3. बेटा, तनय, सुत 4. रात्रि, रजनी, निशा 5. जिह्वा, वाणी, रसना **(घ)** **पानी**–जल, चमक **कर्ण**– कान, कुंती का पुत्र, **योग**–जोड़, योग-साधना, **आम**–साधारण, फल-विशेष, **कुल**–वंश, सारा, **अर्थ**–धन, मतलब, **कल**–चैन, मशीन, **अंबर**–कपड़ा, आकाश **(ङ)** 1. **अस्त्र**– फेंककर चलाया जाने वाला हथियार **शस्त्र**–हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार 2. **ईर्ष्या**–दूसरे की उन्नति के कारण जलन **द्वेष**–शत्रुता, घृणा 3. **कष्ट**–शारीरिक दुःख **पीड़ा**–शारीरिक दर्द (तीव्र) 4. **मन**–इंद्रियों के विषयों का ज्ञान कराता है। **चित्त**–चेतना 5. **सभ्यता**–रहन-सहन का ढंग **संस्कृति**–मानव के सुरुचिकर संस्कार 6. **मनुष्य**– मानव जाति का सदस्य (स्त्री हो या पुरुष) **पुरुष**–मनुष्य में नर जाति **(च)** 1. विशेषज्ञ 2. मितभाषी 3. पैतृक 4. जलज 5. सुगम 6. अज्ञेय 7. अजेय 8. पेय **(छ)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) 6. (अ) **(ज)** 1. जो कुछ भी पढ़ा-लिखा न हो 2. जानने की इच्छा रखने वाला 3. जिसका जन्म अभी हुआ हो 4. अपने आप पर निर्भर रहने वाला 5. दूसरों के गुण दोष बताने वाला 6. जो पहले कभी घटित न हुआ हो 7. जो खंडित न हो 8. नीति को जानने वाला 9. जिसे जीता न जा सके 10. जो पूजा करने योग्य हो

6. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराता है और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाता है, उसे मुहावरा कहते हैं। 2. लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। **(ख)** 1. (य) 2. (ल) 3. (र) 4. (ष) 5. (व) 6. (श) 7. (अ) 8. (ब) 9. (स) 10. (द) **(ग)** 1. दुष्ट को बुरी संगति मिलना। 2. समयोपरांत मिली उपलब्धि से क्या लाभ। 3. दिखावा अधिक और वास्तविकता कम। 4. विपरीत कार्य करना। 5. आवश्यकताएँ बड़ी पूर्ति नाममात्र की। **(घ)** 1. नींद न आना। **वाक्य-प्रयोग**–रामलाल पत्नी के वियोग में तारे गिन-गिनकर रात काट रहा है। 2. लज्जित होना। **वाक्य-प्रयोग**–मतिराम के असभ्य व्यवहार से उसका पिता पानी-पानी हो गया। 3. बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना। **वाक्य-प्रयोग**–राजीव को नमक-मिर्च लगाकर बात कहने की आदत है। 4. काम में बाधा डालना। **वाक्य-प्रयोग**–दिवाकर में यह बहुत बुरी आदत है कि सबके काम में टाँग अड़ाता है। 5. बढ़-चढ़कर बातें करना। **वाक्य-प्रयोग**–अजय काम कम करता है, गाल अधिक बजाता है। **(ङ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (ब) 7. (स) 8. (स) 9. (ब) 10. (ब)

7. संज्ञा और उसके भेद

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, समूह, भाव या अवस्था के नाम का बोध कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। **उदाहरण**–स्त्री, पुरुष, गाय, मोर, पुस्तक, कुरसी, बचपन, गाँव, परिवार, मंदिर, लाल किला आदि। 2. जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। **उदाहरण**–राम, लक्ष्मण, कृष्ण, लाल किला, ताजमहल, लखनऊ, गीता, रामायण आदि। 3. जो शब्द किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध कराए, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। **उदाहरण**–स्त्री, पुरुष, बालक, पुस्तक, बकरी, कुत्ता, मकान, देश, गाँव, शहर, भवन आदि। 4. जिस शब्द से किसी

व्यक्ति, वस्तु या स्थान की दशा, अवस्था या भाव का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। 5. जिस शब्द से प्राणियों अथवा वस्तुओं के समूहों का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। **उदाहरण**–कक्षा, गुच्छा, भीड़, दल, परिवार, सेना, सभा आदि। 6. जिस शब्द से पदार्थ के नाम का बोध हो, उसे पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं। **उदाहरण**–सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, दूध आदि। 7. भाववाचक संज्ञाओं की रचना जातिवाचक संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों, क्रियाओं व क्रियाविशेषणों में प्रत्यय जोड़कर की जाती है। **(ख)** 1. राम, गीता 2. पुरुष, देश 3. वीरता, मिठास 4. लोहा, दूध 5. सेना, परिवार **(ग)** 1. ताजमहल, सुंदरता, 2. दशरथ, अयोध्या, राजा 3. सोना, चाँदी, धातुएँ 3. बाज़ार, भीड़ 4. मनीष, सामान, बस **(घ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ) कक्षा**–समूहवाचक, **दूध**–पदार्थवाचक, **थकावट**–भाववाचक, **बचपन**–भाववाचक, **जुलाहा**–जातिवाचक, **प्रधानमंत्री**–जातिवाचक, **सुभाषचंद्र**–व्यक्तिवाचक, **लखनऊ**–व्यक्तिवाचक, **चेतक**–व्यक्तिवाचक, **भलाई**–भाववाचक, **आभूषण**–पदार्थवाचक, **लोहा**–पदार्थवाचक, **गाय**–जातिवाचक, **ठगी**–भाववाचक, **चाँदी**–पदार्थवाचक **(च)** 1. निर्धनता 2. घबराहट 3. सफलता 4. पछतावा 5. मुसकराहट **(छ)** शीघ्रता, ठगी, धुलाई, चोरी, स्वामित्व, मित्रता, पढ़ाई, वीरता, चतुराई, थकावट, मातृत्व, लड़कपन **(ज)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

8. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष (नर) या स्त्री (मादा) वर्ग की पहचान होती है, उसे लिंग कहते हैं। लिंग के दो भेद हैं–(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग 2. जो शब्द पुरुष (नर) जाति का बोध कराता है, उसे पुल्लिग कहते हैं; जैसे–राजा, ऋषि, शिष्य, सेवक, घोड़ा, बंदर, चाचा, मामा आदि। स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–युवती, चाची, माता, घोड़ी, शेरनी, गाय, लड़की आदि। 3. जिन शब्दों का प्रयोग सदा पुल्लिंग रूप में ही किया जाता है, उन्हें नित्य पुल्लिग शब्द कहते हैं। जिन शब्दों का प्रयोग सदा स्त्रीलिंग रूप में ही किया जाता है उन्हें नित्य स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। 4. वाक्य में प्रयोग किए जाने पर लिंग-निर्णय मुख्य रूप से तीन विधियों द्वारा किया जाता है–**(1) क्रिया द्वारा लिंग-निर्णय**–(i) राजीव पत्र **लिखता** है। (ii) सुनीता पत्र **लिखती** है। **(2) विशेषण द्वारा लिंग-निर्णय**–(i) **काला** कुत्ता (ii) **काली** बिल्ली **(3) संबंधकारक द्वारा लिंग-निर्णय**–(i) वह राजीव **की** बकरी है। (ii) वह राजीव **का** कुत्ता है। **(ख)** 1. सेठानी ने सेविका को नौकरी से निकाल दिया। 2. तपस्विनी लुटिया उठाकर चल दी। 3. छत पर कुतिया भौंक रही है। 4. इस गीत की गायिका एक सीधी-सादी युवती है। 5. धोबिन की गधी खो गई है। 6. अध्यापिका ने छात्रा को दंडित किया। **(ग)** 1. देवी, पुत्री, हिरनी, दासी 2. सुनारिन, नागिन, कहारिन, नाइन 3. मोरनी, शेरनी, ऊँटनी, जाटनी 4. सेठानी, जेठानी, नौकरानी, देवरानी **(घ)** नेता, पुरुष, रूपवान, नर, डिब्बा, नर मकड़ी, ठाकुर, युवक, सेठ, गुणवान, प्रिय, पंडित, हंस, भवदीय, पाठक, पहाड़, नौकर, स्वामी **(ङ)** देवी, आदरणीया, घंटी, सुता, जेठानी, मादा बिच्छू, दासी, कर्त्री, तपस्विनी, शक्तिमती, मास्टरनी, चुहिया, मादा मच्छर, चौबाइन, पूज्या, मोरनी, मादा कौआ, मादा उल्लू **(च) गेहूँ**-पुल्लिंग, **पहाड़**-पुल्लिंग, **हथौड़ा**-पुल्लिंग, **मन**-पुल्लिंग, **प्रथमा**-स्त्रीलिंग, **कौआ**-पुल्लिंग, **लड़की**-स्त्रीलिंग, **नदी**-स्त्रीलिंग, **रस्सी**- स्त्रीलिंग, **डंडी**-स्त्रीलिंग, **तेल**-पुल्लिंग, **बोरी**-स्त्रीलिंग, **दूध**-पुल्लिंग, **मोती**-पुल्लिंग, **पत्थर**-पुल्लिंग, **चिड़िया**-स्त्रीलिंग, **पुष्प**-पुल्लिंग, **ठेली**-स्त्रीलिंग, **नाला**-पुल्लिंग, **सूर्य**- पुल्लिंग, **देवनागरी**-स्त्रीलिंग, **मोरनी**-स्त्रीलिंग, **हथिनी**-स्त्रीलिंग, **मक्खी**-स्त्रीलिंग, **गुणवान**-पुल्लिंग, **दादी**-स्त्रीलिंग, **पूर्णिमा**-स्त्रीलिंग **(छ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ज)** 1. पुल्लिंग 2.

स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. नित्य पुल्लिंग **(झ)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

9. वचन

(क) 1. सामान्य रूप से 'वचन' से अभिप्राय होता है किसी उद्देश्य के लिए 'कुछ बोला गया' या 'कहा गया'। 2. व्याकरण में संज्ञा व सर्वनाम की संख्या को वचन कहते हैं। 3. वचन के भेद–(1) **एकवचन**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध हो, एकवचन कहलाता है। **उदाहरण**–पंखा, लड़का, संतरा, बिल्ली, थैला आदि। (2) **बहुवचन**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं अथवा स्थानों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। **उदाहरण**–पंखे, लड़के, संतरे, बिल्लियाँ, थैले आदि। 4. एकवचन शब्दों के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है–(1) हिंदी में आदर प्रकट करने हेतु एकवचन के स्थान पर बहुवचन शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे– ● दशरथ अयोध्या के राजा थे। ● दादा जी चिकित्सक हैं। (2) लोक-व्यवहार में प्रायः 'तू' के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग किया जाता है। तुम 'तू' का बहुवचन रूप है। **उदाहरण**–क्या तुम गाँव जाओगे? तुमने थैला कहाँ रख दिया? (3) प्रायः स्वाभिमान, प्रभाव, अधिकार या बड़प्पन दिखाने के लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग किया जाता है; जैसे–● हम स्वयं चले जाएँगे। ● दिन ढल गया, अब हम चलेंगे। 5. कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा शब्दों को संपूर्ण जाति का बोध कराने के लिए बहुवचन के स्थान पर एकवचन में प्रयोग किया जाता है; जैसे–● बनारसी **साड़ी** संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। ● इलाहाबादी **अमरूद** बहुत मीठा होता है। **(ख)** 1. रोटी 2. केले 3. चाबी 4. अलमारियाँ **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. पक्षीवृंद 2. छात्रगण 3. बहुएँ 4. कथाएँ 5. रीतियाँ 6. चादरें **(ङ)** 1. जूता 2. गाय 3. नायिका 4. लता 5. बाली 6. प्रजा 7. धारा 8. बस्ती 9. मज़दूर 10. डाली **(च)** 1. एकवचन 2. बहुवचन 3. बहुवचन **(छ)** 1. लड़के प्याला तोड़ रहे हैं। 2. चिड़ियाँ डाल पर बैठ गईं। 3. कलियाँ खिल रही हैं।

10. सर्वनाम

(क) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किया जाता है, उसे सर्वनाम कहते हैं। सर्वनाम के प्रमुख भेद हैं–(1) पुरुषवाचक (2) निश्चयवाचक (3) अनिश्चयवाचक (4) संबंधवाचक (5) प्रश्नवाचक (6) निजवाचक। 2. बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद माने जाते हैं–**(क) उत्तम पुरुष**–बात कहने वाला अथवा कुछ लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–मैं, हम, हमें, मुझे आदि। **उदाहरण**–(i) मैं जा रहा हूँ। (ii) हम खेल रहे हैं। (iii) मुझे पुस्तक चाहिए। **(ख) मध्यम पुरुष**–बोलने वाला व्यक्ति जिससे बातें कर रहा हो या लिखने में जिसे संबोधित कर रहा हो, उसके लिए प्रयुक्त शब्द मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–तू, तुम, तुम्हें, आप आदि। **उदाहरण**–(i) तू कहाँ बैठा था? (ii) आशा है आप सानंद होंगे। (iii) तुम यहाँ खड़े रहो। **(ग) अन्य पुरुष**–बोलने वाला या लिखने वाला जिसके विषय में बात करता या कुछ लिखता है, उसके लिए 'वह', 'वे', 'उसे', 'उन्हें' आदि शब्दों का प्रयोग करता है। 'वह', 'वे', 'उसे', उन्हें, अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **उदाहरण**–(i) वह कल आएगा। (ii) वे कल आएँगे। (iii) थैला उसे दे दो। (iv) सारे वस्त्र उन्हें दे दो। 3. किसी निश्चित संज्ञा की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करने वाले शब्द को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-यह, वह, ये और वे। **उदाहरण**–(i) यह मेरा बस्ता है। (ii) वह मेरा विद्यालय है। (iii) ये तुम्हारे मित्र हैं। (iv) वे मेरी पुस्तकें हैं। जिस

सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–कोई, कुछ, किसी, किन्हें, किन्हीं आदि। **उदाहरण–**(i) किसी ने उसकी सहायता नहीं की। (ii) बाहर कोई है। (iii) दूध में कुछ पड़ा है। (iv) आप फल किन्हें बाँटकर आए? 4. स्वयं के लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। 5. जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न प्रकट होता है, वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे-क्या, कौन, किसने आदि। **उदाहरण–**(i) तुम्हारा क्या नाम है? (ii) दरवाज़े पर कौन खड़ा है? (iii) तुम्हें किसने बुलाया? 6. जो सर्वनाम वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनामों से संबंध बताए, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–**(i) जो करेगा, सो भरेगा। (ii) जिसकी लाठी, उसकी भैंस। (iii) जिसने यह किया है, वह स्वयं बता दे। 7. पुरुषवाचक सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले व अन्य व्यक्ति तीनों के लिए प्रयोग होता है जबकि निजवाचक सर्वनाम स्वयं के लिए प्रयोग होता है। **(ख)** 1. मध्यम पुरुषवाचक 2. उत्तम पुरुषवाचक 3. मध्यम पुरुषवाचक 4. स्वयं 5. कुछ **(ग)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. वह, कौन, कहाँ 2. उसे, कोई, उसकी 3. मैं, तुम 4. वह, कहाँ 5. कोई 6. उसने 7. तू, क्या 8. कोई 9. उसके, कुछ 10. जो, वे **(ङ)** 1. मुझे आराम करना है। 2. दरवाज़े पर कोई आदमी है। 3. वह मुझसे नहीं मिलेगा। **(च)** 1. यह मेरा भाई है। 2. वे आ गए। 3. उसे चाय पिला दो। 4. तुम क्या कर रहे हो? **(छ)** 1. यह 2. कोई 3. कुछ 4. तुम 5. मैं

11. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। **उदाहरण–**नेहा ने पुस्तक पढ़ी। इस वाक्य में नेहा व पुस्तक कारक हैं। 2. कारक के आठ भेद हैं–(1) कर्ता कारक (2) कर्म कारक (3) करण कारण (4) संप्रदान कारक (5) अपादान कारक (6) संबंध कारक (7) अधिकरण कारक (8) संबोधन कारक 3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। **उदाहरण–**(i) **अजय** ने पत्र लिखा। (ii) **माँ** ने सौ लड्डू बनाए। 4. वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। 5. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का आधार, स्थान, भाव या काल ज्ञात होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। **उदाहरण–**(i) **पेड़ पर** बंदर बैठा है। (ii) मछली **पानी में** रहती है। (iii) वह एक **सप्ताह में** लौटेगा। (iv) पक्षी **पेड़ों पर** रहते हैं। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. ने 2. में 3. का, से 4. के, से, के, में 5. में **(घ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) **(ङ)** 1. दोनों कारकों में 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है। कर्म कारक में क्रिया के प्रभाव का भाव होता है; जबकि संप्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है, जैसे– ● माता जी ने **अजय** को बुलाया। (कर्म कारक) ● माता जी ने **अजय** को पेन दिया। (संप्रदान कारक) 2. करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, परंतु करण कारक में यह द्वारा (साधन) के अर्थ में प्रयुक्त होता है और अपादान कारक में अलग होने के अर्थ में; जैसे–● मेहमान **हवाई जहाज़** से जयपुर गए। (करण कारक) ● बंदर **छत** से गिर पड़ा। (अपादान कारक) **(च)** 1. संबोधन कारक 2. करण कारक 3. करण कारक 4. संप्रदान कारक 5. कर्ता कारक 6. संप्रदान कारक 7. अपादान कारक

12. विशेषण

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। विशेषण के पाँच भेद हैं–(1) गुणवाचक विशेषण (2) परिमाणवाचक विशेषण (3) संख्यावाचक विशेषण (4) सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण (5) व्यक्तिवाचक विशेषण 2. विशेषण

जिस शब्द की विशेषता बताता है उसे विशेष्य कहते हैं। **उदाहरण**–लाल गुलाब में 'लाल' शब्द विशेषण है तथा 'गुलाब' शब्द विशेष्य है। 3. जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, दशा आदि का बोध कराता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। **उदाहरण–लालची** आदमी, **ऊँची** इमारत, **सुंदर** चित्र, **हिंसक** पशु, **पतली** रस्सी, **बड़ा** बँगला। 4. गुणवाचक विशेषण के प्रमुख उपभेद निम्नलिखित हैं–(i) **गुणसूचक**–बुद्धिमान, भला, ईमानदार, वीर, सुंदर, अच्छा, दानी, शिष्ट, परिश्रमी, उदार, गुणवान, दयालु, सदाचारी आदि। (ii) **दोषसूचक**–झूठा, कायर, दुष्ट, लोभी, नीच, दुराचारी, क्रूर, हिंसक, मक्कार, कपटी, बुरा आदि। (iii) **स्पर्शसूचक**–नरम, कठोर, मुलायम, खुरदरा, चिकना आदि। (iv) **पदार्थसूचक**–सूती, रेशमी, फ़ौलादी, पथरीला, कँटीला आदि। (v) **दशासूचक**–स्वस्थ, रोगी, अमीर, गरीब, हलका, भारी आदि। (vi) **आकारसूचक**–गोल, चौकोर, लंबा, चौड़ा, सँकरा, नुकीला, पतला, मोटा आदि। (vii) **समयसूचक**–प्रातःकालीन, सायंकालीन, मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक आदि। (viii) **स्थानसूचक**–बाहरी, भीतरी, ग्रामीण, शहरी, जंगली आदि। (ix) **रंगसूचक**–काला, सफ़ेद, पीला, आसमानी, लाल, नीला, धानी, गुलाबी आदि। (x) **दिशासूचक**–पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी आदि। 5. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की नाप–तौल का बोध कराता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–दो लीटर तेल, पाँच मीटर कपड़ा, एक किलो चीनी, थोड़ा दूध, कुछ चावल आदि। 6. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–दो सेब, पाँच आम, तीन कुत्ते, अनेक लोग, छठी मंज़िल, पाँचवाँ व्यक्ति, तीसरा लड़का आदि। 7. जो सर्वनाम संज्ञा से पहले प्रयुक्त होकर उसकी ओर संकेत करता है, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। 8. विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर की जाती है। **(ख)** 1. **मूल विशेषण**–कुछ शब्द मूल रूप से ही विशेषण होते हैं; जैसे–अच्छा, बुरा, खरा, मोटा, पतला, काला, गोरा आदि। ये मूल विशेषण कहलाते हैं। 2. **यौगिक विशेषण**–कुछ विशेषण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। इन्हें यौगिक विशेषण कहते हैं। • उपसर्ग जोड़ने पर – प्र + सिद्ध = प्रसिद्ध • प्रत्यय जोड़ने पर – रोग + ई = रोगी **(ग)** 1. सफ़ेद, प्रिय– गुणवाचक विशेषण 2. थोड़ा–अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण 3. घमंडी–गुणवाचक विशेषण 4. कम–अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण 5. पवित्र–गुणवाचक विशेषण 6. चार– निश्चित संख्यावाचक विशेषण 7. वह–सार्वनामिक विशेषण 8. कानपुरी–व्यक्तिवाचक विशेषण **(ग)** 1. बनारसी 2. जापानी 3. भारतीय 4. इलाहाबादी 5. जंगली 6. विषैला 7. धार्मिक **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(ङ)** खर्चीला, तुमसा, कँटीला, दिखावटी, पिछला, राष्ट्रीय, ऐसा, घरेलू, भारतीय, निचला, पाक्षिक, गुणी, वन्य, जैसा, जयपुरी **(च)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(छ)** 1. अधिक ऊँचा, सबसे अधिक ऊँचा 2. योग्यतर, योग्यतम 3. अधिक बलवान, सबसे अधिक बलवान 4. अधिक ऊँचा, सबसे अधिक ऊँचा 5. प्रियतर, प्रियतम 6. कटुतर, कटुतम

13. क्रिया

(क) 1. जिस शब्द से किसी कार्य, घटना अथवा अस्तित्व के होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–(1) पक्षी आकाश में **हैं।** (2) वे **उड़ रहे हैं।** वाक्य (1) में अस्तित्व का बोध होता है। वाक्य (2) में कार्य के होने का बोध होता है। अतः 'हैं' व 'उड़ रहे हैं' शब्द क्रिया हैं। 2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 3. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं : (1) सकर्मक क्रिया (2) अकर्मक क्रिया **(1) सकर्मक क्रिया**–जिस क्रिया को

अपना अर्थ पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–(i) माली फूल लाया। (ii) चौकीदार ने चोर पकड़ लिया। फूल ➡ कर्म चोर ➡ कर्म **(2) अकर्मक क्रिया**–जिस क्रिया को अपना अर्थ पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–(i) राजू पढ़ता है। (ii) मुन्ना हँसता है। 4. जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–राजू ने लता को पेन दिया। इस वाक्य में 'लता' व 'पेन' दो कर्म हैं। 5. क्रिया के जिस रूप से विधि (आज्ञा, उपदेश, प्रार्थना, सलाह, अनुरोध आदि) प्रकट हो, उसे विधिसूचक क्रिया कहते हैं। **(ख)** 1. खाई 2. देख रहा है 3. पढ़ रहा है 4. सो गया 5. जा रहे हो 6. लाई। **(ग)** 1. देखा-सकर्मक 2. बजा रहा है-सकर्मक 3. है-अकर्मक 4. पुकार रहा है-अकर्मक 5. बना रहा है-सकर्मक 6. चुन रहा है-सकर्मक **(घ)** 1. **अस्तित्ववाची**-है 2. **कार्यवाची**-खिल गया 3. **अस्तित्ववाची**-है 4. **कार्यवाची**-खा रहा है 5. अस्तित्ववाची-है **(ङ)** 1. आकर 2. सोकर 3. पीकर 4. उठकर **(च)** 1. बतियाना 2. हथियाना 3. गरमाना 4. झुठलाना **(छ) मुख्य कर्म**–1. सरकस 2. केला 3. रुपए 4. पुस्तक 5. घर **गौण कर्म**– 1. हमें 2. मुझे 3. नौकर 4. अजय 5. राजीव

14. काल

(क) 1. क्रिया का वह रूपांतर जिसमें क्रिया के होने के समय तथा उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध हो, उसे काल कहते है। 2. काल के तीन भेद हैं–**(1) भूतकाल**–क्रिया के जिस रूप से उसका बीते समय में होना प्रकट हो, उसे भूतकाल कहते हैं। **उदाहरण**–● कल हम कथा सुनने गए थे। ● राम ने रावण को मारा। ● वाजपेयी जी हमारे देश के प्रधानमंत्री थे। **(2) वर्तमान काल**–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया का होना अभी चल रहा है, उसे वर्तमानकाल की क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–(i) तारे झिलमिला रहे हैं। (ii) हवा चल रही है। **(3) भविष्यत्काल**–क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा, वह भविष्यत्काल कहलाता है। **उदाहरण**–(i) आज कर्मचारी अवकाश पर रहेंगे। (ii) मैं चिड़ियाघर देखने जाऊँगा। (iii) बारात सायं सात बजे प्रस्थान करेगी। 3. भूतकाल के छह उपभेद होते हैं–**(1) सामान्य भूत**–भूतकाल की क्रिया के साधारण रूप को सामान्य भूत कहते हैं; जैसे–(i) नौकर चले गए। (ii) अँधेरे के कारण वह देख न सका। (iii) वे कल गाँव गए थे। **(2) आसन्न भूत**–क्रिया के जिस रूप से कार्य के अभी-अभी (कुछ समय पहले) समाप्त होने का बोध हो, वह आसन्न भूत कहलाता है; जैसे–(i) राजू अभी-अभी स्कूल गया है। (ii) रेलगाड़ी जा चुकी है। **(3) अपूर्ण भूत**–क्रिया का वह रूप जिससे यह तो पता चले कि कार्य भूतकाल में हो रहा था किंतु उसकी समाप्ति के विषय में पता न चले, अपूर्ण भूत कहलाता है; जैसे–(i) पक्षी आकाश में उड़ रहे थे। (ii) ठंडी हवा चल रही थी। (iii) बच्चे शोर मचा रहे थे। **(4) पूर्ण भूत**–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भूतकाल में पूरा हो गया था, उसे पूर्ण भूत कहते हैं; जैसे–(i) रात बीत चुकी थी। (ii) लोग काम पर चले गए थे। **(5) संदिग्ध भूत**–क्रिया के जिस रूप से भूतकाल का बोध हो, किंतु कार्य के होने में संदेह हो, वह संदिग्ध भूत होता है; जैसे–(i) बच्चा सो गया होगा। (ii) मेहमान चले गए होंगे। (iii) धूप खिल गई होगी। **(6) हेतुहेतुमद् भूत**–जहाँ भूतकाल की पहली क्रिया दूसरी क्रिया पर आधारित हो, उसे हेतुहेतुमद् भूत कहते हैं; जैसे–(i) यदि वर्षा समय पर हो जाती, तो फसल अच्छी होती। (ii) यदि जल-प्रदूषण न होता, तो नदियाँ बेहाल न होतीं। (iii) यदि हम मेहनत करते, तो सफल हो जाते। 4. वर्तमानकाल के तीन उपभेद होते हैं–**(1) सामान्य वर्तमान**–क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया का सामान्य रूप से होना पाया जाए,

उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं; जैसे–(i) अजय मंदिर जाता है। (ii) बच्चा खेलता है। (iii) रेशमा चाय बनाती है। **(2) अपूर्ण वर्तमान**–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य अभी चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ, वह अपूर्ण वर्तमान होता है; जैसे–(i) पिता जी समाचार सुन रहे हैं। (ii) कोयल कूक रही है। (iii) गाय चर रही है। **(3) संदिग्ध वर्तमान**–क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया के होने में संदेह पाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं; जैसे–(i) दादा जी आते होंगे। (ii) बच्चा सो रहा होगा। (iii) धोबी कपड़े धो रहा होगा। 5. भविष्यत्काल के दो उपभेद हैं–(i) सामान्य भविष्यत् (ii) संभाव्य भविष्यत्। **(ख)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(ग)** 1. क्रिया का वह रूप जिससे यह तो पता चले कि कार्य भूतकाल में हो रहा था किंतु उसकी समाप्ति के विषय में पता न चले, अपूर्ण भूत कहलाता है; जैसे–(i) पक्षी आकाश में उड़ रहे थे। (ii) ठंडी हवा चल रही थी। 2. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य अभी चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ, वह अपूर्ण वर्तमान होता है; जैसे–(i) पिता जी समाचार सुन रहे हैं। (ii) कोयल कूक रही है। 3. जहाँ भूतकाल की पहली क्रिया दूसरी क्रिया पर आधारित हो, उसे हेतुहेतुमद् भूत कहते हैं; जैसे–(i) यदि वर्षा समय पर हो जाती, तो फसल अच्छी होती। (ii) यदि जल-प्रदूषण न होता, तो नदियाँ बेहाल न होतीं। 4. जब आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई जाए, तब संभाव्य भविष्यत् होता है; जैसे–(i) संभवत: वह मेरी बात मान ले। (ii) हो सकता है शाम को वर्षा हो। **(घ)** 1. सामान्य भूत 2. अपूर्ण वर्तमान 3. सामान्य भूत 4. हेतुहेतुमद् भूत 5. संभाव्य भविष्यत् 6. आसन्न भूत 7. अपूर्ण भूत **(ङ) अपूर्ण वर्तमान**–1. बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। 2. मम्मी स्वेटर बुन रही हैं। 3. वह सो रहा है। 4. चाचा जी आ रहे हैं। **संदिग्ध वर्तमान**– 1. बच्चे मैदान में खेल रहे होंगे। 2. मम्मी स्वेटर बुन रही होंगी। 3. वह सो रहा होगा। 4. चाचा जी आते होंगे।

15. अविकारी शब्द

(क) 1. अविकारी शब्दों से अभिप्राय है–जिनमें विकार न आए अर्थात् जो अपरिवर्तनशील हों। **उदाहरण**–(1) नेता जी यहाँ रहते थे। (2) वे यहाँ से चले गए। (3) कल यहाँ कथा होगी। उपरोक्त वाक्यों में 'यहाँ' शब्द में परिस्थितियाँ बदलने पर भी बदलाव नहीं हुआ है। यह अपने मूल रूप में बना रहा है। यह अविकारी शब्द है। 2. अविकारी शब्दों को अव्यय इसलिए कहते हैं क्योंकि इनमें व्यय नहीं होता, ये प्रत्येक परिस्थिति में अपना रूप बनाए रखते हैं। (1) बच्चा **धीरे-धीरे** चलता है। (2) हवा **धीरे-धीरे** बह रही है। (3) कछुए **धीरे-धीरे** चलते हैं। 3. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण के प्रमुख भेद हैं–(i) कालवाचक क्रियाविशेषण (ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (ii) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (iv) रीतिवाचक क्रियाविशेषण 4. जो शब्द वाक्य में किसी संज्ञा या सर्वनाम का संबंध किसी अन्य शब्द या शब्दों के साथ प्रकट करता है, उसे संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। 5. जो अव्यय दो शब्दों, दो उपवाक्यों अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करता है, उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। **उदाहरण**–(1) नेहा और मीरा सखियाँ हैं। इस वाक्य में 'और' दो शब्दों नेहा व मीरा को जोड़ रहा है। (2) यह फूल है और वह कली। इस वाक्य में 'और' दो वाक्यों को जोड़ रहा है। (3) आशा है कि आप सानंद होंगे। इस वाक्य में 'कि' दो उपवाक्यों को जोड़ रहा है। **(ख)** 1. (i) वह कल गाँव जाएगा। (ii) नेहा प्रतिदिन मंदिर जाती है। 2. (i) विनीता यहाँ रहती है। (ii) छात्र बाहर खड़े हैं। 3. (i) रवि अधिक बोलता है। (ii) उतना पढ़ो, जितना याद रख सको। 4. (i) कछुआ धीरे-धीरे चलता है। (ii) दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है। **(ग)** 1. इधर-उधर–स्थानवाचक क्रियाविशेषण 2. अचानक-रीतिवाचक क्रियाविशेषण 3. थोड़ा, अधिक-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण 4. यहाँ-वहाँ–स्थानवाचक

क्रियाविशेषण 5. रातभर-कालवाचक क्रियाविशेषण **(घ)** 1. ताकि 2. इसलिए 3. या 4. क्योंकि 5. परंतु 6. अन्यथा 7. और **(ङ)** 1. **संयोजक**–वे समुच्चयबोधक जो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों में मेल प्रकट करें, संयोजक कहलाते हैं। प्रमुख संयोजक हैं–व, तथा, एवं, और आदि। 2. **विकल्पक**–इसके अंतर्गत ऐसे समुच्चयबोधक आते हैं, जो शब्दों या कई वाक्यों में से एक अथवा कुछ का ग्रहण अथवा त्याग बताएँ। प्रमुख विकल्पक हैं–या, अथवा, चाहे, अन्यथा आदि। 3. **विरोधक**–ये वे शब्द हैं, जो पहले कही गई बात का निषेध करने से पूर्व प्रयुक्त होते हैं; जैसे–किंतु, परंतु, पर, वरन्, लेकिन, बल्कि आदि। 4. **परिणामक**–जो समुच्चयबोधक पहले कहे हुए कथन का परिणाम बताने से पूर्व प्रयुक्त होते हैं, परिणामक कहलाते हैं। प्रमुख परिणामक हैं–अतः, क्योंकि, इसलिए, अतएव, इस कारण, इस वास्ते आदि। **(च)** 1. से पहले 2. के मारे 3. के पीछे 4. सहित 5. की अपेक्षा। **(छ)** 1. क्रियाविशेषण 2. स्थानवाचक 3. कालवाचक 4. विस्मयादिबोधक **(ज)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ **(झ)** 1. उनमें यह बुराई नहीं के बराबर है। 2. विद्यालय के आगे अस्पताल है। 3. मेरे घर के सामने बगीचा है। 4. भूख के कारण मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। 5. वह सब्ज़ी खरीदने के लिए बाज़ार गया। 6. कथा सुनने के पश्चात् वह घर चला गया। **(ञ)** 1. आज दो अक्टूबर अर्थात् शास्त्री जी का जन्मदिवस है। 2. खूब मेहनत करो जिससे कि परीक्षा में अच्छे अंक ला सको। 3. वह ईमानदार तथा होशियार है। 4. वह भूखा-प्यासा है इसलिए ठीक से नहीं चल पा रहा है। 5. चूँकि वह बीमार है इसलिए विद्यालय नहीं आया। 6. यदि वह सतर्क होता तो छला न जाता।

16. वाक्य-विचार

(क) 1. सार्थक शब्दों का ऐसा समूह जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, उसे वाक्य कहते हैं। 2. वाक्य के दो अनिवार्य अंग होते हैं–**(1) उद्देश्य**–वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया या विधान किया जाता है, उसे उद्देश्य कहा जाता है। **(2) विधेय**–वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। **उदाहरण**–मीरा भजन सुना रही है। इस वाक्य में 'मीरा' उद्देश्य है तथा 'भजन सुना रही है' विधेय है। 3. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–(1) सरल या साधारण वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य 4. अर्थ के आधार पर आठ भेद हैं–(1) विधिवाचक वाक्य (2) निषेधवाचक वाक्य (3) प्रश्नवाचक वाक्य (4) विस्मयादिबोधक वाक्य (5) आज्ञावाचक वाक्य (6) संदेहवाचक वाक्य (7) इच्छावाचक वाक्य (8) संकेतवाचक वाक्य **(ख)** 1. मिश्र 2. आज्ञावाचक 3. प्रश्नवाचक 4. मिश्र 5. सरल **(ग)** 1. (ल) 2. (द) 3. (अ) 4. (व) 5. (र) 6. (स) 7. (ब) 8. (य) **(घ) उद्देश्य**–1. हम 2. कपड़े 3. प्रबंधक 4. पेन 5. संतोषी **विधेय**–1. घर जाएँगे 2. संदूक में हैं 3. कर्मचारी को निलंबित कर दिया 4. मेज़ पर रखा है। 5. सदा सुखी रहते हैं। **(ङ)** 1. सरल वाक्य 2. मिश्र वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. सरल वाक्य **(च)** 1. इच्छावाचक वाक्य 2. संदेहवाचक वाक्य 3. संदेह वाचक वाक्य 4. निषेधवाचक वाक्य 5. प्रश्नवाचक वाक्य 6. विस्मयादिबोधक वाक्य

17. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. लिखते समय रुकने का संकेत देने तथा कथन का आशय समझाने के लिए जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, उसे विराम-चिह्न कहते हैं। **वाक्य में विराम चिह्नों का महत्व**–वाक्य के सुंदर गठन और भावाभिव्यक्ति के लिए विराम-चिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता मानी गई है। यदि विराम चिह्नों का उपयोग न किया जाए, तो भाव अथवा विचारों की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और वाक्य समझ नहीं आएँगे। 2. पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य के कथन के पूर्ण होने पर किया जाता है; जबकि विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग

वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि भावों को दर्शाने वाले शब्दों अथवा कभी-कभी ऐसे वाक्यों के अंत में किया जाता है। 3. जब कुछ लिखने से छूट जाता है, तब त्रुटिपूरक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण–दहेज एक सामाजिक है।

4. प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्य के समाप्त होने पर किया जाता है। **(ख)** 1. यह बात तो वर्णन के बाहर (वर्णनातीत) है। 2. अब खूब मेहनत करो; परीक्षाएँ निकट हैं। 3. तुम्हें मुझसे क्या काम है? 4. पं० जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। 5. वर्ण के दो भेद हैं :– (1) स्वर (2) व्यंजन **(ग)** 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) **(घ)** (1) भगवान सबका भला करे, जो दे उसका भी, जो न दे उसका भी। (2) अरे अजय! कब आए, सूचना तो दे देते। (3) अजय ने कहा, ''सामान कैसे भेजता? नौकर सो रहा था।'' (4) भारतवासी सोचने लगे, 'अरे! हमारी संस्कृति में ऐसी-ऐसी चीज़ें भरी पड़ी हैं क्या? (5) अध्यापक-''भारत के प्रधानमंत्री कौन हैं?'' छात्र–''श्री नरेंद्र मोदी।'' (6) दहेज में उन्होंने आभूषण, वस्त्र, फ्रिज, वाशिंग मशीन, टेलीविज़न, कार और लाखों रुपए नकद दिए। (7) वो देखो कोई पुकार रहा है। अजी, आप उधर कहाँ जा रहे हैं, देवी का मंदिर तो इधर है। (8) हाय! बेचारा नहीं रहा। यदि उसे अस्पताल ले जाते, तो बच सकता था। (9) एकाएक वह बोल उठा, ''चलो मेरे साथ, आज तुम्हें कुछ विस्मयकारी चीज़ें दिखाऊँगा।''

हिंदी व्याकरण–6

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने विचारों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं। भाषा के दो रूप होते हैं–(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा (1) **मौखिक भाषा**–इसे उच्चारित भाषा भी कहते हैं। मुख से बोलकर जो विचार प्रकट किए जाते हैं, वह भाषा का बोलचाल का रूप होता है। इसे मौखिक भाषा कहते हैं। (2) **लिखित भाषा**–मौखिक भाषा को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो यह भाषा का लिखित रूप होता है, इसे लिखित भाषा कहते हैं। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को 'बोली' कहते हैं। कुछ प्रमुख बोलियों के नाम हैं–मैथिली, भोजपुरी, अवधी, बुंदेली, ब्रज आदि। 3. किसी भाषा को लिपिबद्ध करने अर्थात् लिखने में कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। ये जिस रूप में लिखे जाते हैं, उसे लिपि कहते हैं। कुछ प्रमुख भारतीय भाषाओं की लिपियाँ निम्न प्रकार हैं–

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
संस्कृत	देवनागरी	बाँग्ला	बाँग्ला	हिंदी	देवनागरी
तमिल	तमिल	मराठी	देवनागरी	तेलुगू	ब्राह्मी
डोगरी	देवनागरी	पंजाबी	गुरुमुखी	बोड़ो	देवनागरी
गुजराती	गुजराती	नेपाली	देवनागरी	उर्दू	फ़ारसी

4. व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें भाषा को शुद्ध बोलना, पढ़ना व लिखना सिखाता है। व्याकरण के तीन अंग हैं– (1) **वर्ण-विचार**–इसके अंतर्गत वर्ण, उच्चारण एवं संधि आदि पर विचार किया जाता है। (2) **शब्द-विचार**–इसके अंतर्गत शब्दों के भेद, उत्पत्ति और उनकी रचना के विषय में विचार किया जाता है। 3. **वाक्य-विचार**–इसमें वाक्य-रचना, वाक्य शुद्धि, वाक्य-विशेषण और विराम-चिह्न आदि के विषय में विचार किया जाता है। **(ख)** 1. लिपि 2. सीमित 3. बोलना 4. संस्कृत 5. व्याकरण **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि, जिसके खंड (टुकड़े) न किए जा सकें, उसे

वर्ण कहते हैं। वर्ण के दो भेद हैं–(क) स्वर (ख) व्यंजन 2. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है अर्थात् जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता अपेक्षित नहीं होती है, ऐसे वर्णों को स्वर कहते हैं। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा रुकावट के साथ मुख से बाहर निकलती है और उनके स्पष्ट उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। 3. स्वरों के भेद–उच्चारण की दृष्टि से स्वरों के तीन भेद माने जाते हैं। (1) **ह्रस्व स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्राकाल) लगता है और जो खींचकर नहीं बोले जाते, उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है। हिंदी में अ, इ, उ तथा ऋ ये चार ह्रस्व स्वर हैं। (2) **दीर्घ स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दो गुना समय लगता है तथा जिन्हें कुछ खींचकर बोला जाता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहा जाता है। हिंदी में आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ ये सात दीर्घ स्वर हैं। (3) **प्लुत स्वर–**जिस स्वर के उच्चारण में तीन गुना समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर का कोई चिह्न नहीं होता है। इसके लिए तीन (३)का अंक लगाया जाता है; जैसे–ओ३म्। 4. व्यंजनों के तीन भेद हैं–(1) स्पर्श (2) अंत:स्थ (3) ऊष्म **(1) स्पर्श व्यंजन**–जिन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। क् से म् तक 25 व्यंजन स्पर्श हैं। **(2) अंत:स्थ व्यंजन**–जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के किसी भी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। य्, र्, ल्, व् अंत:स्थ व्यंजन हैं। इनके उच्चारण में साँस का अवरोध बहुत कम लगता है। **(3) ऊष्म व्यंजन**– ऊष्म का अर्थ है–'गरम'। जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से बाहर ऊष्मा निकलती प्रतीत होती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है–श्, ष्, स् और ह्। 5. संयुक्त व्यंजनों की रचना दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से होती है। प्राय: निम्नलिखित व्यंजनों को संयुक्त व्यंजनों के रूप में व्यवहार में लाया जाता है–**क्ष**→क् + ष = क्ष **क् और ष के मेल से बना है। ज्ञ**→ज् + ञ = ज्ञ **ज् और ञ के मेल से बना है। त्र**→त् + र = त्र **त् और र के मेल से बना है। श्र**→श् + र = श्र **श् और र के मेल से बना है।** जब एक व्यंजन अपने ही जैसे अन्य व्यंजन से मिलकर एक हो जाता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। द्वित्व व्यंजन में पहला व्यंजन स्वर-रहित होता है; जैसे–**क्क** = क् + क (चक्कर, चक्की) **त्त** = त् + त (पत्ता, कुत्ता) **प्प** = प् + प (छप्पर, ठप्पा) **ल्ल** = ल् + ल (पल्ला, छल्ला) 6. ● जब 'र' के साथ स्वर नहीं होता, तो वह अगले वर्ण के ऊपर लिखा जाता है। ऐसी स्थिति में इसका रूप (`) हो जाता है। इसे 'रेफ़' कहते हैं। **उदाहरण–**नर्स, धर्म, चर्म, फर्ज़ आदि। ● जब 'र' से पूर्व स्वर-रहित व्यंजन हो, तो यह उसके नीचे लिखा जाता है। उस स्थिति में इसका रूप (्र) होता है; जैसे–प् + र = प्र; त् + र = त्र; क् + र = क्र; श् + र = श्र; म् + र = म्र आदि। ● जब ट् और ड् के साथ 'र' मिलाया जाता है, तो यह (्) रूप में आकर उनके नीचे स्थान पाता है; जैसे–ट् + र = ट्र – ट्रक, राष्ट्र; ड् + र = ड्र – ड्रम, ड्रेस **(ख)** 1. संयुक्त 2. पकड़ 3. प्लुत 4. ऊष्म 5. ह्रस्व **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(घ) ममता–**म् + अ + म् + अ + त् + आ **केला–**क् + ए + ल् + आ **गमला–** ग् + अ + म् + अ + ल् + आ **करेला–**क् + अ + र् + ए + ल् + आ **धरती–** ध् + अ + र् + अ + त् + ई **मैदान–**म् + ऐ + द् + आ + न् + अ **विजय–**व् + इ + ज् + अ + य् + अ **अयोगवाह–**अ + य् + ओ + ग् + अ + व् + आ + ह् + अ **जीवन–**ज् + ई + व् + अ + न् + अ

3. शब्द-विचार

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं; जैसे–रस, सरस, पुत्र, सुपुत्र आदि। 2. ● शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है, तब उसका व्यवहार पूर्व की अपेक्षा

बदल जाता है। वह वाक्य में व्याकरण के नियमों (कारक, वचन, लिंग) के अनुसार स्थान पाता है। तब उसे पद कहते हैं। उदाहरण–**घोड़ा** (शब्द), **घोड़ा** अस्तबल में ले जाओ। (घोड़ा = पद) 3. **शब्दों के वर्गीकरण के निम्नलिखित आधार हैं**–(क) उत्पत्ति अथवा स्रोत का आधार (ख) व्युत्पत्ति अथवा रचना का आधार (ग) अर्थ का आधार (घ) प्रयोग का आधार 4. उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद हैं–(1) तत्सम (2) तद्भव (3) देशज (4) विदेशी (5) मिश्रित 5. व्युत्पत्ति अथवा रचना के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद हैं–(1) रूढ़ (2) यौगिक (3) योगरूढ़ 6. अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद हैं–(1) एकार्थी (2) अनेकार्थी (3) समानार्थी या पर्यायवाची (4) विलोमार्थी या विलोम शब्द 7. प्रयोग के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद हैं (1) विकारी शब्द (2) अविकारी शब्द। **(ख)** 1. यौगिक 2. शब्द, पद 3. होता 4. विलोम 5. शब्द 6. पद **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓ 7. ✓ **(घ) रूढ़**–कान, पुत्र **यौगिक**–सेनापति, प्रधानमंत्री **योगरूढ़**–नीलकंठ, मुरलीधर **संकर**–रेलगाड़ी, टिकटघर **विकारी**–लड़का, हरा **अविकारी**–आज, यहाँ **(ङ)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (अ) **(च) कान**–कर्ण, **कौआ**–काक, **नींद**–निद्रा, **चूरन**–चूर्ण, **कुआँ**–कूप, **ऊँचा**–उच्च, **उजला**–उज्ज्वल, **आज**–अद्य, **आठ**–अष्ट **(छ) घृत**–घी, **चैत्र**–चैत, **गृह**–घर, **चर्म**–चमड़ा, **भगिनी**–बहन, **मयूर**–मोर, **ग्रंथि**–गाँठ, **इष्टिका**–ईंट, **बाहु**–बाँह, **अंगुष्ठ**–अँगूठा, **उलूक**–उल्लू, **गर्दभ**–गधा **(ज) पीतांबर**–योगरूढ़, **गिरिधर**–योगरूढ़, **भोजनालय**–यौगिक, **पंकज**–योगरूढ़, **मृगनयनी**–योगरूढ़, **नीरज**–योगरूढ़, **जलज**–योगरूढ़, **नीलकंठ**–योगरूढ़, **सूर्य**–रूढ़

4. शब्द-रचना

(क) 1. शब्द-रचना के लिए मूल या रूढ़ शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इसी प्रकार संधि के द्वारा दो या अधिक शब्दों में निकटवर्ती वर्णों के मेल से नए शब्दों की रचना होती है। **उदाहरण**–मूल शब्द **⟶ जल**–उपसर्ग जोड़कर–स + जल **⟶ सजल** यहाँ उपसर्ग के जोड़ने से नए शब्द की रचना हुई है। प्रत्यय जोड़कर–जल + ज **⟶ जलज** यहाँ मूल शब्द **जल** में 'ज' प्रत्यय जोड़कर नया शब्द बनाया गया है। हरि + ईश = **हरीश** यहाँ दो शब्दों में संधि द्वारा नए शब्द की रचना हुई है। यह प्रक्रिया शब्द-रचना कहलाती है। 2. जो शब्दांश मूल शब्द के पूर्व में जुड़कर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करते हुए नए शब्द की रचना करता है, उसे उपसर्ग कहते हैं। जैसे–'गुण' शब्द से पहले 'अव' जोड़कर बना शब्द 'अवगुण' है। यहाँ 'अव' उपसर्ग जुड़ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन होकर नया शब्द बन गया है। 3. ऐसा शब्दांश जो मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देता है, उसे प्रत्यय कहते हैं। जैसे–त्याग + ई = त्यागी, आवश्यक + ता = आवश्यकता यहाँ प्रत्ययों के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में परिवर्तन आ गया है। 4. जब दो वर्ण पास-पास होते हैं, तो व्याकरण के नियमानुसार उनके मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं। **उदाहरण**–हिम + आलय = **हिमालय,** विद्या + अर्थी = **विद्यार्थी,** जगत् + ईश = **जगदीश,** परम + अणु = **परमाणु।** संधि के तीन भेद होते हैं–(क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि (ग) विसर्ग संधि 5. व्यंजन संधि के दो नियम निम्नलिखित हैं–(1) **पहले वर्गीय वर्ण का तीसरे वर्गीय वर्ण में परिवर्तन**–किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल किसी स्वर या 'य, र, ल, व' में से किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) में बदल जाता है; जैसे–तत् + भव = तद्भव, दिक् + अंबर = दिगंबर, जगत् + ईश = जगदीश, दिक् + गज = दिग्गज, षट् + आनन = षडानन, सत् + आचार = सदाचार (2) **पहले वर्गीय वर्ण का पाँचवें**

वर्गीय वर्ण में परिवर्तन–यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण से हो, तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है; जैसे–अप् + मय = अम्मय, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, षट् + मास = षण्मास, उत् + मत्त = उन्मत्त, चित् + मय = चिन्मय, वाक् + मय = वाङ्मय **(ख)** 1. प्रारंभ 2. अंत 3. वर्णों 4. निकट 5. सृष्टि **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। **उदाहरण**–(1) यदि + अपि = यद्यपि (2) सु + उक्ति = सूक्ति। 2. जब एक ही जाति के वर्ण पास-पास आ जाएँ, तो उन दोनों के मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। यह मेल दीर्घ संधि कहलाता है। **उदाहरण**–(1) अ + अ = आ – वेद + अंत = वेदांत (2) अ + आ = आ – कुश + आसन = कुशासन 3. यदि 'अ' अथवा 'आ' के पश्चात् 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' अथवा 'ऋ' हो, तो क्रमशः दोनों (पहले और बाद के स्वरों) को मिलाकर 'ए', 'ओ' तथा 'अर्' हो जाता है; यह मेल गुण संधि कहलाता है। **उदाहरण**–(1) अ + इ = ए – नर + इंद्र = नरेंद्र (2) आ + इ = ए – महा + इंद्र = महेंद्र 4. जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो, तो दोनों वर्ण मिलकर ऐ हो जाते हैं तथा 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' होने पर 'औ' हो जाते हैं। इन वर्णों के इस प्रकार के मेल को वृद्धि संधि कहते हैं। **उदाहरण**–(1) अ + ए = ऐ – एक + एक = एकैक (2) अ + ऐ = ऐ – राज + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य **(ङ)** एकैक, निरुत्तर, दिगंबर, नरेश, रवींद्र, महोत्सव, भविष्य, दुष्प्रकृति **(च)** **अध**–अधपका, अधखिला, **अ**–अभाव, अथाह, **आ**–आजन्म, आरक्षण **कु**–कुपुत्र, कुसंग, **वि**–विशेष, विभिन्न **परा**–पराजय, पराक्रम **सु**–सुयश, सुपात्र **अन**–अनमोल, अनपढ़ **(छ)** **आ**–भूखा, झूला **आवट**–बनावट, लिखावट **ई**–बोली, खिड़की **इक**–मासिक, धार्मिक **नी**–ओढ़नी, फूँकनी **आऊ**–टिकाऊ, बिकाऊ **आव**– चढ़ाव, फैलाव **दार**–मालदार, समझदार

5. समास

(क) 1. समास का अर्थ है–'संक्षेप'। 2. कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ प्रकट करना समास का प्रयोजन है। 3. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। 4. समासयुक्त पद को समस्तपद कहते हैं। (समास करते समय वाक्य में पदों के बीच से विभक्ति-चिह्न हटा देते हैं। विभक्ति रहित शब्दों को मिला देने से समस्तपद बनता है।) विग्रह करने पर समस्तपद के दो पद बनते हैं-पूर्वपद और उत्तरपद।

उदाहरण–समस्तपद	**पूर्वपद**	**उत्तरपद**
युद्धभूमि	युद्ध	भूमि
भरपेट	भर	पेट
प्रतिदिन	प्रति	दिन

5. समास के छह भेद हैं–(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास (3) कर्मधारय समास (4) द्विगु समास (5) द्वंद्व समास (6) बहुव्रीहि समास **(ख)** 1. दो 2. छह 3. द्वंद्व 4. दूसरा 5. पूर्व **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(घ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) **(ङ)** 1. जिस समस्तपद में पूर्व पद प्रधान हो और उसके योग से समस्तपद भी अव्यय बन जाए, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। **उदाहरण**–निडर (समस्तपद) बिना डरे हुए (विग्रह), अनजाने (समस्तपद) बिना जाने हुए (विग्रह) 2. जिस समस्त पद में दूसरा पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में पहले पद का विभक्ति-चिह्न हटा दिया जाता है अर्थात् उसका लोप हो जाता है; **उदाहरण**–सेना का पति= सेनापति। पहले पद (सेना का) के विभक्ति-चिह्न 'का' का लोप हो गया है। 3. जिस समास का पूर्वपद

विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। **उदाहरण–** पीतांबर (समस्तपद) पीत है जो अंबर (विग्रह), परमेश्वर (समस्तपद) परम है जो ईश्वर (विग्रह) **(च)** 1. सत्संग भवन में **यज्ञशालाएँ** बनाई गईं। 2. नेहा **रसोईघर** में भोजन बना रही है। 3. **अमीर-गरीब** भगवान की दृष्टि में समान हैं। **(छ) नीलगाय**–नीली है जो गाय (कर्मधारय) **चौराहा**–चार राहों का समूह (द्विगु) **चारपाई**–चार हैं पाये जिसके अर्थात् खाट (बहुव्रीहि) **दशानन**–दश हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि) **विषधर**–विष को धारण करने वाला अर्थात् साँप (बहुव्रीहि) **पीतांबर**–पीत है जो अंबर (कर्मधारय) **माता-पिता**–माता और पिता (द्वंद्व) **आजीवन**–जीवनपर्यंत (अव्ययीभाव)

6. शब्द-भंडार

(क) 1. परस्पर समान अर्थों वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। 2. परस्पर उलटे या विपरीत अर्थ का ज्ञान कराने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। जैसे-ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा, काला-गोरा, आदि-अंत परस्पर विलोम शब्द हैं। 3. कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **योग**–जोड़, मिलान, योग-साधना (2) **अतिथि**–यात्री, मेहमान, साधु, परिचित 4. हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द प्रचलित हैं, जो समान अर्थ की प्रतीति या आभास कराते हैं; परंतु वे समानार्थक नहीं होते हैं। ऐसे शब्द एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों में काफ़ी अंतर होता है। जैसे–'भागना' एवं 'दौड़ना' बोलचाल में प्रायः दोनों शब्दों का प्रयोग होता है और कभी-कभी अज्ञानतावश हम इन दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ के रूप में कर देते हैं, जबकि दोनों में पर्याप्त अंतर है। ये शब्द एक जैसे अर्थ की प्रतीति कराते हैं; परंतु इन दोनों का अर्थ अलग-अलग है। 'भागना' अर्थात् भय के कारण भागना और 'दौड़ना' अर्थात् स्वाभाविक या प्रतियोगिता के लिए दौड़ना। 5. जो शब्द उच्चारण की दृष्टि से प्रायः समान होते हैं परंतु उनके उच्चारण अथवा ध्वनि में सूक्ष्मगत अंतर होता है, उन्हें समश्रुति या भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। ये शब्द सुनने में समान लगते हैं परंतु अर्थ में भिन्नता रखते हैं। **उदाहरण**–(1) ऋत-सत्य, ऋतु-मौसम (2) अंश-भाग, अंस-कंधा 6. संक्षेप में बात कहने के लिए प्रत्येक वाक्यांश (शब्द-समूह) के लिए एक शब्द निश्चित किया गया है। वाक्यांशों से भाषा संक्षिप्त व प्रभावशाली बन जाती है। **उदाहरण**–(1) जो सब जानता हो-सर्वज्ञ (2) जिसके टुकड़े न हो सकें-अखंड **(ख)** 1. **पक्षी**–चिड़िया, अंडज **दूध**–दुग्ध, क्षीर **नाव**–नौका, तरिणी **फूल**–कुसुम, सुमन **पृथ्वी**–अवनि, धरा **सर्प**–साँप, भुजंग **हिमालय**–हिमगिरि, पर्वतराज **वस्त्र**–कपड़ा, वसन **हाथी**–गज, हस्ति **आँख**–नेत्र, नयन **(ग) भौतिक**-आध्यात्मिक, **निंदा**-स्तुति, **जय**-पराजय, **उत्पत्ति**-विनाश, **सरस**-नीरस, **परिश्रम**-विश्राम, **भक्ष्य**-अभक्ष्य, **सज्जन**-दुर्जन, **निरक्षर**-साक्षर, **संतुष्ट**-असंतुष्ट, **आज्ञा**-अवज्ञा, **वीर**-कायर **(घ) गुरु**– भारी, शिक्षक **अरुण**–सूर्य, लाल **पानी**–जल, इज्जत **मुद्रा**–मोहर, सिक्का **तीर**–बाण, नदी का किनारा **पक्ष**–पंख, बल **विधि**–ब्रह्मा, भाग्य **हरि**–विष्णु, सिंह **(ङ)** 1. **असफल**– जिसे फल न मिला हो, विफल **निष्फल**–व्यर्थ, निरर्थक 2. **प्रयत्न**– उपाय **प्रयास**–परिश्रम **(च)** 1. **क्रम**–सिलसिला **कर्म**–कार्य 2. **अपेक्षा**–इच्छा **उपेक्षा**– अनादर 3. **ऋत**–सत्य **ऋतु**–मौसम 4. **आली**–सखी **अलि**–भौंरा 5. **अंस**–कंधा **अंश**–भाग 6. **अमित**– अत्यधिक **अमीत**–शत्रु 7. **कुल**–सब, वंश **कूल**–किनारा 8. **ईर्ष्या**–जलन **द्वेष**–बैर **(छ)** 1. अजेय 2. अलौकिक 3. अज्ञेय 4. जलचर 5. निराधार 6. आत्मकथा 7. निरुत्तर 8. अंडज

7. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. जो वाक्यांश सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और शाब्दिक

से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाए, उसे मुहावरा कहते हैं। उदाहरण–'आवाज़ उठाना' का विलक्षण अर्थ है–विरोध में बोलना। 2. लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। **(ख)** 1. दुष्ट को बुरी संगति मिलना 2. विपरीत कार्य करना 3. जैसा काम वैसा परिणाम 4. उधार देना संकट मोल लेना है 5. एकजुट न होना 6. अच्छे व्यक्ति के लिए सभी अच्छे होते हैं 7. हृदयहीन के आगे दुखड़ा रोना व्यर्थ है 8. बेमेल कार्य करना **(ग)** 1. (र) 2. (म) 3. (श) 4. (अ) 5. (स) 6. (द) 7. (य) 8. (ल) 9. (व) 10. (ब) **(घ)** 1. **स्पष्ट निर्णय करना, वाक्य-प्रयोग**–बहुत दिनों से तरह-तरह के वायदे कर रहे हो। आज तो दूध-का-दूध, पानी-का-पानी करके ही जाना। 2. **विरोध में बोलना, वाक्य-प्रयोग**–सामाजिक कार्यकर्ता भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं, परंतु सरकार जैसे सुनती ही नहीं। 3. **जान की परवाह न करना, वाक्य-प्रयोग**–स्वतंत्रता सेनानी देश-हित के लिए अपनी जान पर खेल गए। 4. **बेशर्म होना, वाक्य-प्रयोग**–चपरासी ऐसा चिकना घड़ा है कि उस पर कहने-सुनने का कोई असर ही नहीं होता है। 5. **हार मानना, वाक्य-प्रयोग**–शत्रु को पीठ दिखाकर भागने की अपेक्षा वहीं मर जाना अच्छा है। 6. **डींग मारना, वाक्य-प्रयोग**–केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी आवश्यक है। 7. **काम में बाधा डालना, वाक्य-प्रयोग**–मोहन में यह बहुत बुरी आदत है कि वह सबके काम में टाँग अड़ाता है। 8. **प्रचार करना, वाक्य-प्रयोग**–लता से कोई बात मत कहना; क्योंकि वह ढिंढोरा पीट देगी। 9. **कुछ हानि न होना, वाक्य-प्रयोग**–विरोधियों ने सारे प्रयत्न कर लिए परंतु देवा का बाल भी बाँका न कर सके। 10. **व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना, वाक्य-प्रयोग**–बालकराम में खराब आदत है कि सबके काम में बाल की खाल निकालता रहता है। **(ङ)** 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (स) 7. (अ) 8. (स) 9. (ब) 10. (स)

8. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, अवस्था या भाव आदि के नाम को **संज्ञा** कहते हैं। संज्ञा के निम्नलिखित पाँच भेद हैं–(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा (4) समूहवाचक संज्ञा (5) द्रव्यवाचक संज्ञा 2. जो शब्द किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराए, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–राम, सीता, कृष्ण, अर्जुन, चेतक, रामायण, गीता, हरिद्वार, लालकिला, हिमालय, अयोध्या, गंगा, यमुना आदि। 3. जो शब्द किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध कराए, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, गाय, बैल, शेर, पहाड़, गाँव, नगर, प्रांत, पक्षी, पशु आदि। 4. जो शब्द किसी वस्तु, प्राणी या स्थान के गुण या दोष, अवस्था या भाव का बोध कराए, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–प्रेम, मित्रता, शत्रुता, बचपन, यौवन, बुढ़ापा, मिठास, खटास, क्रोध, पढ़ाई, सजावट आदि। 5. जिस शब्द से द्रव्य (पदार्थ) का बोध हो, उसे पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, गेहूँ, चावल, दूध आदि। 6. जिस शब्द से किसी समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सभा, सेना, कक्षा, समाज, जनता, मेला, दल, परिवार, काफ़िला, झुंड, गुच्छा आदि। **(ख)** 1. ताजमहल–व्यक्तिवाचक संज्ञा, आगरा–व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. भीड़–समूहवाचक संज्ञा 3. सोने–द्रव्यवाचक संज्ञा, अँगूठियाँ–जातिवाचक संज्ञा 4. महाराणा प्रताप–व्यक्तिवाचक संज्ञा, मेवाड़–व्यक्तिवाचक संज्ञा, राजा–जातिवाचक संज्ञा 5. घोड़े–जातिवाचक संज्ञा, चेतक–व्यक्तिवाचक संज्ञा 6. गाँव–जातिवाचक संज्ञा, हवा–द्रव्यवाचक संज्ञा 7. गन्ने–जातिवाचक संज्ञा, मिठास–भाववाचक संज्ञा **(ग) पटना**–व्यक्तिवाचक, **परिवार**–समूहवाचक, **तूफ़ान**–जातिवाचक, **सफलता**–भाववाचक, **राजधानी**

–जातिवाचक, **विनम्रता**–भाववाचक, **लखनऊ**–व्यक्तिवाचक **दूध**–द्रव्यवाचक **चाँदी**–द्रव्यवाचक, **सेना**–समूहवाचक, **कालिमा**–भाववाचक, **कक्षा**–समूहवाचक **(घ)** पंडित, पशु, मनुष्य, मित्र, शिशु, सेवक, मानव, ईश्वर, वकील, देव **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(च)** 1. चाल 2. सुंदरता 3. सफलता 4. विनम्रता 5. निर्धनता **(छ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) 6. (ब) 7. (ब) 8. (ब) **(ज)** अपनत्व, सर्वस्व, पितृत्व, देवत्व, मित्रता, मिठास, शत्रुता, भूख, चाल, कालिमा, ऊपरी, भ्रातृत्व

9. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। इसके दो भेद हैं–(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग 2. जो शब्द सदैव पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होते हैं, उन्हें नित्य पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–मंत्री, राजदूत, अध्यापक, ड्राइवर, मैनेजर, चपरासी, प्रधानमंत्री, खटमल, पक्षी, उल्लू, भेड़िया, तोता, कीड़ा, कौआ, पशु, मच्छर आदि। 3. जो शब्द सदैव स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं, उन्हें नित्य स्त्रीलिंग कहते हैं; नर्स, धाय, सती, संतान, सुहागिन, सवारी, बुलबुल, गिलहरी, भेड़, कोयल, मैना, लोमड़ी, मकड़ी, जूँ आदि। 4. लिंग-परिवर्तन के तीन नियम निम्नलिखित हैं–(1) अकारांत पुल्लिंग शब्दों को आकारांत कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं; जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुशील	सुशीला	छात्र	छात्रा	अज	अजा
शिष्य	शिष्या	अग्रज	अग्रजा	चंचल	चंचला

(2) अकारांत तथा आकारांत पुल्लिंग शब्दों को 'ईकारांत' कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं; जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पुत्र	पुत्री	मुरगा	मुरगी	गोप	गोपी
घोड़ा	घोड़ी	देव	देवी	नाला	नाली

(3) अकारांत पुल्लिंग शब्दों में 'नी' जोड़ देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं; जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
भील	भीलनी	नट	नटनी	ऊँट	ऊँटनी
मोर	मोरनी	राजपूत	राजपूतनी	जाट	जाटनी

(ख) **बैंगन**–पुल्लिंग, **पृथ्वी**–स्त्रीलिंग, **सब्ज़ी**–स्त्रीलिंग, **भूटान**–पुल्लिंग, **बादल**–पुल्लिंग, **नेपाल**–पुल्लिंग, **चालक**–पुल्लिंग, **हिमालय**–पुल्लिंग, **महल**–पुल्लिंग, **धाविका**–स्त्रीलिंग, **हिंदी**–स्त्रीलिंग, **फरवरी**–स्त्रीलिंग, **दासी**–स्त्रीलिंग, **सत्यवान**–पुल्लिंग, **नर्मदा**–स्त्रीलिंग **(ग)** दास, सम्राट, डिब्बा, नर्तक, मालिक, कर्ता, आत्मज, पंडित, अभिनेता, मेहतर, विद्वान, नायक **(घ)** कहारिन, नेत्री, जोगिन, लालाइन, दात्री, गोपी, सेठानी, जाटनी, वृद्धा, विदुषी, नाली, भवदीया **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** **त्व**–लघुत्व, गुरुत्व **ता**–सफलता, विनम्रता **पन**–बालकपन, कालापन **ई**–पुत्री, देवी **आव**–लगाव, चुनाव **इया**–लुटिया, बुढ़िया **आर**–सुनार, लुहार **आस**–प्यास, भड़ास **(छ)** 1. फ़िल्म की खलनायिका एक प्रसिद्ध अभिनेत्री है। 2. नौकर घर की सफ़ाई कर रहा था। 3. मालिन ने पौधे सींचे। 4. दरज़िन ने सम्राज्ञी के वस्त्र सिल दिए। 5. सेविका सेठानी जी के लिए जल लाई। 6. राजा को दासों ने घेर लिया। **(ज)** 1. पुल्लिंग 2. नर 3. पुल्लिंग 4. दात्री 5. स्त्रीलिंग **(झ)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

10. वचन

(क) 1. व्याकरण में वचन से अभिप्राय है–'संज्ञा या सर्वनाम की संख्या'। **परिभाषा**–शब्द

का वह रूप जिससे यह बोध हो कि वह एक प्राणी, वस्तु, पदार्थ या स्थान के लिए प्रयुक्त हुआ है अथवा एक से अधिक के लिए, वचन कहलाता है। 2. शब्द के जिस रूप से एक वस्तु, व्यक्ति, स्थान, प्राणी या पदार्थ का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–पुस्तक, बच्चा, लड़का, माता, कमरा, चारपाई, बकरा आदि। 3. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थानों, प्राणियों या पदार्थों का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–पुस्तकें, बच्चे, लड़के, माताएँ, कमरे, चारपाइयाँ, बकरे आदि। 4. वचन की पहचान दो प्रकार से की जाती है–**(1) संज्ञा या सर्वनाम शब्द के द्वारा–उदाहरण–**(1) **लड़का** बाज़ार गया। एक (एकवचन)। **लड़के** बाज़ार गए। एक से अधिक (बहुवचन)। (2) **मैं** गाँव पहुँच गया। एक (एकवचन)। **हम** गाँव पहुँच गए। एक से अधिक (बहुवचन) **(2) क्रिया के द्वारा–** कुछ शब्दों का एकवचन व बहुवचन में रूप समान होता है। ऐसे शब्दों में वचन की पहचान क्रिया पदों के द्वारा होती है। **उदाहरण–**(1) साधु **चला गया।** साधु **चले गए।** (2) राजा **सो गया।** राजा **सो गए।** 5. वचन संबंधी विशेष नियम निम्नलिखित हैं–(1) प्राण, होश, आँख, दर्शन, बाल, हस्ताक्षर आदि शब्दों का प्रयोग बहुवचन में ही किया जाता है। (2) कुछ शब्दों का प्रयोग सदैव एकवचन में ही होता है। ऐसे शब्द जनता, भीड़, घी, पानी, चाय, कॉफ़ी आदि हैं। (3) लोक-व्यवहार में कुछ शब्दों का बहुवचन रूप प्रयोग किया जाता है; जैसे–'तू' एकवचन के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग ही प्रायः किया जाता है। (4) कभी-कभी बड़प्पन दिखाने के लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग किया जाता है; जैसे-दादा जी ने कहा, ''**हम** आकर सब ठीक कर देंगे।'' यहाँ 'हम' का प्रयोग बड़प्पन दिखाने के लिए किया गया है। (5) जातिवाचक शब्द एकवचन में भी बहुवचन का बोध करते हैं; जैसे–**कुत्ता** स्वामिभक्त पशु है। (6) व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग प्रायः एकवचन में होता है; जैसे–**राम** अयोध्या के राजा थे। **ईमानदारी** सर्वोत्तम गुण है। **(ख) नारी**-एकवचन, **चिड़िया**-एकवचन, **अध्यापकगण**-बहुवचन, **मशीनें**-बहुवचन, **संतजन**-बहुवचन, **साड़ियाँ**-बहुवचन, **छात्रा**-एकवचन, **जूते**-बहुवचन, **झाड़ी**-एकवचन, **नदी**-एकवचन, **कमरे**-बहुवचन, **नारी**-एकवचन, **पक्षी**-एकवचन, **नेता**-एकवचन, **घी**-एकवचन **(ग)** लुएँ, प्रजाजन, लेखिकाएँ, विद्वज्जन, वस्तुएँ, लाठियाँ, चाबियाँ, छात्राएँ, गरीबलोग, रस्से, बातें, संतरे **(घ)** विधि, माला, कविता, मक्खी, विधि, आप, रीति, बूँद, चुहिया, संत, बहू, शाखा, धोती, लता, कला **(ङ)** 1. एकवचन 2. नारे 3. बहुवचन **(च)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ **(छ)** 1. **चिड़ियाँ** उड़ रही हैं। 2. **कली** खिल रही है। 3. **तितली** फूल पर मँडरा रही है। 4. **गिलास** भर गए। 5. **लताएँ** फैल रही हैं।

11. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। 2. सर्वनाम के प्रमुख छह भेद होते हैं–(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) प्रश्नवाचक सर्वनाम (5) संबंधवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम 3. बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसके उपभेद हैं (1) उत्तम पुरुष (2) मध्यम पुरुष (3) अन्य पुरुष 4. किसी निश्चित संज्ञा की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करने वाले शब्द को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–यह, ये, वह, वे। **उदाहरण–**(i) **यह** मेरा घर है। (ii) **वह** तुम्हारी घड़ी नहीं है। (iii) **वह** मेरा बाग है। (iv) **वे** सब खेल रहे हैं। (v) **ये** सब पढ़ रहे हैं। (vi) **यह** राजू है। 5. जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–कुछ, कोई, किसी आदि। **उदाहरण–**(i) उसने

अब तक कुछ नहीं खाया-पीया। (ii) ऐसा न हो कोई सुन ले। (iii) किसी ने उस गरीब की सहायता नहीं की। 6. स्वयं के लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–स्वयं, आप, खुद आदि। **उदाहरण–**(i) तुम स्वयं भोजन पका लेना। (ii) मैं खुद पढ़ लूँगा। (iii) वह आप ही गाँव चला गया। (iv) उसने अपने आप ही सारा काम कर लिया। 7. जो सर्वनाम वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनाम से संबंध बताए, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–जो-वो, जैसा-वैसा, जो-सो, जिसकी-उसकी आदि। **उदाहरण–**(i) जो मेहनत करेगा, वो सफल होगा। (ii) जैसा करोगे, वैसा भरोगे। (iii) जो सोएगा, सो खोएगा। (iv) जिसकी लाठी, उसकी भैंस। 8. जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न प्रकट होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–कौन, किसके, क्या आदि। **उदाहरण–**(i) वहाँ कौन खड़ा है? (ii) तुम किसके साथ गाँव गए थे? (iii) तुम्हारे पिताजी का क्या नाम है? 9. पुरुषवाचक 'आप' आदरसूचक है और इसका बहुवचन 'आप लोग' है। निजवाचक 'आप' दोनों वचनों में समान रूप लिए रहता है। **उदाहरण–पुरुषवाचक 'आप'–**(1) आप यहाँ बैठिए। (2) आप लोग कल आना। **निजवाचक 'आप'–**(1) आप भला तो जग भला, आप बुरा तो जग बुरा। (2) दर्शक आप ही उठें तो ठीक, उन्हें उठने के लिए न कहना। **(ख)** 1. बात कहने वाला अथवा कुछ लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–मैं, मुझे, हम, हमें आदि। **उदाहरण–**(i) मैं पढ़ रहा हूँ। (ii) मुझे सौ रुपए चाहिए। (iii) हम बाज़ार जा रहे हैं। (iv) हमें सुबह दिल्ली जाना है। 2. बोलने वाला जिससे बातें कर रहा हो या जो उसकी बात सुन रहा हो, उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम होते हैं; जैसे–तुम, आप, तू आदि। **उदाहरण–**(i) तुम पुस्तक पढ़ो। (ii) आप ठंडा लोगे या गरम? (iii) टिंकू! तू चार बजे आना। 3. बोलने वाला सुनने वाले से जिस अन्य व्यक्ति के विषय में बात करता है, उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे-वह, वे, उसे, उनका आदि। **उदाहरण–**(i) वह दो दिन से बीमार है। (ii) वे मेला देखने जाएँगे। (iii) उसे मैंने बुलाया था। (iv) उनका नाम रोहित है। **(ग)** 1. तू-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, कुछ-अनिश्चयवाचक सर्वनाम 2. कौन-प्रश्नवाचक सर्वनाम 3. वह-अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम 4. कोई-अनिश्चयवाचक सर्वनाम, मेरी-उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम 5. यह-निश्चयवाचक सर्वनाम 6. मैं-उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, तुम-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम 7. जो, वो-संबंधवाचक सर्वनाम 8. वे–अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, तुम्हारे-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम 9. कौन-प्रश्नवाचक सर्वनाम 10. मैं-अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, स्वयं-निजवाचक सर्वनाम। **(घ)** 1. मैं, हम 2. अपने 3. मध्यम 4. निश्चयवाचक 5. अन्य **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ 7. ✗ **(च)** 1. हम मैदान में खेलने जा रहे हैं। 2. यह क्यों हँस रहा है? 3. कृपया उसे भोजन खिलाइए। 4. इन्हें कुछ फल दे दो। 5. तुम गाँव जाकर क्या करोगे? **(छ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

12. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा शब्द या सर्वनाम से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। 2. (1) कर्ता कारक–ने (2) कर्म कारक–को (3) करण कारक–से, के द्वारा (4) संप्रदान कारक–को, के लिए (5) अपादान कारक–से (पृथकता) (6) संबंध कारक–का, के, की, रा, रे, री (7) अधिकरण कारक–में, पर (8) संबोधन कारक–हे, अरे, ओ 3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। **उदाहरण–**(i) **मीरा** ने गीत लिखा। (ii) **नेहा** ने पुस्तक पढ़ी। 4. वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया के व्यापार (चेष्टा) का

फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। **उदाहरण**–(i) कबूतर ने **शिकारी** को देख लिया था। (ii) अध्यापक ने **छात्र** को पढ़ाया। 5. जिस साधन की सहायता से कर्ता क्रिया करता है, वह करण कारक होता है। **उदाहरण**–(i) राहुल ने **छड़ी** से साँप मारा। (ii) नेहा **साइकिल** से स्कूल गई। (iii) पिता जी ने **तार** के द्वारा घर पर समाचार भेजा था। 6. कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है या जिसे कुछ देता है, वह संप्रदान कारक होता है। **उदाहरण**–(i) राजीव **नौकरी** के लिए तैयारी कर रहा है। (ii) **बच्चे** को दूध दो। **(ख)** 1. को 2. ने, को 3. में 4. पर 5. को 6. के लिए 7. से 8. से 9. पर 10. ने, से **(ग)** 1. दोनों कारकों में 'को' विभक्ति-चिह्न का प्रयोग होता है। कर्म कारक में क्रिया के प्रभाव का भाव होता है जबकि संप्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है, जैसे–● राहुल ने **विजय** को बुलाया। (कर्म कारक) ● राहुल ने **विजय** को पुस्तक दी। (संप्रदान कारक) 2. करण कारक तथा अपादान कारक, दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है; परंतु करण कारक में यह 'द्वारा' (साधन) के अर्थ में प्रयोग किया जाता है तथा अपादान कारक में 'से' (अलग होने) के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। **उदाहरण**–● मंत्री जी **कार से** घटनास्थल पहुँचे। (करण कारक) ● बच्चा **स्टूल से** गिर गया। (अपादान कारक) **(घ)** (1) हमने पाठ याद कर लिया है। (2) रोगी के लिए दवा लाओ। (3) चारपाई छत पर है। (4) माली बाग में है। (5) तू चारपाई पर बैठ। (6) दादी कहानी सुनाती हैं। (7) मैं पत्र पढ़ूँगा। (8) सड़क पर मत खेलो। **(ङ)** 1. संबोधन कारक 2. संबोधन कारक 3. अधिकरण कारक 4. कर्ता कारक 5. अपादान कारक 6. अधिकरण कारक 7. संबंधकारक 8. कर्म कारक 9. करण कारक 10. संप्रदान कारक **(च)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

13. विशेषण

(क) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं। **उदाहरण** –(1) मीरा ने **लाल** कोट पहना है। (2) **पचास** आदमी सभा में देर से आए। (3) आम **मीठे** हैं। (4) **कुछ** लोग नारे लगाने लगे। 2. विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है; उसे **विशेष्य** कहते हैं। **उदाहरण**–

शब्द-समूह	**विशेषण**	**विशेष्य**	**शब्द-समूह**	**विशेषण**	**विशेष्य**
एक दर्जन केले	एक दर्जन	केले	भला आदमी	भला	आदमी
काला कौआ	काला	कौआ	सच्चा बालक	सच्चा	बालक

3. जो शब्द विशेषण की विशेषता बताता है, उसे प्रविशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–'चोर **बड़ा** चालाक निकला।' 4. विशेषणों के निम्नलिखित पाँच भेद हैं–(1) गुणवाचक विशेषण (2) संख्यावाचक विशेषण (3) परिमाणवाचक विशेषण (4) सार्वनामिक विशेषण (5) व्यक्ति वाचक विशेषण। **(1) गुणवाचक विशेषण**–जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष, रंग, दशा, आकार, स्थान, दिशा, काल आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं; **उदाहरण**–(i) नौकर **ईमानदार** है। (गुण) (ii) चित्र **सुंदर** है। (गुण) (iii) **दुष्ट** आदमी पकड़ा गया। (दोष) (iv) पृथ्वी **गोल** है। (आकार) (v) बगीचे में **लाल** गुलाब लगे हैं। (रंग) (vi) मकान की **दक्षिणी** दीवार देखो। (दिशा) 5. जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या प्रकट होती है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–(i) अजय के पास **तीन** सेब हैं। (ii) नेहा के पास **कुछ** केले हैं। 6. जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले प्रयोग होकर विशेषण का कार्य करता है; उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–(i) **यह** लड़का कब आया? (ii) **इस** मेज़ को बाहर लाओ। (iii) **उस** आदमी को कुरसी पर बैठाओ। (iv) **वे** लोग कहाँ जा रहे हैं? 7. जिस शब्द से किसी वस्तु के परिमाण या नाप-तौल का पता चलता है,

उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–थोड़ा, तीन मीटर, पाँच लीटर, थोड़े आदि। **(ख)** 1. कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण होते हैं। ऐसे शब्द मूल विशेषण कहलाते हैं; जैसे–अच्छा, बुरा, छोटा, बड़ा, लाल, पीला, ऊँचा, नीचा आदि। 2. कुछ विशेषण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया व अव्यय शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर बनाए जाते हैं। ये शब्द यौगिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–खर्च से खर्चीला, पक्ष से पाक्षिक, गुण से गुणी, चाचा से चचेरा आदि। **(ग)** 1. परिमाणवाचक 2. निश्चित 3. प्रविशेषण 4. परिमाणवाचक 5. क्रोधी **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. अत्यधिक 2. अत्यंत 3. बिलकुल 4. एकदम 5. बहुत **(च) विशेषण**–1. चौथी 2. ईमानदार 3. तीसरे 4. दो मीटर 5. गरम 6. यह 7. तीन 8. पाँचवीं 9. चिकने 10. दो किलो **विशेष्य**–1. कक्षा 2. व्यक्ति 3. लड़के 4. कपड़ा 5. दूध 6. लड़का 7. कोट 8. मंज़िल 9. फ़र्श 10. चीनी **(छ) उत्तरावस्था**–अधिक अच्छा, श्रेष्ठतर, कोमलतर, कठोरतर, निकटतर, सुंदरतर, तीव्रतर, अधिक लंबा, योग्यतर, विशालतर **उत्तमावस्था**–सबसे अधिक अच्छा, श्रेष्ठतम, कोमलतम, कठोरतम, निकटतम, सुंदरतम, तीव्रतम, सबसे अधिक लंबा, योग्यतम, विशालतम **(ज)** गुणवान, आलसी, मासिक, क्रोधी, दर्शनीय, सामाजिक, रूपवान, रोगी, पथरीला, धनी, पौराणिक, योगी

14. क्रिया, वाच्य एवं काल

(क) 1. किसी कार्य, घटना या अस्तित्व का बोध कराने वाले शब्द को क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–(1) मीरा **गाती है।** ➡ कार्य का होना (2) आँधी में वृक्ष **गिर गया।** ➡ घटना का होना। (3) पुस्तक मेज़ पर **है।** ➡ अस्तित्व का होना 2. क्रिया की अनुपस्थिति में वाक्य की रचना नहीं की जा सकती। इस प्रकार वाक्य-रचना में क्रिया का बहुत महत्व है। जैसे-वह खाना। वाक्य से कुछ स्पष्ट नहीं होता परंतु इसमें 'खाता है' क्रिया जोड़ने पर वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है। 3. जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं। क्रिया के विविध रूप किसी-न-किसी धातु से ही बने होते हैं। उदाहरण–**क्रिया**–पढ़ना, लिखना, उठना, जागना, सोना **धातु रूप**–पढ़, लिख, उठ, जाग, सो 4. 'ना' युक्त धातु का उसी रूप में भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे क्रिया रूप को संज्ञार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–(1) इसे **गाना** नहीं आता। (2) उसे **बजाना** नहीं आता। वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग होने पर वह सामान्य क्रिया कहलाती है; जैसे-कुत्ता **भौंका**। बच्चा **मुसकराया।** रचित **चला**। 5. जिस क्रिया का एक ही कर्म होता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–मामा ने **चाय** बनाई। (कर्म = चाय)। जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–किसान बीज को खेत पर ले गया। (कर्म = बीज, खेत)। 6. वाक्य में जिस क्रिया के साथ कर्म रहता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया कर्ता के द्वारा ही की जाती है। परंतु उसके कार्य का फल कर्म पर पड़ता है। **उदाहरण**–(i) नौकर **वस्त्र** धोता है। (ii) राहुल **पत्र** लिखता है। जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा क्रिया का फल उसके कर्ता पर पड़ता है, ऐसी क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। **उदाहरण**–(i) **लड़का** हँसा। (ii) **बच्चा** सो गया। 7. जो क्रिया वाक्य का अर्थ पूर्णत: स्पष्ट नहीं कर पाती, वह अपूर्ण क्रिया कहलाती है। सहायक क्रिया उसे कहते हैं जो क्रिया शब्दों में मुख्य अर्थ न देकर उसकी सहायक हो। 8. जहाँ वाक्य में प्रयुक्त एक से अधिक धातुओं से बने क्रियापद हों, वे संयुक्त क्रिया कहलाते हैं; जैसे– ● बच्चा **हँसने लगा**। ● लड़के स्कूल **चले गए।** जिस क्रिया से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उस कार्य को करने की प्रेरणा देता है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है; जैसे–(1) हमने चित्रकार से चित्र **बनवाया।** (2) रोहित ने नौकर से फल **मँगवाए।** 9. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में किए गए कार्य का प्रमुख

विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन भेद हैं–(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य। 10. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका प्रयोग कर्म के अनुसार किया गया है अर्थात् क्रिया के लिंग व वचन कर्म के अनुसार हैं और कर्ता की प्रधानता नहीं है, तो उसे कर्मवाच्य कहते हैं; जैसे–(1) माला के द्वारा गीत गाया जा रहा है। (2) बैलों द्वारा गाड़ी खींची जा रही है। कर्तृवाच्य में क्रिया का संबंध कर्ता से होता है। इसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं; जैसे–(1) मोहन पढ़ रहा है। (2) माली फूल तोड़ेगा। (3) सारस उड़ रहे हैं। 11. भविष्यत्काल के दो भेद हैं–(1) **सामान्य भविष्यत्**–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में उसका सामान्य रूप से होना पाया जाता है, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं। **उदाहरण**–(i) किसान खेत जोतेगा। (ii) दादा जी मंदिर जाएँगे। (iii) श्वेता चित्र में रंग भरेगी। (2) **संभाव्य भविष्यत्**–जब आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई जाती है, तब संभाव्य भविष्यत् होता है। **उदाहरण**–(i) शायद आज धूप खिले। (ii) संभवत: वह कल फिर आए। **(ख)** 1. कर्तृवाच्य में क्रिया का संबंध कर्ता से होता है। इसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं। 2. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका प्रयोग कर्म के अनुसार किया गया है अर्थात् क्रिया के लिंग व वचन कर्म के अनुसार हैं और कर्ता की प्रधानता नहीं है, तो उसे कर्मवाच्य कहते हैं। 3. ऐसे वाक्यों में भाव की प्रधानता होती है। इनमें क्रिया न तो कर्ता के अनुसार होती है, न कर्म के अनुसार, अपितु एकवचन, पुल्लिंग और अन्य पुरुष में रहती है। भाववाच्य अकर्मक क्रियाओं में होता है। **(ग)** 1. सामान्य 2. कर्मवाच्य 3. धातु 4. वाच्य 5. सामान्य **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(ङ)** 1. (ब) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब) **(च)** 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य 4. कर्मवाच्य 5. भाववाच्य **(छ)** 1. आसन्न भूत 2. संभाव्य भविष्यत् 3. सामान्य वर्तमान 4. हेतुहेतुमद् भूत 5. संदिग्ध वर्तमान 6. अपूर्ण वर्तमान 7. सामान्य भूत **(ज)** 1. उसने प्रदर्शनी देखी। 2. शायद मेहमान आएँ। 3. नेहा मंदिर जा रही थी। 4. राजू भोजन करेगा। 5. विद्यार्थी परीक्षा देते हैं। 6. बच्चे पेड़ पर झूल रहे थे। 7. मेरा भाई सदा सत्य बोलता था। **(झ)** 1. पढ़ोगे 2. हँसता है 3. पकाया 4. बुलाया 5. स्नान किया 6. खेल रहा है। **(ञ)** 1. अकर्मक 2. सकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. अकर्मक 6. सकर्मक 7. सकर्मक 8. सकर्मक 9. अकर्मक 10. अकर्मक **(ट)** 1. उठकर 2. करके 3. देकर **(ठ)** 1. गौरव–गौण कर्म, स्वेटर–मुख्य कर्म 2. मुझे–गौण कर्म, पेन–मुख्य कर्म 3. नेहा–गौण कर्म, चित्र–मुख्य कर्म **(ड)** लजाना, शर्माना, झुठलाना **(ढ)** 1. सामान्य भविष्यत् में आने वाले समय में क्रिया का सामान्य रूप से होना पाया जाता है; जैसे–(i) किसान खेत जोतेगा। (ii) दादा जी मंदिर जाएँगे। (iii) श्वेता चित्र में रंग भरेगी। जबकि संभाव्य भविष्यत् में आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई जाती है, जैसे–(i) शायद आज धूप खिले। (ii) संभवत: वह कल फिर आए। 2. आसन्न भूत में क्रिया के रूप से यह ज्ञात होता है कि क्रिया कुछ देर पहले समाप्त हुई है; जैसे–(i) बच्चे ने फल तोड़ लिया है। (ii) मैंने काम कर लिया है। जबकि पूर्ण भूत में क्रिया के रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य भूतकाल में पूरा हो गया था; जैसे–(i) वर्षा रुक गई थी। (ii) राहुल भोजन कर चुका था।

15. अविकारी शब्द

(क) 1. ऐसा शब्द जिसके रूप में परिवर्तन न हो अथवा विकार न आए, उसे अविकारी शब्द कहते हैं। 2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण के कार्य हैं–(1) क्रिया के संपादित होने का समय बताना। (2) क्रिया के होने

की रीति बताना। (3) क्रिया का परिमाण बताना। (4) क्रिया के होने का स्थान बताना। 3. क्रियाविशेषण के निम्नलिखित चार प्रमुख भेद हैं–(क) कालवाचक क्रियाविशेषण (ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण **(क) कालवाचक क्रियाविशेषण**–क्रिया के होने का समय बताने वाले शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **उदाहरण**–(1) वह **आज** दिल्ली जा रहा है। (2) मैं **प्रतिदिन** प्रवचन सुनता हूँ। (3) पंडित जी **कल** आएँगे। (4) तुम **अब** चुप रहो। **(ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण**–जो शब्द क्रिया के होने का स्थान बताता है, वह स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाता है। **उदाहरण**–(1) कुछ लोग **इधर-उधर** घूम रहे हैं। (2) दादा जी **अंदर** चले गए। (3) तुम **बाहर** बैठो। 4. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध अन्य शब्दों से प्रकट करता है, उसे संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। चार प्रकार के संबंधबोधकों का उल्लेख निम्नलिखित हैं–(1) **स्थानसूचक**–के निकट, के आगे, के सामने, के पास, के पीछे, के नीचे, के ऊपर आदि। (2) **दिशासूचक**–की ओर, के पार, की तरफ़ आदि। (3) **कारणसूचक**–की वजह, के कारण, के लिए आदि। (4) **तुलनासूचक**–की अपेक्षा, के आगे आदि। 5. दो शब्दों, वाक्यों अथवा उपवाक्यों को जोड़ने वाले अविकारी शब्द को समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। **समानाधिकरण समुच्चय बोधक**–जो समुच्चयबोधक समान स्थिति वाले अर्थात् स्वतंत्र पदों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को समानता के आधार पर एक-दूसरे से जोड़ता है; उसे समानाधिकरण समुच्चयबोधक के नाम से जाना जाता है। **उदाहरण**–(1) मानव **और** विजय भाई थे। (2) मैं **और** तुम तीर्थ यात्रा हेतु साथ चलेंगे। 6. वाक्य में प्रयुक्त जिस शब्द के द्वारा हर्ष, घृणा, शोक, आश्चर्य अथवा विस्मय आदि के भाव प्रकट होते हैं, उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **अहा!** कितना सुंदर दृश्य है। (2) **वाह!** कितनी अच्छी बात कही है। (3) **अति सुंदर!** तुमने तो कमाल कर दिया। (4) **बाप रे!** यह तो साधु के भेष में चोर निकला। **(ख)** 1. रातभर–कालवाचक क्रियाविशेषण 2. एकाएक-रीतिवाचक क्रियाविशेषण 3. जिधर, उधर-स्थानवाचक क्रिया विशेषण 4. यहाँ-वहाँ-स्थानवाचक क्रियाविशेषण 5. थोड़ा-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण 6. दो दिन-कालवाचक क्रियाविशेषण **(ग)** 1. के पीछे 2. से पूर्व 3. से पहले 4. के ऊपर 5. से पहले **(घ)** 1. ताकि 2. परंतु 3. इसलिए 4. क्योंकि 5. तो **(ङ)** 1. सभी जानते हैं कि पृथ्वी गोल है। 2. वह विकलाँग है परंतु वह साहसी है। 3. राजन परिश्रम करता है क्योंकि वह परीक्षा में सफल होना चाहता है। **(च)** 1. धत् 2. बाप रे! 3. अरे 4. शाबाश 5. छि: 6. बाप रे 7. अहा 8. हाय

16. वाक्य-विचार

(क) 1. सार्थक शब्दों का ऐसा समूह जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, उसे वाक्य कहते हैं। **उदाहरण**–(1) गंगा हिमालय से निकलती है। (2) सत्य ही ईश्वर है। 2. जिस प्राणी, वस्तु या स्थान के विषय में वाक्य में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। **उदाहरण**–"पक्षी उड़ रहे हैं' वाक्य में 'पक्षी' उद्देश्य है तथा 'उड़ रहे हैं' विधेय है। 3. अर्थ के आधार पर वाक्यों के निम्नलिखित भेद होते हैं–(1)विधानवाचक वाक्य (2) निषेधवाचक वाक्य (3) प्रश्नवाचक वाक्य (4) विस्मयवाचक वाक्य (5) आज्ञावाचक वाक्य (6) संदेहवाचक वाक्य (7) इच्छावाचक वाक्य (8) संकेतवाचक वाक्य 4. रचना के आधार पर वाक्यों के निम्नलिखित तीन भेद हैं–(1) सरल या साधारण वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य **(ख)** 1. जिस वाक्य में केवल एक क्रिया होती है, उसे सरल वाक्य कहते हैं; जैसे–(i) विद्यार्थी मैदान में

खेल रहे थे। (ii) मैंने निबंध लिखा। 2. जिस वाक्य में दो अथवा दो से अधिक सरल वाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जोड़े गए हों, वह संयुक्त वाक्य कहलाता है; जैसे–(i) वह हरिद्वार गया लेकिन वह गंगाजल नहीं लाया। (दो सरल वाक्य) 3. जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं; जैसे–मालूम होता है कि आज वर्षा होगी। **प्रधान उपवाक्य**–मालूम होता है। **आश्रित उपवाक्य**–कि आज वर्षा होगी। मिश्र वाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं। **(ग)** 1. प्रश्नवाचक 2. निषेधवाचक 3. विधानवाचक 4. आज्ञावाचक 5. संदेहवाचक 6. संकेतवाचक 7. विस्मयवाचक 8. आज्ञावाचक 9. संदेहवाचक 10. प्रश्नवाचक 11. इच्छावाचक **(घ) उद्देश्य**–1. पुस्तकें 2. हम 3. तोते 4. संतोषी 5. आप **विधेय**–1. मेज़ पर हैं। 2. बाज़ार जाएँगे। 3. फल खाया। 4. सदा सुखी रहता है। 5. यहाँ आइए। **(ङ)** 1. भूखा रहना किसी को पसंद नहीं है। 2. क्या गाय ने दूध नहीं दिया? 3. क्या अजय आज गाँव जाएगा? 4. मेरे आँगन में नीम का पेड़ नहीं है। 5. क्या विजय नित्य व्यायाम करता है? 6. हमारी बकरी काली है। 7. घर में मेहमान नहीं आए हैं। 8. अरे! तुम कब आए? 9. मैं कल क्यों नहीं आ सकूँगा? 10. वाह! क्या बात कही है।

17. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. व्याकरण में भिन्न-भिन्न प्रकार से रुकने अथवा ठहरने को कुछ चिह्नों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। उन चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं। विराम-चिह्नों का प्रयोग कथन के स्पष्टीकरण, शैली को गतिशील और विचारों को सुबोध बनाने के लिए किया जाता है। 2. विराम-चिह्नों के कारण ही जटिल वाक्य अपना अर्थ स्पष्ट कर पाते हैं। यदि इनके प्रयोग में गलती हो जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है और कथन के अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं। **(ख)** 1. इसका प्रयोग वाक्य के बीच में थोड़ा रुकने के लिए होता है। जैसे–(i) अजय, राजेश, मनु और रोहित क्रिकेट टीम में हैं। (ii) स्वस्थ, ईमानदार और परिश्रमी व्यक्ति का संग सभी को प्रिय होता है। 2. योजक चिह्न का प्रयोग प्रमुख रूप से शब्दों के युग्म के बीच में होता है; जैसे–कल- कल, पल-पल, जैसे-जैसे, तीन-तीन बार आदि। 'और' अथवा 'या' के अर्थ में होता है; जैसे–माता-पिता, शत्रु-मित्र, सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि। तुलनावाचक 'सा, से, सी' से पहले होता है; जैसे-ज़रा-सा, थोड़ा-सा, थोड़े-से, थोड़ी-सी आदि। सार्थक-निरर्थक शब्दों के बीच में होता है; जैसे-पेन-वेन, थाली- वाली, चाय-वाय, पानी-वानी आदि। 3. जहाँ कुछ लिखने से छूट जाता है, वहाँ त्रुटिपूरक चिह्न का प्रयोग किया जाता है;

जैसे–पाप से करो, पापी से नहीं।

4. किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे शून्य (०) या बिंदु (.) लगा देते हैं; जैसे–पंडित = पं० (पं.), डॉक्टर = डॉ० (डॉ.), प्रोफेसर = प्रो० (प्रो.)। 5. अपनी बात को स्पष्ट करने या उदाहरण देने के लिए निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–'लिंग' के दो भेद हैं–(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–नाटकों के संवादों में भी निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे–**राजा**–मंत्री, कहो, प्रजा किस हाल में है? **मंत्री**–प्रजा सुखी है राजन्! सभी प्रजाजन अपने महाराज की दीर्घ आयु की कामना करते हैं। किसी कथन को उद्धृत करने में भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है–नेता जी ने कहा था–"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।" उद्धरण के अंत में लेखक के नाम से पूर्व भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–"स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"–लोकमान्य तिलक 6. जब किसी पद या वाक्यांश के अर्थ को उसी वाक्य के भीतर स्पष्ट करने की आवश्यकता समझी जाती है, तब कोष्ठक का प्रयोग किया जाता

है; जैसे–कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद (अकर्मक व सकर्मक) होते हैं। क्रमसूचक अंकों अथवा अक्षरों के साथ भी कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है; जैसे–(i), (ii), (iii), (क), (ख), (ग) आदि। **(ग)** 1. जो करेगा, सो भरेगा। क्यों चिंता करते हो? 2. वह आया; कुछ प्रश्न पूछे; चेतावनी दी और चला गया। 3. रेलवे स्टेशन पर खड़ा व्यक्ति सबको रोककर बोला, ''इधर से नहीं, उधर से जाओ।'' 4. अरे अजय! कब आए? आने से पहले फ़ोन ही कर लेते। 5. राजा–मंत्री, राज्य में घोषणा करवा दो कि कल प्रमुख मार्गों से शाही सवारी निकलेगी। मंत्री–महाराज की जय हो, प्रजा में इस समाचार से अत्यंत प्रसन्नता है। 6. आइए, मैं आपको बताता हूँ कि सही बात क्या है और सही व्यवहार क्या है? 7. तुम क्या चाहते हो मुझे नहीं पता, पर सबके साथ समान स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए। 8. अध्यापक, ''दिन और रात किस प्रकार होते हैं?'' छात्र, ''पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने के कारण दिन-रात होते हैं।''

हिंदी व्याकरण–7

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. जिस साधन के द्वारा हम बोलकर अथवा लिखकर अपने विचार प्रकट करते हैं, उसे भाषा कहते हैं। 2. भाषा के दो रूप हैं–(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा (1) **मौखिक भाषा**–मुख से बोलकर जो विचार प्रकट किए जाते हैं, वह भाषा का बोलचाल का रूप होता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। बातचीत, भाषण, वाद-विवाद, किसी घटना का वर्णन या कहानी सुनाना भाषा के इसी रूप के उदाहरण हैं। (2) **लिखित भाषा**–विचारों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो यह भाषा का लिखित रूप बन जाता है। इसे ही लिखित भाषा कहते हैं। पत्र, लेख, पुस्तक, कहानी, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ आदि भाषा के इसी रूप के उदाहरण हैं। 3. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। **भाषा तथा बोली में मुख्य रूप से निम्नलिखित अंतर पाए जाते हैं**–(i) बोली किसी एक ही भाषा का अंग होती है। (ii) भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है, जबकि बोली सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। (iii) भाषा का संबंध व्याकरण से होता है, जबकि बोली व्याकरण सम्मत नहीं होती है। (iv) बोली का प्रयोग बोलचाल में होता है, जबकि साहित्य की रचना भाषा में होती है। 4. भाषा को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं। कुछ भाषाओं और उनकी लिपियों के नाम निम्नलिखित हैं– ● हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली भाषा की लिपि–**देवनागरी** ● पंजाबी भाषा की लिपि–**गुरुमुखी** ● उर्दू, अरबी भाषा की लिपि–**फ़ारसी** ● अंग्रेज़ी भाषा की लिपि–**रोमन** 5. किसी भाषा के प्रयोग की नियमावली को व्याकरण कहते हैं। **भाषा और व्याकरण में संबंध**–भाषा और व्याकरण में घनिष्ठ संबंध है। भाषा पहले बनती है तथा उसका व्याकरण बाद में रचा जाता है। व्याकरण भाषा को निश्चित सीमा से बाँधता है। समय के साथ-साथ भाषा में अनेक परिवर्तन होते हैं और नए शब्द जुड़ते है। व्याकरण सबकी समीक्षा करता है और उसके लिए नियम बनाता है। अत: हम कह सकते हैं कि व्याकरण अपने नियमों द्वारा भाषा की अशुद्धता दूर कर उसे नया और सँवरा हुआ रूप प्रदान करता है। 6. व्याकरण के चार अंग हैं–(1) वर्ण-विचार, (2) शब्द-विचार, (3) पद-विचार, (4) वाक्य-विचार (1) **वर्ण- विचार के कार्य**–यह वर्णों के आकार, उच्चारण, वर्गीकरण तथा उनके मेल से शब्द बनाने के नियमों आदि का उल्लेख करता है। (2) **शब्द-विचार के कार्य**–यह शब्दों के भेद, व्युत्पत्ति और रचना आदि के नियमों का वर्णन करता है। (3) **पद-विचार के कार्य**–यह पद-भेद, रूपांतर और शब्द-रूपों के प्रयोग संबंधी नियमों का अध्ययन कराता है। (4) **वाक्य-विचार के कार्य**–यह वाक्य-भेद, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-रचना तथा विराम- चिह्नों के प्रयोग आदि का उल्लेख करता है। **(ख)** 1. मौखिक 2. व्याकरण 3. देवनागरी 4. सीमित, व्यापक 5.

बोलना **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ **(घ)** 1. बालक अपने परिवार अथवा माता से जो भाषा सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं। 2. किसी प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा प्रादेशिक भाषा कहलाती है। 3. जब कोई भाषा किसी राष्ट्र के अधिकांश भू-भाग पर बोली व समझी जाती है, तो उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। 4. जब कोई भाषा विश्व के अनेक राष्ट्रों द्वारा बोली जाती है, तो उसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहते हैं। **(ङ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. लिखित भाषा की उस छोटी-से-छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके खंड न किए जा सकें। इसके प्रमुख भेद हैं–(1) स्वर (2) व्यंजन। 2. जिस वर्ण का उच्चारण दूसरे वर्ण (ध्वनि) की सहायता के बिना होता है, वह वर्ण **स्वर** कहलाता है। उच्चारण की दृष्टि से स्वरों के तीन भेद होते हैं–(1) ह्रस्व स्वर (2) दीर्घ स्वर (3) प्लुत स्वर। 3. बनावट के अनुसार स्वरों के दो भेद होते हैं–(1) मूल स्वर (2) संधि स्वर (1) **मूल स्वर**–जिन स्वरों का निर्माण किसी योग से न हुआ हो, वे मूल स्वर कहलाते हैं। ये चार हैं–अ, इ, उ, ऋ; परंतु 'ऋ' को अब मूल स्वर नहीं माना जाता, क्योंकि इसका उच्चारण रि (र् + इ) के योग से होता है। (2) **संधि स्वर**–जिन स्वरों का निर्माण मूल स्वरों के योग से होता है, वे संधि स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में सात हैं–अ + अ = आ, इ + इ = ई, उ + उ = ऊ, अ + इ = ए, अ + ए = ऐ, अ + उ = ओ, अ + ओ = औ 4. जब कोई स्वर व्यंजन से पहले प्रयुक्त होता है, तो उसका रूप अपरिवर्तनीय रहता है परंतु व्यंजन के बाद आने वाले स्वर का रूप बदल जाता है। इस बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं। 5. जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है, ऐसे प्रत्येक व्यंजन को **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं। 'क' से 'म' तक सभी व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं। 6. स्वर के बाद में उच्चारित ध्वनि अनुस्वार कहलाती है। अनुस्वार का उच्चारण करते समय हवा केवल नाक से बाहर निकलती है। जबकि अनुनासिक का उच्चारण करते समय हवा नाक और मुख दोनों से बाहर निकलती है। **(ख)** 1. ह्रस्व 2. अंत:स्थ 3. प्लुत 4. दो **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ **(घ) चरण–** च् + अ + र् + अ + ण् + अ **मिठाई–** म् + इ + ठ् + आ + ई **लीला–** ल् + ई + ल् + आ **पल्लवी–** प् + अ + ल् + ल् + अ + व् + ई **(ङ) संयुक्त व्यंजन**–क्षण, मिश्रण, ज्ञान, मित्र **द्वित्व व्यंजन**–सच्चा, चक्कर, पल्लवी, छप्पर **(च) मुँह**–अनुनासिक **पाँच–** अनुनासिक **चंदन**–अनुस्वार **दाएँ**–अनुनासिक **रंग**–अनुस्वार **दाँत**–अनुनासिक **कंस**–अनुस्वार **हंस**–अनुस्वार **पंख**–अनुस्वार **जाँच**–अनुनासिक **हँस**–अनुनासिक **ठंडा–** अनुस्वार।

3. शब्द-विचार

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं; जैसे–जय, विजय, रस, सरस एवं कमल आदि। 2. साधारणतया: शब्द को ही पद कहते हैं; जैसे–शरद, रजत, सड़क, पुरुष, बिल्ली आदि। परंतु जब शब्द का प्रयोग वाक्य में होता है, तो यह स्वतंत्र नहीं रहता, बल्कि नियमों (कारक, वचन, लिंग आदि) में बँध जाता है और उसका रूप भी बदल जाता है, तब यह स्वतंत्र शब्द पद कहलाता है; जैसे–**छात्र** (छात्र = शब्द), **छात्र पढ़ते हैं।** (छात्र = पद) (इस वाक्य में तीन पद हैं।) 3. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है–(1) एकार्थी, (2) अनेकार्थी, (3) समानार्थी या पर्यायवाची, (4) विलोमार्थी या विलोम शब्द 4. रूढ़ शब्द परंपरा से किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, जैसे–घोड़ा, लोटा, पानी, हाथी, कमल, कली एवं पगड़ी आदि। ये शब्द किन्हीं शब्दों के योग से नहीं बनते, इसलिए इनके खंड भी नहीं किए जा सकते। जबकि योगरूढ़ शब्द रूढ़ शब्द में किसी शब्द के योग से बनते हैं। इस प्रकार, योगरूढ़ ऐसे यौगिक शब्द हैं जिनका प्रयोग परंपरा से किसी विशेष अर्थ में किया जाता है, जैसे–गजानन।

गजानन = गज + आनन। इसका सामान्य अर्थ है, जिसका मुख 'गज' अर्थात् हाथी के मुख के समान है। परंपरा से गजानन शब्द 'गणेश' के लिए प्रयोग में लाया जाता है। 5. उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर शब्द पाँच प्रकार के होते हैं– (1) तत्सम शब्द (2) तद्भव शब्द (3) देशज शब्द (4) विदेशी शब्द (5) मिश्रित शब्द 6. जिन शब्दों का पहला आधा भाग एक भाषा से तथा दूसरा आधा भाग दूसरी भाषा से बना हो, उन्हें मिश्रित शब्द या संकर शब्द कहा जाता है; जैसे–लाठीचार्ज = लाठी (हिंदी) + चार्ज (अंग्रेज़ी), रेलगाड़ी = रेल (अंग्रेज़ी) + गाड़ी (हिंदी) टिकटघर = टिकट (अंग्रेज़ी) + घर (हिंदी), घड़ीसाज़ = घड़ी (हिंदी) + साज़ (अरबी) आदि। 7. जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण बदल जाता है (अर्थात् जिनके रूप में विकार या परिवर्तन आ जाता है), वे विकारी शब्द कहलाते हैं। हिंदी में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी शब्द माने जाते हैं। **उदाहरण–**(1) बड़ा **लड़का** दौड़ेगा। बड़े **लड़के** दौड़ेंगे। (2) **मेरा** भाई पढ़ेगा। **मेरी** बहन पढ़ेगी। जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि किसी भी कारण से विकार या परिवर्तन नहीं आता है, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। हिंदी में क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द माने जाते हैं। **उदाहरण–**लड़का **तेज़** चलता है। लड़के **तेज़** चलते हैं। लड़की **तेज़** चलती है। हवा **तेज़** चली। बच्चे **तेज़** दौड़े। हम **तेज़** चले। **(ख)** 1. तत्सम 2. यौगिक 3. योगरूढ़ 4. रूढ़ 5. संकर **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** **अरबी**–वारिस, फ़कीर, मुसाफिर, किताब **फ़ारसी**–बीमार, गवाह, दवा, दिल **पुर्तगाली**–तौलिया, बालटी, फीता, कमीज़ **तुर्की**–चाकू, बारूद, बेगम, तोप **अंग्रेज़ी**–पेन, कार, ट्रक, गैस **(ङ) घी**–घृत **सूरज**–सूर्य **मोर**–मयूर **बहन**–भगिनी **कोयल**–कोकिल **मछली**–मीन **कुँआ**–कूप **नाक**–नासिका **चमड़ा**–चर्म **केला**–कदली **(च) गुहा**–गुफा **उच्च**–ऊँचा **हस्त**–हाथ **कर्ण**–कान **गृह**–घर **संध्या**–साँझ **वार्ता**–बात **पिपासा**–प्यास **क्षीर**–खीर **आम्र**–आम **(छ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (स)

4. उपसर्ग और प्रत्यय

(क) 1. जो शब्दांश मूल शब्द से पूर्व जुड़कर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करता है, उसे उपसर्ग कहते हैं। **उदाहरण–**'संग' में 'कु' जोड़कर बना शब्द कुसंग है। यहाँ 'कु' उपसर्ग जुड़ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो गया है। 2. जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं। **उदाहरण–**

प्यास + आ = **प्यासा** दूध + वाला = **दूधवाला** रख + वाला = **रखवाला**

3. प्रत्यय के दो भेद हैं–(क) कृत प्रत्यय, (ख) तद्धित प्रत्यय 4. **कर्तृवाचक कृदंत**–जिस प्रत्यय के जुड़ने पर बनने वाले शब्दों से क्रिया के करने वाले का बोध हो, उसे कर्तृवाचक कृदंत कहते हैं। **उदाहरण–**

प्रत्यय	**निर्मित शब्द**	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
इया	घटिया, बढ़िया	आलू	झगड़ालू

कर्मवाचक कृदंत–जिस प्रत्यय के जुड़ने पर बनने वाले शब्द से कर्म का बोध हो, उसे कर्मवाचक कृदंत कहते हैं। **उदाहरण–**

प्रत्यय	**निर्मित शब्द**	**प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
ना	ओढ़ना, ढकना	औना	बिछौना, खिलौना

(ख) 1. प्रारंभ 2. अंत 3. शब्दांश 4. नहीं होता है 5. यौगिक **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(घ) शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
भारी	भार	ई	**तेली**	तेल	ई
पढ़ाई	पढ़	आई	**मालिन**	माली	इन

	मोरनी	मोर	नी	**टोकरी**	टोकरा	ई
	लालिमा	लाल	इमा	**लुटिया**	लोटा	इया
	रसोइया	रसोई	इया	**लड़कपन**	लड़क	पन
(ङ)	**शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
	अटल	अ	टल	**खुशमिज़ाज**	खुश	मिज़ाज
	उनसठ	उन	सठ	**सरपंच**	सर	पंच
	बिनबुलाया	बिन	बुलाया	**भरपेट**	भर	पेट
	निडर	नि	डर	**अनपढ़**	अन	पढ़
	स्वदेश	स्व	देश	**सजल**	स	जल
(च)	**स्व**	स्वदेश	स्वतंत्र	**हर**	हरहाल	हरवक्त
	स	सपूत	सशक्त	**हम**	हमदम	हमराज़
	अनु	अनुकूल	अनुरूप	**गैर**	गैरकानूनी	गैरमुमकिन
	अति	अतिरिक्त	अत्यंत	**ला**	लाचार	लाजवाब
	नि	निडर	निहत्था	**सम**	समकोण	समकालीन
	दुर्	दुर्गम	दुर्बल	**चिर**	चिरकाल	चिरजीवी
	वि	विदेश	वियोग	**सह**	सहचर	सहपाठी
(छ)	**ई**	टोकरी	खुरपी	**एरा**	ममेरा	सपेरा
	पन	बालकपन	लड़कपन	**आर**	सुनार	लुहार
	ता	मानवता	दासता	**कार**	कलाकार	कहानीकार
	मय	सुखमय	जलमय	**ड़ी**	संदूकड़ी	टुकड़ी
	इया	रसोइया	मुखिया	**आ**	शिष्या	छात्रा
	अक	रक्षक	भक्षक	**औना**	खिलौना	बिछौना
	वती	बलवती	गुणवती	**नी**	शेरनी	मोरनी

(ज) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) **(झ)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)

5. संधि

(क) 1. जब दो शब्द एक-दूसरे के समीप आते हैं, तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि या वर्ण और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि या वर्ण आपस में मिल जाते हैं। इसी मेल को ही संधि कहते हैं। **उदाहरण–**(देव + आलय) = देवालय, (नर + इंद्र) = नरेंद्र, (वन + औषध) = वनौषध, (गै + अक) = गायक 2. संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि फिर से अलग-अलग कर दें तो उसे संधि-विच्छेद कहते हैं। **उदाहरण–**हिमालय का संधि-विच्छेद है–हिम +आलय। 3. **संधि का महत्व–**संधि और संधि विच्छेद की क्रिया का ज्ञान होने पर बड़े व जटिल शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलती है। 4. जब मिलने वाले शब्दों में से पहले शब्द के अंत में स्वर होता है और दूसरे शब्द के प्रारंभ में भी स्वर होता है, तो ऐसे मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। **उदाहरण–**देव + आलय = देवालय। स्वर संधि के पाँच भेद हैं–(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि (3) वद्धि संधि (4) यण् संधि (5) अयादि संधि। 5. जब पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन होता है और दूसरे शब्द के प्रारंभ में स्वर या व्यंजन कोई भी वर्ण होता है, तब वहाँ व्यंजन संधि होती है। **उदाहरण**-सत् + जन = सज्जन, षट् + आनन = षडानन। 6. जब पहले शब्द के अंत में विसर्ग होता है, तब विसर्ग संधि होती है। इसमें दूसरी ध्वनि स्वर या व्यंजन कोई भी हो सकती है। **उदाहरण–**नि: + चल = निश्चल **(ख)** 1. दीर्घ 2. एकैक 3. ओ 4. षडानन 5. नयन **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ)** 1. शरच्चंद्र, नमस्ते, मनोरथ,

पावक, स्वागत, विद्यानंद, दयानंद, परमौज, गायक, सूर्योदय, वीरोचित, चंद्रोदय, सद्धर्म, तथैव, संचार, देवेंद्र, निष्कपट, स्वेच्छा, विषम, भावार्थ, जगच्छाया, निष्ठुर **(ङ)** भौ + उक, उत् + ज्वल, निः + फल, आशीः + वाद, अति + आचार, मनः + रथ, रमा + ईश, छात्र + आवास, अति + अधिक, उत् + नति, मनः + ज, विद्या + अर्थी, वारि + ईश, निर् + धन, दुः + जन, सु + समा, दिन + ईश, सत् + जन, तपः + बल, निः + रोग, सम् + मुख **(च) दिक् + दर्शन** = दिग्दर्शन (व्यंजन संधि) **मनः + हर** = मनोहर (विसर्ग संधि) **नि + सिद्ध** = निषिद्ध (विसर्ग संधि) **नर + ईश** = नरेश (गुण संधि) **नि + ऊन** = न्यून (यण् संधि) **मनः + ताप** = मनस्ताप (विसर्ग संधि) **निः + चल** = निश्चल (विसर्ग संधि)

6. समास

(क) 1. दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया यौगिक शब्द बनाने को समास कहते हैं। समास के निम्नलिखित भेद हैं–(1) तत्पुरुष समास (2) कर्मधारय समास (3) द्विगु समास (4) बहुव्रीहि समास (5) द्वंद्व समास (6) अव्ययीभाव समास 2. समास युक्त पद को समस्तपद कहते हैं। समास करते समय शब्दों के बीच से विभक्ति-चिह्न हटा देते हैं। विभक्ति-चिह्न रहित शब्द को मिला देने से समस्तपद बनता है। 3. समासयुक्त पद (समस्तपद) को पूर्वस्थिति में परिवर्तित करने की क्रिया को विग्रह कहते हैं। 4. विग्रह करने पर समस्तपद के दो पद बनते हैं–पूर्व पद तथा उत्तर पद। **उदाहरण–**

समस्तपद	**पूर्व पद**	**उत्तर पद**	**विग्रह**
दाल-रोटी	दाल	रोटी	दाल और रोटी
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समाहार

5. जिस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं–(क) कर्म तत्पुरुष (ख) करण तत्पुरुष (ग) संप्रदान तत्पुरुष (घ) अपादान तत्पुरुष (ङ) संबंध तत्पुरुष (च) अधिकरण तत्पुरुष 6. जिस समास में पूर्व पद संख्यावाचक होता है और किसी समूह का बोध कराता है, उसे द्विगु सामास कहते हैं। **(ख)** 1. कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा विशेष्य या उपमेय होता है; जबकि बहुव्रीहि समास में समस्तपद ही किसी संज्ञा का विशेषण होता है। **उदाहरण–कर्मधारय समास–नीलकंठ**-नीला कंठ **(विशेषण-नील), बहुव्रीहि समास–नीलकंठ**-नीला है, जिसका कंठ **(शिव)** 2. कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद गुणवाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है; किंतु द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है। **उदाहरण–नीलगाय**-नीली है, जो गाय **(कर्मधारय), चतुर्वर्ण**–चार वर्ण **(द्विगु)** 3. बहुव्रीहि समास में संपूर्ण सामासिक शब्द ही विशेषण का कार्य करता है; जैसे–त्रिफला = तीन फलों वाला; परंतु द्विगु समास में समस्तपद का प्रथम पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा उसका विशेष्य होता है; जैसे–त्रिफला = तीन फलों का समूह। **(ग)** 1. तत्पुरुष 2. तत्पुरुष 3. अव्ययीभाव 4. कर्मधारय 5. द्वंद्व **(घ)** 1. कार्यकुशल, अधिकरण तत्पुरुष समास 2. यथासमय, अव्ययीभाव समास 3. तिरंगा, द्विगु समास 4. मुनिश्रेष्ठ, कर्मधारय समास 5. सुख-दुःख, द्वंद्व समास 6. विषधर, बहुव्रीहि समास 7. अन्न-जल, द्वंद्व समास 8. पुरुषोत्तम, कर्मधारय समास 9. हस्तलिखित, करण तत्पुरुष समास 10. नरभक्षी, कर्म तत्पुरुष समास 11. लालगुलाब, कर्मधारय समास 12. पति-पत्नी, द्वंद्व समास **(ङ) विग्रह**–ऊँच और नीच, पथ से भ्रष्ट, गंगा को धारण किया है जिसने, अर्थात् शिव, सात दिनों का समूह, अंधा है जो कूप (कुआँ), ऋण से मुक्त, नर और नारी, पूरब और पश्चिम, प्रत्येक वर्ष, सारा दिन **समास का नाम**–द्वंद्व समास, अपादान तत्पुरुष समास, बहुव्रीहि समास, द्विगु समास, कर्मधारय

समास, अपादान तत्पुरुष समास, द्वंद्व समास, द्वंद्व समास, अव्ययीभाव समास, अव्ययीभाव समास

7. शब्द-भंडार

(क) 1. समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची कहते हैं। **उदाहरण**–जल के पर्यायवाची हैं- पानी, नीर, वारि, उदक आदि। 2. जो शब्द किसी शब्द का विपरीत (उलटा) अर्थ प्रकट करे, उसे विलोम शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–दिन-रात, काला-गोरा, देव-दानव आदि। 3. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **साल**–वर्ष, एक वृक्ष का नाम 2 **सार**–निचोड़, लोहा, तत्व 4. हिंदी भाषा में ऐसे शब्द पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं, जिन्हें देखने पर सामान्यत: उनके अर्थ में कोई अंतर दिखाई नहीं देता, किंतु उनके गूढ़ार्थों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका प्रयोग पूर्ण रूप से विचारे बिना नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे शब्द एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहलाते हैं। **उदाहरण–ईर्ष्या**–दूसरे की उन्नति देखकर जलना **स्पर्धा**–दूसरे की उन्नति देखकर वैसा ही करने की इच्छा करना। 5. जो शब्द उच्चारण की दृष्टि से प्राय: समान होते हैं, परंतु उनके उच्चारण में सूक्ष्म अंतर होता है, उन्हें समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **अविराम**– लगातार, **अभिराम**–सुंदर (2) **इत्र**–सुगंधित द्रव, **इतर**–दूसरा 6. जो शब्द वाक्यांश के अर्थ को पूरी तरह प्रकट करता है उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–(1) दो वेदों को जानने वाला–**द्विवेदी** (2) प्रत्येक छह माह में होने वाला–**अर्धवार्षिक (ख)** 1. मेहमान, आगंतुक, पाहुना 2. बुध, आचार्य, ज्ञानी 3. काक, काग, वायस 4. अश्व, तुरंग, घोटक 5. कपोत, पारावत, कलकंठ 6. आपगा, तटिनी, तरंगिणी 7. आम्र, रसाल, सौरभ 8. नृप, भूपति, महीप **(ग)** **अस्त**-उदय, **अंधकार**-प्रकाश, **आवश्यक**-अनावश्यक, **सगुण**-निर्गुण, **सजीव**-निर्जीव, **स्वतंत्र**-परतंत्र, **सुसंगति**-कुसंगति, **उत्कृष्ट**-निकृष्ट, **रूपवान**- कुरूप, **आर्य**-अनार्य, **आकर्षण**-विकर्षण, **उपकार**-अपकार, **उचित**- अनुचित, **आदर**- अनादर, **निर्दोष**-सदोष **(घ)** 1. शिक्षक, भारी 2. हाथी, साँप 3. कान, कुंती का पुत्र 4. बाण, नदी का किनारा 5. रंग, जाति 6. कानून, ब्रह्मा 7. दूल्हा, वरदान 8. प्रेम, रंग 9. नीचे का होंठ, आकाश 10. शहद, वसंत **(ङ)** 1. **अधिक**–यह भोजन मेरे लिए आवश्यकता से अधिक है। **पर्याप्त**–इतना भोजन मेरे लिए पर्याप्त है। 2. **अनबन**–पति-पत्नी में छोटी-मोटी अनबन होना आम बात है। **खटपट**–रोज़-रोज़ की खटपट से बचने के लिए मैंने चुप्पी साध ली। 3. **न्याय**–सरपंच ने ग्रामीणों के विवाद का सही न्याय किया। **निर्णय**-उसने तीर निशाने पर मारने का निर्णय लिया। 4. **घर**–मकान को घर कहते हैं। **आवास**–घोंसला चिड़िया का आवास है। 5. **उपहास**–हमें किसी का उपहास नहीं करना चाहिए। **परिहास**–मित्र आपस में परिहास करते हैं। 6. **अपराध**–हत्या करना अपराध है। **पाप**–चोरी करना पाप है। 7. **असफल**–वह परिश्रम न करने के कारण असफल हो गया। **निष्फल**–काफ़ी परिश्रम करने के बाद भी उसका कार्य निष्फल रहा। 8. **शंका**–मुझे शंका है कि वह झूठ बोल रहा है। **आशंका**–उसे आशंका थी कि कोई दुर्घटना हो सकती है। **(च)** 1. आरंभ, अभ्यस्त 2. अत्यधिक, शत्रु 3. कमल, बादल 4. विरक्ति, देवता की धूप-दीप से वंदना 5. दूरी की नाप, खज़ाना 6. सुगंधित द्रव, दूसरा **(छ)** 1. निर्मम 2. सर्वशक्तिमान 3. दशानन 4. क्षणभंगुर 5. दैनिक 6. बहुदर्शी 7. अस्पृश्य 8. धर्माचारी **(ज)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (स) 5. (ब)

8. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और

शाब्दिक से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो, उसे मुहावरा कहते हैं। 2. लोक में प्रचलित उक्ति अथवा कथन को लोकोक्ति कहते हैं। 3. मुहावरे तथा लोकोक्ति में अंतर निम्न प्रकार हैं–(1) मुहावरा वाक्यांश होता है, जबकि लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य होती है। (2) मुहावरे वाक्यों में प्रयोग होकर वाक्य का अंग बन जाते हैं। लोकोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती है; क्योंकि उसका प्रयोग अपने कथन की पुष्टि के लिए पृथक वाक्य-रूप में किया जाता है। (3) मुहावरे का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता है; परंतु लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। (4) मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं; परंतु पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति के रूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। **(ख)** 1. हिंदी, अरबी 2. शाब्दिक, भिन्न 3. वाक्यांश 4. नहीं होती **(ग)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(घ)** 1. बहुत सम्मान देना। **वाक्य-प्रयोग**–मेरे परिवार के लोग मेरे दादा जी को सिर आँखों पर बैठाते हैं। 2. इकलौता पुत्र। **वाक्य-प्रयोग**–अच्छा हो या बुरा, मेरा बेटा ही मेरे अँधेरे घर का उजाला है, रोती हुई माँ ने कहा। 3. अकस्मात अधिक विपत्ति आना। **वाक्य-प्रयोग**–कारखाने में आग लगने का समाचार पाकर संपूर्ण परिवार पर जैसे आसमान टूट पड़ा। 4. टालमटोल करना। **वाक्य-प्रयोग**–उधार दिए पैसे माँगने पर मेरा मित्र अगर-मगर करने लगा। 5. खुशामद करना। **वाक्य-प्रयोग**–कुछ लोग तरक्की पाने के लिए अधिकारियों का अँगूठा चूमते हैं। 6. दृढ़ निश्चय करना। **वाक्य-प्रयोग**–परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए मैंने कमर कस ली है। 7. मनमुटाव होना। **वाक्य-प्रयोग**–बार-बार के लड़ाई-झगड़ों के कारण उनके रिश्ते में गाँठ पड़ गई है। 8. प्रेम करना। **वाक्य-प्रयोग**–मुझे कई सालों बाद देखने पर मेरी नानी ने मुझे गले से लगा लिया। **(ङ)** 1. **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना = काम शुरू करते ही बाधा, वाक्य-प्रयोग**–सेठ रामलाल ने अपनी दुकान का जैसे ही श्रीगणेश किया, त्योंही शहर में दंगा हो गया। इसी को कहते हैं- सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना। 2. **एक पंथ दो काज = एक काम से दोहरा लाभ, वाक्य-प्रयोग**–मधुर बोलने से स्वयं को भी शांति मिलती है और दूसरे भी प्रशंसा करते हैं अर्थात् एक पंथ दो काज। 3. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है = बुरी संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है, वाक्य- प्रयोग**–अब सोनू नए मित्रों के साथ रहने लगा है, सिगरेट पीने लगा है, सही कहा है किसी ने कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। 4. **एक तो करेला, दूजे नीम चढ़ा = एक बुराई के साथ दूसरी बुराई भी आ जाना, वाक्य-प्रयोग**–किसन लाल शराब तो पहले पीता ही था, अब जुआ भी खेलने लगा है। इसे कहते हैं–एक तो करेला, दूजे नीम चढ़ा। 5. **अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग= एकजुट न होना, वाक्य-प्रयोग**–देश में आजकल नेता अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। **(च)** 1. (स) 2. (द) 3. (य) 4. (अ) 5. (ब) **(छ)** 1. (स) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (द)

9. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव का नाम बताने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। जैसे–हर्षवर्धन, गरुड़, पुस्तक, अयोध्या, मिठास, प्रसन्नता। 2. संज्ञा के पाँच भेद हैं–(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा, (2) जातिवाचक संज्ञा, (3) भाववाचक संज्ञा, (4) समूहवाचक संज्ञा, (5) द्रव्यवाचक संज्ञा **(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा**–जो शब्द किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराएँ, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ कहते हैं; जैसे–दशरथ, नरेंद्र, राजीव, मीरा, लालकिला, रामायण, चेतक, गंगा, हिमालय, लखनऊ आदि। **(2) जातिवाचक संज्ञा**–जो शब्द किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, स्थानों या वस्तुओं का बोध कराएँ, उन्हें जातिवाचक संज्ञाएँ कहते हैं; जैसे- पुरुष, स्त्री, युवक, युवती, गाय, मोर, देश, नगर, गाँव, घाटी, प्रांत, पुस्तक, साइकिल आदि। 3. **व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा में अंतर–**

● व्यक्तिवाचक संज्ञा का विशेष नाम के लिए प्रयोग होता है, जातिवाचक संज्ञा का सामान्य नाम के लिए। ● व्यक्तिवाचक संज्ञा एकवचन होती है और उसका लिंग-परिवर्तन नहीं होता है। ● जातिवाचक संज्ञा एकवचवन और बहुवचन दोनों रूपों में होती है और उसका लिंग-परिवर्तन किया जा सकता है। 4. व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग सदा एकवचन में होता है; परंतु जब कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्ति विशेष का बोध न कराकर उस व्यक्ति जैसे गुणों या दोषों से युक्त अनेक व्यक्तियों का बोध कराती है, तब वह व्यक्तिवाचक न रहकर जातिवाचक बन जाती है। 5. कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा भी व्यक्तिवाचक संज्ञा के समान प्रयुक्त होती है; जैसे-शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे। यहाँ 'शास्त्री जी' जातिवाचक संज्ञा के रूप में होकर लालबहादुर शास्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ है अत: व्यक्तिवाचक रूप हो गया है। 6. भाववाचक संज्ञाओं की रचना प्राय: जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में 'ता, त्व, पन, हट, वट' आदि प्रत्ययों के योग से की जाती है। **(ख)** 1. **नेता जी** कुशाग्र बुद्धि थे। 2. **महात्मा जी** ने अहिंसक आंदोलन चलाया था। **(ग)** 1. **जयचंदों** तथा **मीरजाफ़रों** ने देश को विदेशी हाथों में सौंपने का कार्य किया। 2. **विभीषणों** के प्रति सावधान रहना चाहिए। **(घ)** 1. विनम्रता 2. ईमानदारी 3. सफलता 4. सुंदरता 5. निर्धनता **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(च)** 1. गरीबी 2. निकटता 3. सफलता 4. सज्जनता 5. बुराई **(छ) गाय**-जातिवाचक **ताजमहल**-व्यक्तिवाचक **ऊँचाई**-भाववाचक **सेना**-समूहवाचक **माली**-जातिवाचक **दर्ज़ी**-जातिवाचक **मिठास**-भाववाचक **सोना**-द्रव्यवाचक, **चेतक**-व्यक्तिवाचक **पानी**-द्रव्यवाचक **दल**-समूहवाचक **धमकी**-भाववाचक, **बचपन**- भाववाचक **लोहा**-द्रव्यवाचक **भगवद् गीता**-व्यक्तिवाचक **(ज)** 1. अजंता, महाराष्ट्र (व्यक्तिवाचक), गुफाएँ (जातिवाचक) 2. ताजमहल (व्यक्तिवाचक), सुंदरता (भाववाचक) 3. आँखों (जातिवाचक), आँसू (जातिवाचक) 4. परिवार (समूहवाचक), सोने (द्रव्यवाचक), गहने (जातिवाचक) **(झ) निरंतर** - निरंतरता **माता** - मातृत्व **मानव** - मानवता **मनुष्य** - मनुष्यता **अमर** - अमरत्व **लाल** - लाली, लालिमा

10. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। **उदाहरण**-(1) पुरुष आया और बैठ गया, स्त्री आई और बैठ गई। (2) पुरुष सामान लेकर चला गया, स्त्री सामान लेकर चली गई। दोनों वाक्यों में पुरुष व स्त्री ने समान क्रियाएँ कीं फिर भी-पुरुष के लिए शब्द प्रयोग हुए-आया, बैठ गया, चला गया स्त्री के लिए शब्द प्रयोग हुए-आई, बैठ गई, चली गई। शब्दों के रूप से पता चलता है कि वह पुरुष जाति के लिए प्रयोग किए गए हैं या स्त्री जाति के लिए। दोनों की भिन्न पहचान बताना लिंग का कार्य है। 2. लिंग के दो भेद हैं-पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग। (1) **पुल्लिंग**-पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे-पुत्र, पिता, बैल, कुत्ता, शेर, कमरा, वृक्ष, पलंग आदि। (2) **स्त्रीलिंग**-स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे-स्त्री, पुत्री, माता, बहन, दादी, नानी, गाय, पुस्तक, मक्खी, कलम, चारपाई आदि। 3. लिंग की पहचान का निर्णय प्राय: दो आधार पर होता है-(1) शब्द के अर्थ से (2) शब्द के रूप से। प्राणीवाचक शब्दों का लिंग-निर्णय अर्थ के आधार पर किया जाता है तथा निर्जीव वस्तुओं या पदार्थों का लिंग-निर्णय रूप के आधार पर होता है। 4. पुल्लिंग की पहचान के चार नियम निम्नलिखित हैं-(1) संस्कृत से आए 'ज' तथा 'ख' से समाप्त होने वाले शब्द प्राय: पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे-जलज, मनोज, नीरज, सुख, दु:ख, लेख आदि। (2) एरा से समाप्त होने वाले शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे-चचेरा, ममेरा, मौसेरा, फुफेरा,

ठठेरा, सपेरा आदि। (3) जिन शब्दों के अंत में 'वाला', 'खाना', 'दान' हों, वे प्रायः पुल्लिंग होते हैं; जैसे–दूधवाला, ठेलेवाला, चायवाला, पानवाला, फूलवाला, रखवाला, दवाखाना, कारखाना, फूलदान, कमलदान, रोशनदान आदि। (4) संस्कृत से आए, 'त्र' से समाप्त होने वाले शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे–अस्त्र, शस्त्र, शास्त्र, नेत्र, चरित्र आदि। 5. स्त्रीलिंग की पहचान के चार नियम हैं–(1) शरीर के कुछ भागों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–जीभ, आँख, छाती, अंगुली, हड्डी आदि। (2) नदियों तथा झीलों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–गंगा, यमुना, कावेरी, ब्रह्मपुत्र, डल, वूलर आदि। (3) भोजन व मसालों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–मिर्च, हल्दी, सब्ज़ी, रोटी आदि। (4) भाषाओं, बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–हिंदी, गुजराती, अंग्रेज़ी, हरियाणवी, ब्रजभाषा, देवनागरी, ब्राह्मी आदि। 6. सदैव पुल्लिंग के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द नित्य पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं; जैसे–अध्यापक, राजदूत, मंत्री, ड्राइवर, चपरासी, प्रधानमंत्री, मैनेजर, पशु, उल्लू, भेड़िया, खटमल, पक्षी, तोता, कौआ, कीड़ा, मच्छर, केंचुआ आदि। सदैव स्त्रीलिंग के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द नित्य स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं; जैसे–संतान, सुहागिन, नर्स, धाय, सवारी, भेड़, कोयल, मैना, बुलबुल, गिलहरी, लोमड़ी, मकड़ी, जूँ, जोंक आदि। **(ख)** 1. संस्कृत 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. रूप 5. स्त्रीलिंग **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ **(घ)** 1. अभिनेता की सहायिका उठकर चली गई। 2. नौकरानी रसोईघर में थी। 3. दर्ज़िन ने रानी के कपड़े तैयार कर दिए। 4. सम्राज्ञी ने सभी गायिकाओं को पुरस्कार दिया। 5. आचार्या की शिष्या बुद्धिमती थी। **(ङ)** 1. मंत्री, राजदूत, उल्लू, भेड़िया 2. नर्स, कोयल, मैना, लोमड़ी **(च) सास**- स्त्रींलिंग, **बाजरा**-पुल्लिंग **वृद्ध**-पुल्लिंग **पृथ्वी**-स्त्रीलिंग **चालक**-पुल्लिंग **मकड़ी**-नित्य स्त्रीलिंग **सजा**-स्त्रीलिंग **शक्ति**-स्त्रीलिंग **हिंदी**-स्त्रीलिंग **दास**-पुल्लिंग **सत्यवान**-पुल्लिंग **विदुषी**-स्त्रीलिंग **भारत**-पुल्लिंग **दूध**-पुल्लिंग **सुत**-पुल्लिंग **श्रीलंका**-पुल्लिंग **चाय**-स्त्रीलिंग **रीछ**-पुल्लिंग **चाँदी**-स्त्रीलिंग **अँगूठी**-स्त्रीलिंग **मक्खी**-नित्य स्त्रीलिंग **फरवरी**-स्त्रीलिंग **हिमालय**- पुल्लिंग **मच्छर**-नित्य पुल्लिंग **(छ) महारानी**-महाराज **डिबिया**-डिब्बा **शिक्षिका**-शिक्षक **रानी**-राजा **छिपकली**-नर छिपकली **बहन**-भाई **रूपवती**-रूपवान **चंचला**-चंचल **कर्त्री**-कर्ता **वीरांगना**-वीर **पाठिका**-पाठक **देवी**-देव **(ज) मौसा**-मौसी **भगवान**-भगवती **लोटा**-लुटिया **दास**-दासी **पति**-पत्नी **विद्वान**-विदुषी **छात्र**-छात्रा **मज़दूर**-मज़दूरनी **लेखक**-लेखिका **पुत्रवान**-पुत्रवती **तेली**-तेलिन **हलवाई**-हलवाइन **सेवक**-सेविका **ग्वाला**-ग्वालिन **परिचायक**-परिचायिका

11. वचन

(क) 1. व्याकरण में वचन से अभिप्राय है–संज्ञा या सर्वनाम की संख्या। 2. वचन के दो भेद हैं–(1) एकवचन (2) बहुवचन (1) **एकवचन**–शब्द के जिस रूप से एक वस्तु, प्राणी या पदार्थ का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–बेटा, लड़का, पुस्तक, झाड़ी, थैला, कुत्ता, कमरा, कौआ आदि। (2) **बहुवचन**–शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं, प्राणियों या पदार्थों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–बेटे, लड़के, पुस्तकें, थैले, झाड़ियाँ, कुत्ते, कमरे, कौए आदि। 3. वचन की पहचान के दो आधार हैं–**(1) संज्ञा या सर्वनाम शब्द के द्वारा**–जब वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम अपनी संख्या (एक या एक से अधिक) का बोध करते हैं; जैसे–

	(क)	(ख)	एकवचन		बहुवचन
●	टोपी पहनो।	टोपियाँ पहनो।	टोपी	–	टोपियाँ
●	लड़का पढ़ता है।	लड़के पढ़ते हैं।	लड़का	–	लड़के

●	मैं खेल रहा हूँ।	हम खेल रहे हैं।	मैं	–	हम
●	वह बैठ गया।	वे बैठ गए।	वह	–	वे

(2) क्रिया के द्वारा–कुछ संज्ञा शब्दों का एकवचन या बहुवचन दोनों में समान रूप रहता है; जैसे–छात्र, राजा, साधु, बालक, चोर आदि। इस स्थिति में उनके वचन की पहचान वाक्य में प्रयुक्त क्रिया पदों द्वारा होती है; जैसे–

	(क)	**(ख)**
●	छात्र पढ़ने लगा।	छात्र पढ़ने लगे।
●	राजा चला गया।	राजा चले गए।
●	साधु बैठ गया।	साधु बैठ गए।
●	लोगों ने चोर पकड़ लिया।	लोगों ने चोर पकड़ लिए।

4. निम्नलिखित परिस्थितियों में एकवचन शब्द का बहुवचन में प्रयोग किया जाता है– (i) किसी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए शब्द के एकवचन के स्थान पर बहुवचन रूप प्रयोग किया जाता है; जैसे–(क) शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे। (ख) ये दादा जी हैं। (ग) मेरे स्मरण करते ही गुरु जी आ गए। जिन व्यक्तियों का हम आदर करते हैं, उनके प्रति एकवचन की क्रिया सम्मान नहीं दर्शा पाती, अत: क्रिया के बहुवचन रूप का प्रयोग किया जाता है। (ii) लोक व्यावहार में कुछ शब्दों का बहुवचन रूप ही प्रयोग में आता है; जैसे–'तू' एकवचन के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग। 'तू' का प्रयोग केवल अत्यंत प्रिय या अत्यंत छोटे के लिए ही किया जाता है, अन्यथा यह अप्रिय लगता है और अपमानजनक भी; जैसे–

(क) तू जल्दी आना।	(क) तुम जल्दी आना।
(ख) तूने क्या खाया?	(ख) तुमने क्या खाया?

'तू' शब्द सुनने में प्रिय और सम्मानजनक नहीं लगता है। 'तुम' शब्द सुनने में प्रिय और सम्मानजनक लगता है। (iii) कभी-कभी बड़प्पन दिखाने में भी 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग कर दिया जाता है; जैसे–नेता जी बोले–''हमें वोट दो, तभी देश उन्नति करेगा।'' नाना जी बोले–''हमें अब वापस लौटना है।'' 5. पदार्थसूचक शब्दों–सोना, चाँदी, दूध, पानी, चाय, कॉफ़ी आदि का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे–(क) सोना महँगी धातु है। (ख) दूध गरम है। (ग) तालाब में सारा पानी सूख गया। (घ) वह प्रात: दो प्याले चाय व शाम को तीन प्याले कॉफ़ी पीता है। 6. एकवचन से बहुवचन में परिवर्तन के दो नियम निम्नलिखित हैं–

(1) आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'आ' को 'ए' करके–

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
रस्सा	रस्से	पंखा	पंखे	डंडा	डंडे
जूता	जूते	बेटा	बेटे	लड़का	लड़के
चूहा	चूहे	कमरा	कमरे	घोड़ा	घोड़े

(2) अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ (ँ)' जोड़कर–

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
दुकान	दुकानें	सड़क	सड़कें	बात	बातें
झील	झीलें	रात	रातें	मेज़	मेज़ें
पुस्तक	पुस्तकें	कलम	कलमें	बाँह	बाँहें

(ख) 1. एकवचन 2. एकवचन 3. बहुवचन 4. बहुवचन 5. बहुवचन **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(घ) पाठकगण** – बहुवचन **गायकवृंद** – बहुवचन **प्रजानन** – बहुवचन **गरीबलोग** – बहुवचन **किला** – एकवचन **कविता** – एकवचन **झील** – एकवचन **संतजन**– बहुवचन **आशाएँ** – बहुवचन **वधू** – एकवचन **(ङ) आचार्य** – आचार्यगण **झाड़ी** –

झाड़ियाँ **मज़दूर** – मज़दूरवर्ग **गायिका** – गायिकाएँ **छात्र** – छात्रगण **पुस्तक** – पुस्तकें **(च)** 1. बहुवचन 2. बहुवचन 3. एकवचन **(छ)** 1. तोते उड़ गए। 2. लड़के अपने स्थान पर बैठ गए। 3. कलियाँ खिल रही हैं। 4. डाकिये पत्र देकर चले गए। **(ज)** 1. आज आपके दर्शन करके हम कृतार्थ हो गए। 2. नाटक की नायिका के केश बहुत घने हैं। 3. मरीज ने गहरी साँस ली और उसके प्राण निकल गए।

12. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–**मैं, तुम, वह, वे, आप, उन्हें, उसे, उन्होंने आदि। 2. सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद हैं–(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) संबंधवाचक सर्वनाम (5) प्रश्नवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम 3. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं–**(क) उत्तम पुरुष, उदाहरण–**मैं, हम, हमें, हमको आदि। **(ख) मध्यम पुरुष, उदाहरण**–तू, तुम, आप आदि। **(ग) अन्य पुरुष, उदाहरण**–वह, वे, उसे, उन्हें आदि। 4. स्वयं के लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **उदाहरण–**(1) मैं **स्वयं** कमरा साफ़ कर लूँगा। (2) वह **खुद** ही चला गया। (3) अरे! क्या तुम **अपने आप** आ गए। 5. जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न प्रकट होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–(1) शोर कौन मचा रहा है? (2) तुम्हारे थैले में क्या है? (3) अरे! मुन्ना किसके साथ गाँव गया था? 6. किसी निश्चित संज्ञा की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करने वाले शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **उदाहरण–**(1) **मेरी** साइकिल यह नहीं है। (2) **वे** मेरे मित्र हैं। (3) **ये** कौन हैं? जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–**(1) बाज़ार में **कुछ** नहीं मिला। (2) **कोई** जाना चाहता है, तो चला जाए। (3) **किसी** ने उसकी मदद नहीं की। 7. जो सर्वनाम वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनाम से संबंध बताए, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण–**(1) **जो** वह चाहता था, **वह** मैं नहीं कर सका। (2) **जिसकी** लाठी, **उसकी** भैंस। **(ख)** 1. कोई–अनिश्चवाचक सर्वनाम 2. कौन– प्रश्नवाचक सर्वनाम 3. मुझे–उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, कुछ–अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. यह–निश्चयवाचक सर्वनाम, मेरा–उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, 5. तुम्हें–मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, किसने–प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. जो, वह–संबंधवाचक सर्वनाम, मैं–उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम 7. वह–अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, आप–निजवाचक सर्वनाम 8. कोई, किसी, कुछ–अनिश्चयवाचक सर्वनाम 9. उसने–अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, स्वयं– निजवाचक सर्वनाम 10. वह–अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, जिसकी, उसकी–संबंधवाचक सर्वनाम **(ग)** 1. उत्तम 2. उत्तम 3. मध्यम 4. निश्चित 5. उपस्थित नहीं **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗

13. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। 2. वाक्यों में संज्ञा या सर्वनाम पदों का क्रिया के साथ अथवा उनका पारस्परिक संबंध प्रकट होता है। वाक्यों में पदों के साथ 'ने, को, से, पर, के लिए' शब्द-चिह्न लगे होते हैं। इन चिह्नों के कारण ही ये पद परस्पर आवश्यकतानुसार संबंधित हो पाते हैं। यह प्रत्येक चिह्न विभक्ति चिह्न अथवा परसर्ग कहलाता है। 3. कारक के भेद विभक्ति चिह्न सहित निम्नलिखित होते हैं–

कारक	**विभक्ति-चिह्न**
(1) कर्ता कारक	ने
(2) कर्म कारक	को

(3) करण कारक — से, के द्वारा
(4) संप्रदान कारक — के लिए, को
(5) अपादान कारक — से (अलग होना)
(6) संबंध कारक — का, की, के, रा, री, रे
(7) अधिकरण कारक — में, पर
(8) संबोधन कारक — हे, अरे, ओ

4. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। यह प्रायः संज्ञा या सर्वनाम होता है। कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न 'ने' है। **उदाहरण–राजू** ने फल खरीदे। 5. कर्ता कारक भूतकाल में क्रिया के सकर्मक होने पर ही विभक्ति सहित होता है। कर्ता कारक वर्तमान काल और भविष्यत् काल की क्रिया होने पर विभक्ति रहित होता है। 6. वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया के व्यापार (चेष्टा) का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। **उदाहरण–किसी** को मत सताओ। पुलिस ने **चोर** को पकड़ लिया। 7. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार (स्थान या काल) का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। **उदाहरण :** (1) कपड़े **अलमारी** में रख दो। (स्थान-अलमारी) (2) मैं **दो दिन** में आऊँगा। (काल-दो दिन) (3) बच्चे **छत** पर खेल रहे हैं। (स्थान-छत) **(ख)** 1. अधिकरण 2. कर्म 3. संप्रदान 4. अपादान 5. कर्ता **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. को, से, में 2. से 3. पर 4. ने 5. ने, के लिए **(ङ)** 1. अपादान कारक 2. अधिकरण कारक 3. अपादान कारक 4. संप्रदान कारक 5. कर्ता कारक 6. करण कारक 7. संबोधन कारक 8. अधिकरण कारक

14. विशेषण

(क) 1. विशेषण का कार्य है–'विशेषता' बताना। **उदाहरण**–गुरु जी ने राजीव के **उज्ज्वल भविष्य** के लिए **शुभकामनाएँ** दीं। **कैसा भविष्य? ➡** उज्ज्वल ('भविष्य' संज्ञा) की विशेषता। **कैसी कामनाएँ? ➡** शुभकामनाएँ (संज्ञा) की विशेषता। 2. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। **उदाहरण**–मैं कल ऊँची पहाड़ी का दृश्य देखने गया था। **➡** ऊँची (विशेषण), पहाड़ी (संज्ञा) 3. विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं।

उदाहरण–	**शब्द-समूह**	**विशेषण**	**विशेष्य**
	बुद्धिमान बालक	बुद्धिमान	बालक
	दुष्ट आदमी	दुष्ट	आदमी

4. जो विशेषण विशेषणों की भी विशेषता बताएँ प्रविशेषण कहलाते हैं। **उदाहरण**–(1) राजीव **पूर्ण** स्वस्थ है। इस वाक्य में 'पूर्ण' शब्द अपने साथ प्रयुक्त 'स्वस्थ' विशेषण की विशेषता बता रहा है। 5. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार और दशा आदि का बोध कराता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। गुणवाचक विशेषण निम्नलिखित विशेषताओं का बोधक होता है–(1) **गुणबोधक** (2) **दोषबोधक** (3) **स्पर्शबोधक** (4) **रंगबोधक** (5) **अवस्थाबोधक** (6) **स्थानबोधक** (7) **आकारबोधक** (8) **स्वादबोधक** (9) **दशाबोधक** (10) **कालबोधक** (11) **दिशाबोधक** 6. जिस शब्द द्वारा संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं–(क) **निश्चित संख्यावाचक विशेषण, उदाहरण**–एक, दो, तीन, चार, पहला, दूसरा, तीसरा, दो गुना, तीन गुना (ख) **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण; उदाहरण**–थोड़े, कुछ, सैकड़ों, हज़ारों आदि। 7. जिस शब्द से किसी वस्तु का परिमाण या

नाप–तौल का पता चलता है, वह परिमाणवाचक विशेषण होता है। परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं–**(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण, उदाहरण–दस किलो** गेहूँ, **दो लीटर** दूध, **10 ग्राम** चाँदी, **पाँच मीटर** कपड़ा, **एक तोला** सोना आदि। **(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण, उदाहरण–थोड़ी** चाय, **सारी** मिठाई, **थोड़े** चावल, **थोड़ा** दूध आदि। **(ख)** 1. जो सर्वनाम संज्ञा से पहले प्रयुक्त होकर संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। सार्वनामिक विशेषण संकेतवाचक विशेषण भी कहलाते हैं। **उदाहरण–**(1) **इस** कुरसी को भीतर रख दो। (2) **उस** लड़के को भीतर बैठाओ! (3) **ये** लोग यहाँ खड़े हैं। (4) **वे** बच्चे किसके हैं? 2. जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनाए जाते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–भारतीय संगीत, बंगाली रसगुल्ला, बनारसी साड़ी, इलाहाबादी अमरूद आदि। भारतीय, बंगाली, बनारसी, इलाहाबादी विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बने विशेषण हैं। 3. कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण होते हैं; जैसे–अच्छा, बुरा, सुखी, दुखी, दुष्ट, लंबा, कड़वा, मीठा, खट्टा आदि। इन्हें मूल विशेषण कहते हैं। **(ग) लखनऊ**–लखनवी, **चलना**–चलाऊ, **खाना**–खाऊ, **इतिहास**–ऐतिहासिक, **दया**–दयालु, **भीतर**–भीतरी, **शरीर**– शारीरिक, **रोग**–रोगी, **ऊपर**–ऊपरी, **परिवार**–पारिवारिक, **अपमान**–अपमानित, **यह**–ऐसा, **भागना**–भगौड़ा, **व्यापार**–व्यापारिक, **कौन**–कैसा **(घ) उत्तरावस्था**–अधिक दयालु, दीर्घतर, सुंदरतर, श्रेष्ठतर, दृढ़तर, अधिक ऊँचा, अधिक अच्छा **उत्तमावस्था–**सबसे अधिक दयालु, दीर्घतम, सुंदरतम, श्रेष्ठतम, दृढ़तम, सबसे अधिक ऊँचा, सबसे अधिक अच्छा **(ङ) विशेषण–**1. एक, गरम 2. दो, थोड़ा 3. लाल, पाँच मीटर 4. कुछ, थोड़ा 5. सारा 6. थोड़ा, एक कटोरी 7. दो किलो 8. चिकने, थोड़ा 9. ठंडा 10. थोड़ी 11. पाँचवाँ, उस 12. बनारसी, बंगाली **विशेष्य–**1. प्याली, चाय 2. केले, दूध 3. थान, कपड़ा 4. आलू, आटा 5. दूध 6. तेल, दाल 7. चावल 8. फ़र्श, सर्फ़ 9. पानी 10. चीनी 11. लड़का, मकान 12. साड़ी, रसगुल्ला **(च)** 1. बहुत 2. अत्यंत 3. बड़े 4. काफ़ी 5. निरा **(छ)** 1. बहुत 2. परिमाणवाचक 3. दो लाख 4. भला 5. हरा **(ज)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

15. क्रिया, काल एवं वाच्य

(क) 1. किसी कार्य, घटना या अस्तित्व का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं। 2. कार्य दर्शाने वाले शब्द कार्यवाची होते हैं। उपस्थिति दर्शाने वाले शब्द अस्तित्ववाची होते हैं। 3. जिस मूल शब्द से क्रिया शब्द बनता है, उसे धातु कहते हैं। उदाहरण–

क्रिया	**धातु**	**क्रिया**	**धातु**	**क्रिया**	**धातु**
चलना	चल	खाना	खा	बैठना	बैठ
पीना	पी	गाना	गा	सोना	सो
पढ़ना	पढ़	लिखना	लिख	जाना	जा

4. जिन वाक्यों में कर्ता के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया जाता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है, उन वाक्यों में प्रयुक्त होने वाली क्रियाएँ अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। **उदाहरण–**(1) रवि मुसकराता है। (2) केंचुआ रेंगता है। (3) मीरा गा रही है। इन वाक्यों में क्रियाओं (मुसकराता है, रेंगता है, गा रही है) का फल उनके कर्ताओं रवि, केंचुए, मीरा पर पड़ रहा है। इसलिए ये अकर्मक क्रियाएँ हैं। जिस क्रिया के साथ कर्म रहता है। और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। **उदाहरण–**(1) बंदर केला खा रहा है।→यहाँ 'खा रहा है' का फल 'केले' (कर्म) पर पड़ रहा है। (2) लड़की पत्र लिखती है।→यहाँ 'लिखती है' क्रिया का फल 'पत्र' (कर्म) पर पड़ रहा है। 5. एककर्मक क्रिया के दो उदाहरण–(क) पूजा **गीत** गा रही है। (ख) नेहा **चाय** बना रही है। द्विकर्मक क्रिया के

दो उदाहरण–(क) राजू ने **माता जी** को **रुपए** भेजे। (ख) मोहित ने **भक्तों** को **प्रसाद** बाँटा। 6. **(अ)** जहाँ वाक्य में एक से अधिक धातुओं से बने क्रियापद हों, वे संयुक्त क्रिया कहलाते हैं; जैसे–(क) मुझे पढ़ने दो। (पढ़ने + दो) (ख) कौआ थोड़ी देर तक उड़ता रहा। (उड़ता + रहा) **(ब)** जिस क्रिया पद से इस बात का पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है; जैसे–(क) सेठ जी ने नौकर से कपड़े धुलवाए। (ख) माँ ने रवि से मिठाई मँगवाई। **(स)** वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले यदि कोई क्रिया हो चुकी है, तो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–(क) नौकरानी भोजन बनाकर बैठ गई। **(बनाकर)** (ख) लता सोकर उठ गई। **(सोकर)** 7. 'ना' युक्त धातु का उसी रूप में प्रयोग भी किया जाता है। ऐसे क्रिया रूप को संज्ञार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–(1) उसे क्रिकेट **खेलना** आता है। (2) अभी उसे **पढ़ना** नहीं आता है। **सामान्य क्रिया**–जिस वाक्य में एक क्रियापद हो, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं; जैसे–(क) मैंने पढ़ाई की। (ख) तुम घर जाओ। 8. क्रिया के रूप से कार्य के करने या होने के समय का बोध होता है। इस समय को ही व्याकरण में 'काल' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–(1) भूतकाल (2) वर्तमानकाल (3) भविष्यत्काल 9. **भूतकाल के भेद (1) सामान्य भूत, उदाहरण**–(क) नौकर चला गया। (ख) नौकरानी ने चाय बनाई। **(2) आसन्न भूत, उदाहरण**–(क) वह अभी गया है। (ख) दादा जी गाँव गए हैं। **(3) अपूर्ण भूत, उदाहरण**–(क) मैदान में बच्चे खेल रहे थे। (ख) रात ढल रही थी। **(4) पूर्ण भूत, उदाहरण**–(क) राजीव भोजन कर चुका था। (ख) सीमा ने दृश्य देख लिया था। **(5) संदिग्ध भूत, उदाहरण**–(क) उसने पत्र लिखा होगा। (ख) रवि ने भोजन कर लिया होगा। **(6) हेतुहेतुमद भूत, उदाहरण**–(क) यदि तुम परिश्रम करते, तो सफल हो जाते। (ख) यदि समय पर वर्षा होती, तो फसल न सूखती। 10. वाच्य क्रिया के परिवर्तन को कहते हैं जिससे यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, क्रिया या भाव में से किसकी प्रधानता है। **वाच्य के तीन भेद माने जाते हैं**–(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य **(क) कर्तृवाच्य, उदाहरण**–(1) नौकर कमरा साफ़ करता है। (2) बच्चा दूध पीता है। **(ख) कर्मवाच्य, उदाहरण**–(1) नौकर के द्वारा कमरा साफ़ किया जाता है। (2) बच्चे के द्वारा दूध पीया जाता है। **(ग) भाववाच्य, उदाहरण**–(1) नौकर से उठा नहीं जाता। (2) अब चला जाए। (3) मुझसे बैठा भी नहीं जाता। **(ख)** 1. कर्तृवाच्य में क्रिया का संबंध कर्ता से होता है। इसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं; जैसे–(1) नौकर कमरा साफ़ करता है। (2) बच्चा दूध पीता है। 2. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका प्रयोग कर्म के अनुसार किया गया है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं; जैसे–(1) नौकर के द्वारा कमरा साफ़ किया जाता है। (2) बच्चे के द्वारा दूध पीया जाता है। इन वाक्यों में क्रियाएँ अपने कर्म के लिंग व वचन के अनुसार प्रयोग की गई हैं। अत: ये कर्मवाच्य के वाक्य हैं। 3. क्रिया के जिस रूप में न कर्ता की प्रधानता हो और न कर्म की, अपितु जहाँ क्रिया का भाव ही मुख्य विषय हो, उसे भाववाच्य कहते हैं; जैसे–(1) नौकर से उठा नहीं जाता। (2) अब चला जाए। (3) मुझसे बैठा भी नहीं जाता। **(ग)** 1. सामान्य 2. संदिग्ध 3. संदिग्ध 4. संभाव्य 5. अपूर्ण **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(ङ)** 1. कर्मवाच्य 2. भाववाच्य 3. कर्तृवाच्य 4. कर्मवाच्य 5. कर्तृवाच्य **(च)** 1. सुन रहे हैं (अपूर्ण वर्तमान) 2. किया है (असान्न भूत) 3. पकड़ा है (आसन्न भूत) 4. खेलते होंगे (संदिग्ध वर्तमान) 5. शायद देखने जाऊँ (संभाव्य भविष्यत्) 6. न आती, बच जाता। (हेतुहेतुमद् भूत) 7. टिमटिमा रहे हैं (अपूर्ण वर्तमान) **(छ)** 1. शायद बच्चे स्कूल में आएँ। 2. उसने टी०वी०

देखा। 3. गुरु जी ने सबका हित चाहा। 4. लड़के पार्क में खेल रहे थे। 5. लोग यात्रा करते हैं। 6. किसान खेत में हल चलाएगा। 7. राजीव प्रदर्शनी देखने जा रहा था। **(ज)** 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब) **(झ)** 1. संदिग्ध भूत में क्रिया के रूप से भूतकाल का बोध होता है, किंतु कार्य के होने में संदेह रहता है; जैसे–उसने पत्र लिखा होगा। जबकि संभाव्य भविष्यत् में आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई जाती है; जैसे–शायद वह पत्र लिखेगा। 2. अपूर्ण भूत में क्रिया के रूप से यह तो पता चलता है कि कार्य भूतकाल में आरंभ हुआ था, परंतु उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता, जैसे–मैदान में बच्चे खेल रहे थे। अपूर्ण वर्तमान में क्रिया के रूप से वर्तमान काल में कार्य का निरंतर जारी रहना प्रकट होता है; जैसे-रचना पढ़ रही है। **(ञ)** 1. अकर्मक 2. सकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. अकर्मक 6. सकर्मक **(ट)** 1. चाची जी (गौण कर्म), रुपए (मुख्य कर्म) 2. दादी (गौण कर्म), रामायण (मुख्य कर्म) 3. मेहमानों (गौण कर्म), भोजन (मुख्य कर्म) 4. मीरा (गौण कर्म), पुस्तक (मुख्य कर्म)

16. अविकारी शब्द

(क) 1. अविकारी शब्द वे होते हैं, जो प्रत्येक परिस्थिति में अपरिवर्तित रहते हैं। **उदाहरण**– आज, साथ, धीरे, तेज़ आदि। 2. अविकारी शब्दों के भेद हैं–(1) क्रियाविशेषण (2) संबंधबोधक, (3) समुच्चयबोधक तथा (4) विस्मयादिबोधक 3. वाक्य में क्रिया पदों की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। क्रियाविशेषण क्रिया की रीति संबंधी, परिमाण संबंधी, स्थान संबंधी, काल संबंधी विशेषता बताते हैं। 4. क्रियाविशेषण के भेद हैं–(क) कालवाचक क्रियाविशेषण (ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (घ) रीतिवाचक क्रियाविशेषण। **कालवाचक क्रियाविशेषण**–क्रिया के होने का समय बताने वाले शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे–(1) वह **कल** गाँव जाएगा। (2) माली **आज** फल तोड़ेगा। (3) **दिनभर** वर्षा होती रही। 5. जो अविकारी शब्द संज्ञा व सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताता है, वह संबंधबोधक अव्यय कहलाता है। **उदाहरण**–(1) राजू मंदिर **की ओर** जा रहा है। (2) वह राजन **के साथ** गाँव गया। (3) हमारे स्कूल **के सामने** पीपल का पेड़ है। 6. दो शब्दों, वाक्यों या उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्द को समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं–(1) समानाधिकरण (2) व्यधिकरण 7. व्यधिकरण समुच्चयबोधक वह अव्यय है जो एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को मुख्य उपवाक्य से मिलाता है। **व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार उपभेद हैं–(क) कारणबोधक**–ये समुच्चयबोधक दो उपवाक्यों को जोड़ते हैं और मुख्य उपवाक्य की बात का कारण बताते हैं; जैसे–(1) राजू स्कूल नहीं जा सका **क्योंकि** वर्षा हो रही थी। (2) आजम गरीब है **इसलिए** सब उसे कमज़ोर समझते हैं। **(ख) संकेतवाचक**–प्रथम उपवाक्य में जो कहा जाता है, ये उसका संकेत अगले उपवाक्य में देते हैं; जैसे–(1) **यदि** सत्य बोलोगे, **तो** सम्मान पाओगे। (2) **यद्यपि** वह दुर्बल है, **तथापि** साहसी है। **(ग) स्वरूपबोधक**–ये अव्यय पहले के उपवाक्य या वाक्यांश के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने वाले होते हैं; जैसे–(1) आज 2 अक्टूबर **अर्थात्** शास्त्री जी का जन्मदिन है। (2) मैं हाँ कर दूँ, **यानी** सब स्वीकार कर लूँ। **(घ) उद्देश्यबोधक**–ये अव्यय आश्रित उपवाक्य से पूर्व आकर मुख्य उपवाक्य का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं; जैसे–(1) चोर भागा जिससे **कि** पकड़ा न जा सके। (2) उसे इस प्रकार बैठाओ, **जो** फिर न गिर सके। 8. वाक्य में प्रयुक्त जिस अव्यय शब्द के द्वारा हर्ष, शोक, विस्मय, दुःख, ग्लानि या लज्जा आदि भाव प्रकट होते

हैं; वह विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाता है। **उदाहरण**–(1) **वाह!** तुमने तो कमाल कर दिया। (2) **शाबाश!** यूँ ही आगे बढ़ते रहो। (3) **हे प्रभु!** सबको सद्‌बुद्‌धि दो। (4) **उफ़!** कितनी गरमी है। (5) **हाय!** बाढ़ ने सब बर्बाद कर दिया। (6) **छिः!** कितनी बदबू है। **(ख)** 1. जो शब्द क्रिया की स्थान संबंधी विशेषताएँ बताएँ, वे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे–(1) मैं **यहाँ** बैठा हूँ, तुम जाओ। (2) **वहाँ** मेरा भाई रहता है। (3) बंदर **इधर** नहीं आते हैं। 2. जो शब्द क्रिया का परिमाण या मात्रा बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–(1) दुखी स्त्री **बहुत** रोई। (2) नेहा **कुछ** मुसकराई। (3) **उतना** बोझ उठाओ, **जितना** सँभाल सको। 3. जो शब्द क्रिया की रीति अर्थात् 'होने का ढंग' बताएँ, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–(1) हिरन **तेज़** दौड़ता है। (2) राघव **विनयपूर्वक** बोला। (3) कुत्ता **ज़ोर-ज़ोर से** भौंकने लगा। **(ग)** 1. प्रतिदिन 2. अब 3. इधर-उधर 4. आज 5. एकाएक 6. यथासमय 7. यहाँ **(घ)** 1. भीतर→क्रियाविशेषण 2. के भीतर→संबंधबोधक 3. से पहले→संबंधबोधक 4. ऊपर→क्रियाविशेषण 5. पहले → क्रियाविशेषण 6. ऊपर-नीचे→क्रियाविशेषण 7. साथ→संबंधबोधक **(ङ)** 1. पर, समानाधिकरण 2. और, समानाधिकरण 3. या, समानाधिकरण 4. तो, व्यधिकरण 5. क्योंकि, व्यधिकरण **(च)** 1. धन्यवाद! **कृतज्ञता** 2. वाह! **हर्ष** 3. उफ़! **शोकसूचक** 4. अच्छा! **स्वीकारबोधक** 5. धन्य! **कृतज्ञता** 6. सावधान **सावधानीबोधक** 7. छिः! **घृणासूचक** **(छ)** 1. हाय 2. वाह 3. हे भगवान 4. अच्छा 5. चुप **(ज)** 1. संबंधबोधक 2. कालवाचक 3. रीतिवाचक 4. क्रियाविशेषण 5. संबंधबोधक **(झ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓

17. वाक्य-विचार

(क) 1. सार्थक शब्दों का वह समूह, जो व्यवस्थित हो और अर्थ देता हो, उसे वाक्य कहते हैं। **उदाहरण**–समुद्र गहरा है। 2. वाक्य-रचना के आवश्यक तत्व हैं–कर्ता, कर्म या पूरक, क्रिया 3. **वाक्य के दो अंग होते हैं–(1) उद्‌देश्य**–वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया या विधान किया जाता है, उसे उद्‌देश्य कहते हैं। **(2) विधेय**–उद्‌देश्य के विषय में जो कुछ कहा या बताया जाए, उसे विधेय कहते हैं। **उदाहरण–**

वाक्य	**उद्‌देश्य**	**विधेय**
(1) पक्षी उड़ रहे हैं।	पक्षी	उड़ रहे हैं।
(2) दादा जी तीर्थ यात्रा पर जाएँगे।	दादा जी	तीर्थ यात्रा पर जाएँगे।

4. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं–(1) विधानवाचक वाक्य (2) निषेधवाचक वाक्य (3) प्रश्नवाचक वाक्य (4) विस्मयवाचक वाक्य (5) आज्ञावाचक वाक्य (6) संदेहवाचक वाक्य (7) इच्छावाचक वाक्य (8) संकेतवाचक वाक्य 5. रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं–**(1) सरल/साधारण वाक्य**–जिस वाक्य में एक ही क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं; जैसे–(i) मैंने बाग में मोर देखा। (ii) बिल्ली के आते ही चूहे भाग गए। **(2) संयुक्त वाक्य**–जिस वाक्य में दो अथवा दो से अधिक सरल वाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जोड़े गए हों, ऐसा वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाता है; जैसे–(i) वह बाग में गया किंतु मोर नहीं देख पाया। (ii) राजन बड़ा और माला छोटी है। **(3) मिश्र वाक्य**–जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं; जैसे–मालूम होता है कि आज वर्षा होगी। (प्रधान उपवाक्य-मालूम होता है; आश्रित उपवाक्य–कि आज वर्षा होगी।) **(ख)** 1. **प्रधान उपवाक्य**–यह किसी दूसरे उपवाक्य पर आश्रित नहीं होता है; अर्थात् स्वतंत्र उपवाक्य होता है; जैसे–मैं जानता हूँ कि आज पिता जी आएँगे। 'यहाँ मैं जानता हूँ' प्रधान उपवाक्य है। 2.

आश्रित उपवाक्य–ये उपवाक्य अन्य उपवाक्यों पर आश्रित होते हैं; जैसे–मैं जानता हूँ कि आज पिता जी आएँगे। यहाँ 'कि आज पिता जी आएँगे' प्रधान उपवाक्य पर आश्रित है, अत: आश्रित उपवाक्य है। 3. **समानाधिकरण उपवाक्य**–संयुक्त वाक्य में आया दूसरा प्रधान उपवाक्य समानाधिकरण उपवाक्य कहलाता है। यह किसी पर आश्रित नहीं होता है, केवल समुच्चयबोधकों की सहायता से पहले उपवाक्य से जुड़ा होता है; जैसे–राजू पढ़ रहा है और जय खेल रहा है। **(ग)** 1. (i) मैंने बाग में मोर देखा। (ii) बिल्ली के आते ही चूहे भाग गए। 2. (i) वह बाग में गया किंतु मोर नहीं देख पाया। (ii) राजन बड़ा और माला छोटी है। 3. (i) मालूम होता है कि आज वर्षा होगी। (ii) यह सत्य है कि वह चला गया। **(घ) उद्देश्य**–1. मीरा 2. सूर्य 3. कैलाश 4. स्वावलंबी व्यक्ति 5. कबूतर **विधेय**–1. हारमोनियम बजा रही है। 2. पूर्व दिशा में निकलता है। 3. नित्य व्यायाम करता है। 4. सदा सुखी रहता है। 5. उड़ गए। **(ङ)** 1. (i) वैध जी ने रोगी को दवा दी। (ii) बच्चे साइकिल चला रहे हैं। 2. (i) वह आज बाज़ार नहीं गया। (ii) ग्वाला दूध नहीं लाया। 3. (i) क्या तुम्हें गरमी लग रही है? (ii) प्याला किसने तोड़ा? 4. (i) शाबाश! यूँ ही उन्नति करते रहो। (ii) हाय! मेरी साइकिल चोरी हो गई। 5. (i) झूठ मत बोलो। (ii) कृपया बैठ जाइए। 6. (i) न जाने डाकिया कब आएगा। (ii) शायद कल वर्षा हो। 7. (i) ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे। (ii) भगवान तुम्हारा भला करे। 8. (i) यदि आँधी न आती, तो छप्पर टिका रहता। (ii) यदि समय पर मेहनत करते, तो परीक्षा में सफल हो जाते। **(च)** 1. प्रश्नवाचक 2. आज्ञावाचक 3. निषेधवाचक 4. विस्मयवाचक 5. इच्छावाचक 6. संदेहवाचक 7. प्रश्नवाचक 8. संकेतवाचक 9. प्रश्नवाचक 10. आज्ञावाचक **(छ)** 1. मिश्र वाक्य 2. सरल वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. मिश्र वाक्य 5. मिश्र वाक्य **(ज)** 1. पुलिस आई और चोर भाग गए। 2. राजू ने एक कछुआ देखा, जो बहुत बड़ा था। 3. यह सत्य है उसने झूठ बोला। 4. वह खाना खाते ही सो गया। 5. जब सूर्योदय हुआ, तो अँधेरा भाग खड़ा हुआ। **(झ)** 1. वह अभी गया। 2. क्या हमारे खेत में एक पेड़ है? 3. चोर को कोई आश्रय नहीं देगा। 4. मेरी इच्छा है मनोहर रेलगाड़ी से दिल्ली जाए। 5. पुलिस के आते ही कौन भाग गए? 6. घर में कौन आए हैं? 7. मैंने कोई साइकिल नहीं खरीदी? 8. तुम्हारा कुत्ता काला है। 9. ईश्वर करे वह लखनऊ में रहने लगे। 10. मोहन प्रात: शीघ्र उठो। **(ञ)** 1. उद्देश्य 2. कुत्ता 3. आठ 4. क्रिया 5. तीन **(ट)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

18. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. वाक्य में भावानुसार विभिन्न स्थितियों को प्रकट करने के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए गए हैं। इन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। भावबोध को सरल बनाने के लिए वाक्यों में विराम -चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। 2. लेखन-कार्य में विराम-चिह्नों का अत्यंत महत्व है। इन चिह्नों के अभाव में न तो कथन ही स्पष्ट हो सकता है और न उसका भाव ही। **उदाहरण–रोको, मत जाने दो। रोको मत, जाने दो।** इन वाक्यों में अल्प-विराम का स्थान बदल देने से वाक्यों के अर्थ बदल गए हैं। यदि विराम-चिह्नों का प्रयोग न किया जाए तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और वाक्य समझ में नहीं आएँगे। **(ख)** 1. अल्पविराम का प्रयोग निम्न परिस्थितियों में किया जाता है–(क) एक ही वाक्य में प्रयुक्त समान शब्दों को अलग रूप से दर्शाने के लिए; जैसे–(i) राकेश, मोहित, अजय और गोपाल एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। (ii) अहिंसा, सत्य, असत्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य अपनाकर व्यक्ति निखर उठता है। (ख) उपवाक्यों को अलग करने के लिए; जैसे–(i) वह खाता तो बहुत है, पर उसे लगता नहीं। (ii) वह सबसे पहले आता है, सबसे बाद में जाता है। **(ग)** उद्धरण से पहले–अध्यापक ने कहा, ''सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।'' **(घ)** संबोधन

को शेष वाक्य से अलग करने के लिए तथा 'हाँ' या 'नहीं' के पश्चात्–(i) राहुल, समय पर विद्यालय पहुँच जाना। हाँ, पहुँच जाऊँगा। (ii) क्या वे तुम्हारा समर्थन करेंगे। नहीं, उन्होंने मना कर दिया है। **(ङ)** पत्र में अभिवादन, समाप्ति, पता, दिनांक आदि के लिए–**अभिवादन में**–पूज्य पिता जी, **समाप्ति में**–भवदीय, आपका स्नेहाकांक्षी, आपका आज्ञाकारी, **पता**–12, नेहरू नगर **दिनांक**–18 सितंबर, 2023 2. जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा कम रुकना होता है, वहाँ अर्धविराम लगाया जाता है; जैसे–(i) सूर्योदय हो गया; पक्षी उड़ने लगे; हवा भी मंथर गति से चल पड़ी। (ii) जय, रवि, अनुज और रोहित आए हैं; वे सब पिकनिक पर जाएँगे। 3. उदाहरण या निम्नांकित का संकेत करने के लिए तथा नाटक के संवादों में उपविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे–(i) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ii) उदाहरणस्वरूप निम्न विशेषण प्रस्तुत है: **नाटक के संवादों में–बाबा भारती :** कहो खड्ग सिंह, कैसे आना हुआ? **खड्ग सिंह :** सुल्तान की चाह खींच लाई। इसके अतिरिक्त जहाँ किसी बात को अलग करके दिखाना हो, वहाँ भी इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे- दहेज: एक अभिशाप आदि। 4. (i) दो शब्दों (जिनके बीच कोई संधि नहीं होती) को जोड़ने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–सुख-दु:ख, रात-दिन, छोटा-बड़ा, शत्रु-मित्र, भाई-बहन, माता-पिता आदि। (ii) शब्दों के युग्मों के बीच में; जैसे–कल-कल, पल-पल, जैसे-जैसे, तिल-तिल, बार-बार आदि। (iii) तुलनात्मक 'सा', 'से', 'सी' से पहले; जैसे–ज़रा-सा, छोटे-से, थोड़ी-सी आदि। (iv) जब दो शब्दों में एक सार्थक व दूसरा निरर्थक हो; जैसे–रोटी-वोटी, थाली-वाली, चाय-वाय आदि। 5. उदाहरण या निम्नांकित का संकेत करने के लिए तथा नाटक के संवादों में उपविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे–(i) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (ii) उदाहरणस्वरूप निम्न विशेषण प्रस्तुत है: **नाटक के संवादों में–बाबा भारती :** कहो खड्ग सिंह, कैसे आना हुआ? **खड्ग सिंह :** सुल्तान की चाह खींच लाई। इसके अतिरिक्त जहाँ किसी बात को अलग करके दिखाना हो, वहाँ भी इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे- दहेज: एक अभिशाप आदि। 6. जब किसी पद या वाक्यांश के अर्थ को उसी वाक्य के भीतर स्पष्ट करने की आवश्यकता समझी जाती हो, तब कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है; जैसे–वह समदर्शी (सबको समान दृष्टि से देखने वाला) है। **(ग)** 1. जो कुछ भी होगा, देखा जाएगा। 2. 'कपीश' शब्द में दीर्घ संधि है। 3. अध्यापक ने कहा, ''पृथ्वी गोल है।'' 4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के महान कवि थे। 5. ईश्वर! तू बड़ा दयावान है। 6. मित्र, मुझे आज घर पर आवश्यक कार्य है। 7. कहो राजीव, पढ़ाई कैसी चल रही है। 8. ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है''–लोकमान्य तिलक। 9. मीरा, श्वेता, गरिमा और अनुराधा खेल रही हैं। 10. मोटरकार, रेलगाड़ी, बस, हवाई जहाज़, पानी के जहाज़ आदि यातायात के प्रमुख साधन हैं। 11. मैं बहुत दिनों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। 12. बस हो गया, रहने दीजिए। 13. तुम्हारा पत्र मिला; पढ़कर प्रसन्नता हुई। 14. वाह! तुमने तो बाज़ी मार ली। 15. अध्यापक: ''भारत के प्रधानमंत्री कौन थे?'' छात्र: ''पंडित जवाहरलाल नेहरू।'' 16. छि:! चोरी करते हो, तुम्हें शर्म नहीं आती। 17. वह खीझकर बोला, ''क्या चला जाऊँ?''

हिंदी व्याकरण–8

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने विचारों को अन्य लोगों के प्रति प्रकट करता है तथा अन्य लोगों के विचार समझ पाता है, उसे भाषा कहते हैं। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। 3. ध्वनि-चिह्नों को लिखने की रीति को 'लिपि' कहते हैं। 4. भाषा के दो

भेद हैं–(1) मौखिक (2) लिखित। 5. भाषा के दो रूप पाए जाते हैं–(1) मौखिक (2) लिखित। 5. भाषा में एकरूपता बनाए रखने के लिए उसे जो रूप दिया जाता है, वह भाषा का मानक रूप होता है। इसके अंतर्गत वर्ण या शब्द की एक और समान वर्तनी के रूप को मान्यता दी जाती है; जैसे–अन्त-अंत (मानक रूप), ठण्ड-ठंड (मानक रूप), गयी-गई (मानक रूप), चाहिये-चाहिए (मानक रूप)। 6. **हिंदी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ–** • वास्तव में हिंदी एक भाषा न होकर भाषा-समूह है; जिसमें अनेक भाषाएँ, उपभाषाएँ, बोलियाँ तथा उपबोलियाँ सम्मिलित हैं। • भारत के दक्षिणी भाग (दक्षिणी भारत) में बोली जाने वाली हिंदी 'दक्षिणी हिंदी' कहलाती है। • हिंदी की खड़ी बोली को राष्ट्रभाषा का स्थान दिया गया है। • हिंदी में जो कुछ बोला जाता है, वही लिखा जाता है। • हिंदी का शब्द-भंडार विपुल है। संस्कृत के साथ-साथ इसने अपने विकास में उर्दू, अंग्रेज़ी, फ़ारसी, अरबी, पुर्तगाली, चीनी आदि भाषाओं के शब्दों को आत्मसात किया है। • हिंदी ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा में सक्षम है। • हिंदी भारत की राष्ट्रीय एकता का माध्यम रही है। **(ख)** 1. ध्वनि 2. संस्कृत 3. हिंदी 4. नियमावली 5. सीमित **(ग)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(घ)** 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब)

2. वर्ण-विचार

(क) 1. भाषा की मूल (सबसे छोटी) इकाई के लिपिबद्ध रूप को वर्ण कहते हैं। वर्ण के दो भेद हैं–(1) स्वर (2) व्यंजन। 2. किसी भाषा के सभी वर्णों का व्यवस्थित एवं क्रमिक समूह वर्णमाला कहलाता है। हिंदी की वर्णमाला में निहित वर्णों का परिचय निम्न प्रकार है–

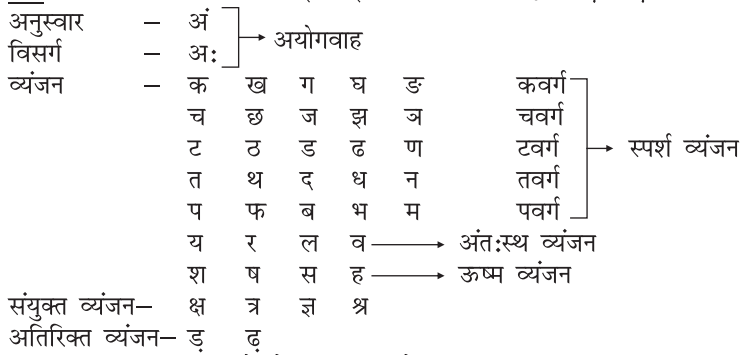

3. **ह्रस्व स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा काल) लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है–अ, इ, उ, ऋ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं। **दीर्घ स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना समय (दो मात्रा काल) लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। **प्लुत स्वर**–जिस स्वर के उच्चारण में तिगुना समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। प्राय: ह्रस्व और दीर्घ दोनों ही प्रकार के स्वर किसी को पुकारने या कोई विशेष भाव प्रकट करते समय सामान्य उच्चारण से अधिक समय लेते हैं। उस समय ये 'प्लुत स्वर' हो जाते हैं। इस स्वर का कोई चिह्न नहीं होता। इसके लिए (३) का अंक लगाया जाता है; जैसे–ओ३म। 4. बनावट के आधार पर स्वरों के दो भेद हैं–(i) **मूल स्वर**–'अ', 'उ', 'इ' तथा 'ऋ' को मूल स्वर माना जाता है। (ii) संधि स्वर–'आ', 'ई', 'ऊ', 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' को संधि स्वर माना जाता है।

5. ऐसे वर्ण जो स्वतंत्र रूप से नहीं बोले जाते, जिन्हें स्वर या उनकी मात्राओं के बाद लगाकर ही प्रयोग किया जा सकता है, अयोगवाह कहलाते हैं। ये हैं–अं तथा अः। स्वर तथा व्यंजन से भिन्न ध्वनि होने के कारण अं तथा अः का किसी से योग नहीं होता, इसलिए ये अयोगवाह कहलाते हैं। 6. **ड़** और **ढ़** स्वनिम ध्वनियाँ हैं। ये **ड** और **ढ** से विकसित हुई हैं। शब्द के प्रारंभ में **ड** और **ढ** ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं; परंतु शब्द के मध्य तथा अंत में ये स्वनिम ध्वनियों में बदलकर **ड़** और **ढ़** हो जाती हैं; जैसे–**ड**→ डमरू, **ड़**→ पकड़, सड़क **ढ**→ढक्कन, **ढ़**→पढ़, चढ़ **(ख)** 1. दो अलग-अलग व्यंजनों के मेल को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं। इनकी रचना तथा प्रयोग निम्न प्रकार हैं–क्ष = क् + ष (कक्ष, पक्ष, रक्षा) त्र = त् + र (पत्र, त्रय, यत्र) ज्ञ = ज् + ञ (यज्ञ, अज्ञ, प्रज्ञा) श्र = श् + र (श्रम, आश्रम) 2. जो व्यंजन दो समान व्यंजनों के योग से बनता है, वह द्वित्व व्यंजन कहलाता है। उदाहरण–क् + क = क्क (लक्कड़, शक्कर) प् + प = प्प (ठप्पा, छप्पर) त् + त = त्त (पत्ता, छत्ता) न् + न = न्न (गन्ना, पन्ना) 3. विदेशी शब्दों (अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि) के प्रयोग के कारण कुछ ध्वनियाँ भारत में स्थान पा गई हैं; जैसे–क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आदि। ये आगत ध्वनियाँ कहलाती हैं। ये व्यंजनों के रूप में हिंदी में प्रयोग की जाती हैं; जैसे–ताक़, ख़त, बाग़, सज़ा, फ़न आदि। आगत ध्वनि (ऑ) हिंदी में अंग्रेज़ी से आई है। 'टॉफ़ी', 'डॉक्टर', 'कॉलेज', 'हॉकी', ऑफ़िस' आदि आगत ध्वनि (ऑ) के उदाहरण हैं। **(ग)** 1. कंठ 2. मूर्धन्य 3. कंठ और तालु 4. दंतोष्ठ्य 5. नासिक्य **(घ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(ङ)** 1. क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स। 2. (ग घ ङ) (ज झ ञ) (ड ढ ण) (द ध न) (ब भ म) (य र ल व) (ह) (सभी स्वर) 3. (क, ग, ङ) (च, ज, ञ) (ट, ड, ण) (त, द, न) (प, ब, स) (य, र, ल, व) 4. (ख घ) (छ झ) (ठ ढ) (थ ध) (फ म) (श ष स ह) (च) **महाराज**–म् + अ + ह् + आ + र् + आ + ज् + अ **रक्षा**–र् + अ + क् + ष् + आ **हॉकी**–ह् + ऑ + क् + ई **श्रोता**–श् + र् + ओ + त् + आ **कॉफ़ी**–क् + ऑ + फ़् + ई **कृषक**–क् + ऋ + ष् + अ + क् + अ **मालामाल**– म् + आ + ल् + आ + म् + आ + ल् + अ **ताँगा**–त् + आ + अँ + ग् + आ **चाँद**–च् + आ + अँ + द् + अ **ज्ञानी**–ज् + ञ् + आ + न् + ई **ट्रक**–ट् + र् + अ + क् + अ **वर्षा**–व् + अ + र् + ष् + आ **(छ)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

3. शब्द-विचार

(क) 1. निश्चित अर्थ को अभिव्यक्त करने वाले वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं; जैसे–जल, जलज, जगत, सजल आदि। 2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द को पद कहते हैं। **उदाहरण**–रवि, बाज़ार, से, फल, लाया–ये पाँचों शब्द हैं। 'रवि बाज़ार से फल लाया'–वाक्य में प्रयुक्त होने पर ये शब्द व्याकरण के नियमों से बँधकर 'शब्द' से 'पद' बन गए हैं। 3. व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं–(i) रूढ़, (ii) यौगिक, (iii) योगरूढ़ 4. स्रोत के आधार पर शब्द के पाँच भेद हैं–**(i) तत्सम शब्द, उदाहरण**–रात्रि, दिवस, सूर्य, दधि। **(ii) तद्भव शब्द, उदाहरण**–रात्रि = रात, दिवस = दिन, सूर्य = सूरज, दधि = दही। **(iii) देशज शब्द, उदाहरण**–भोंदू, थप्पड़, झाड़ू, रोटी। **(iv) विदेशी शब्द, उदाहरण**–आसमान, कमर, चेचक, चम्मच। **(v) मिश्रित शब्द, उदाहरण**–घड़ीसाज़=घड़ी (हिंदी)+साज़ (अरबी), टिकटघर=टिकट (अंग्रेज़ी)+घर (हिंदी), रेलगाड़ी=रेल (अंग्रेज़ी)+गाड़ी (हिंदी),

लाठीचार्ज=लाठी (हिंदी)+चार्ज (अंग्रेज़ी)। 5. जिन शब्दों के खंड सार्थक न हों तथा सामान्य एवं निश्चित अर्थ का बोध कराएँ, उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है; जैसे–मेला, देश, हाथी, घोड़ा, शेर, कुत्ता आदि। ये शब्द विभिन्न ध्वनियों (जैसे- 'म् + ए + ल् + आ' आदि।) से मिलकर बने हैं, किंतु इनके खंडों का कोई अर्थ नहीं है। ऐसे शब्द, जो दो या अधिक शब्दों के मेल से बने हों, परंतु अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे–जलज (जल + ज)। 'ज' का अर्थ है– 'उत्पन्न हुआ'। इस आधार पर जल में उत्पन्न प्रत्येक वस्तु जलज नहीं कहलाती। यह शब्द कमल के लिए रूढ़ हो गया है। इसी प्रकार 'चारपाई' शब्द अपने रूढ़ अर्थ 'खाट' के लिए प्रसिद्ध हो गया है। जलद (बादल), चतुरानन (ब्रह्मा), नीलकंठ (शिव), लंबोदर (गणेश), दशानन (रावण) आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। **(ख)** 1. **तद्भव शब्द**–तद् का अर्थ है 'उससे' (संस्कृत से) और 'भव' का अर्थ है 'उत्पन्न हुए' अर्थात् संस्कृत से उत्पन्न हुए शब्द। संस्कृत भाषा के वे शब्द जो रूप बदलकर हिंदी में स्थान पा गए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–रात्रि = रात, दिवस = दिन, कर = हाथ, सूर्य = सूरज, दधि = दही, घृत = घी आदि। 2. **योगरूढ़ शब्द**– ऐसे शब्द, जो दो या अधिक शब्दों के मेल से बने हों, परंतु अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे–जलज (जल + ज)। 'ज' का अर्थ है– 'उत्पन्न हुआ'। इस आधार पर जल में उत्पन्न प्रत्येक वस्तु जलज नहीं कहलाती। यह शब्द कमल के लिए रूढ़ हो गया है। **(ग) मक्षिका**–मक्खी **अश्रु**–आँसू **अग्र**–अगला **घट**–घड़ा **ओष्ठ**–ओठ **काष्ट**–काठ **भ्रमर**–भौंरा **दंत**–दाँत **निद्रा**–नींद **(घ) भोजनालय**–यौगिक **रथ**–रूढ़ **डाकघर**–यौगिक **नीलकंठ**–योगरूढ़ **पीतांबर**–योगरूढ़ **वनराज**–यौगिक **जलद**–योगरूढ़ **गजानन**–योगरूढ़ **चतुरानन**–योगरूढ़ **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. सार्थक 2. रूढ़ 3. यौगिक 4. रूढ़ 5. योगरूढ़ **(छ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ)

4. उपसर्ग और प्रत्यय

(क) 1. जो शब्द या शब्दांश किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देता है, उसे उपसर्ग कहते हैं। **उदाहरण–**

शब्द	**उपसर्ग + शब्द**	**निर्मित शब्द**
गुण	अव + गुण	अवगुण
कार	प्र + कार	प्रकार
वेद	उप + वेद	उपवेद

2. प्रत्यय उस शब्द या शब्दांश को कहते हैं, जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में नवीनतम परिवर्तन अथवा विशेषता ला देता है। **उदाहरण–**

शब्द + प्रत्यय	**निर्मित शब्द**	**शब्द + प्रत्यय**	**निर्मित शब्द**
डर + ता	डरता	सूख + आ	सूखा
पढ़ + ना	पढ़ना	निर्भर + ता	निर्भरता
त्याग + ई	त्यागी	बन + आवट	बनावट

3. वह प्रत्यय जो क्रिया के मूल धातु रूप के साथ जुड़कर संज्ञा और विशेषण की रचना करता है, कृत प्रत्यय कहलाता है। 4. कृत प्रत्यय से बनने वाले शब्दों को कृदंत कहते हैं। कृदंत के पाँच भेद हैं–(1) कर्तृवाचक (2) कर्मवाचक (3) करणवाचक (4) भाववाचक (5) क्रियार्थक 5. कृत प्रत्ययों से संज्ञा व विशेषण शब्द बनाए जाते हैं। **उदाहरण–**अन + मोल = अनमोल, घट + इया = घटिया। 6. जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जुड़कर नए शब्दों की रचना करता है, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं। **उदाहरण–**बनारस + ई = बनारसी।

(ख) 1. उपसर्ग तथा प्रत्यय का एक साथ प्रयोग–

उपसर्ग	+ **मूल शब्द**	+ **प्रत्यय**	= **निर्मित शब्द**	**उपसर्ग**	+ **मूल शब्द**	+ **प्रत्यय**	= **निर्मित शब्द**
सु	+ लभ	+ ता	= सुलभता	बद	+ नसीब	+ ई	= बदनसीबी
बे	+ चैन	+ ई	= बेचैनी	निर्	+ दय	+ ता	= निर्दयता
उप	+ कार	+ क	= उपकारक	अप	+ मान	+ इत	= अपमानित
नि	+ लंब	+ ईत	= निर्लंबित	बद	+ चलन	+ ई	= बदचलनी

2. दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग

मूल शब्द	+ **प्रत्यय**	+ **प्रत्यय**	= **निर्मित शब्द**	**मूल शब्द**	+ **प्रत्यय**	+ **प्रत्यय**	= **निर्मित शब्द**
बच्चा	+ पन	+ आ	= बचपना	राष्ट्र	+ ईय	+ ता	= राष्ट्रीयता
बन	+ आवट	+ ई	= बनावटी	भूत	+ इक	+ ता	= भौतिकता
भारत	+ ईय	+ ता	= भारतीयता	दया	+ लु	+ ता	= दयालुता

(ग) **प्र**–प्रबल, प्रगति **कु**–कुढंग, कुमार्गी **परा**–पराजय, पराभव **सम**–समकोण, समकालीन **अप**–अपव्यय, अपकीर्ति **सम्**–सम्मेलन, सम्मान **दुर्**–दुर्बल, दुर्गति **अप**–अपमान, अपशब्द **गैर**–गैरकानूनी, गैरमुमकिन **उप**–उपवन, उपनाम **हम**–हमउम्र, हमनाम **अध**–अधखिला, अधपका **सु**–सुपुत्र, सुमार्ग **वि**–विशेष, वियोग **(घ)** **अक**–गायक, पाठक **ऐया**–गवैया, पढ़ैया **आ**–देखा, समझा **औना**–बिछौना, खिलौना **आवा**–दिखावा, भुलावा **त**–बचत, खपत **आवट**–बनावट, लिखावट **ता**–खाता, जाता **(ङ)** 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

5. समास

(क) 1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। **उदाहरण**–अमृतधारा (अमृत की धारा), गुरुदक्षिणा (गुरु के लिए दक्षिणा)। 2. समासयुक्त पद को समस्तपद कहते हैं। समास करते समय वाक्यांशों में पदों के बीच से विभक्ति-चिह्न आदि हटा देने से समासयुक्त पद प्राप्त होता है। यह समस्तपद कहलाता है; जैसे–देशवासी, युद्धवीर, पराधीन आदि। समासयुक्त पद में दो पद होते हैं–पहला पद 'पूर्व पद' तथा दूसरा पद 'उत्तर पद' कहलाता है। **उदाहरण**–

समस्तपद	**पूर्व पद**	**उत्तरपद**	**विग्रह**
गंगाजल	गंगा	जल	गंगा का जल
ज्ञानयुक्त	ज्ञान	युक्त	ज्ञान से युक्त
यशप्राप्त	यश	प्राप्त	यश को प्राप्त

3. जिस सामासिक पद (समस्तपद) का दूसरा (उत्तर) पद प्रधान हो, उसे 'तत्पुरुष समास' कहते हैं। तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छह भेद होते हैं–(i) कर्म तत्पुरुष (ii) करण तत्पुरुष (iii) संप्रदान तत्पुरुष (iv) अपादान तत्पुरुष (v) संबंध तत्पुरुष (vi) अधिकरण तत्पुरुष 4. तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छह उपभेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष (पूर्व पद में कर्म कारक के विभक्ति-चिह्न 'को' का लोप)–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
परलोकगमन	परलोक को गमन	जेबकतरा	जेब को काटने वाला
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	स्वर्गगत	स्वर्ग को गत

(ii) करण तत्पुरुष (पूर्व पद में करण कारक के विभक्ति-चिह्न 'से, द्वारा, के द्वारा' का लोप)–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
भुखमरा	भूख से मरा	अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	हस्तलिखित	हस्त से लिखित

ईश्वरप्रदत्त	ईश्वर द्वारा प्रदत्त	गुणयुक्त	गुण से युक्त

(iii) संप्रदान तत्पुरुष (पूर्व पद में संप्रदान कारक के विभक्ति-चिह्न 'के लिए' का लोप)–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	मालगोदाम	माल के लिए गोदाम

(iv) अपादान तत्पुरुष (पूर्व पद में अपादान कारक के विभिक्ति-चिह्न 'से' (अलग होने के भाव) का लोप)–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
धनहीन	धन से हीन	गुणहीन	गुण से हीन
देशनिकाला	देश से निकाला	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट

(v) संबंध तत्पुरुष (पूर्व पद में संबंध कारक के विभक्ति-चिह्न 'का, के, की' का लोप)–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
गंगातट	गंगा का तट	प्रसंगानुसार	प्रसंग के अनुसार
जीवनसाथी	जीवन का साथी	राजकुमारी	राजा की कुमारी
देवमूर्ति	देव की मूर्ति	पराधीन	पर (दूसरे) के अधीन

(vi) अधिकरण तत्पुरुष (पूर्व पद में अधिकरण कारक के विभक्ति-चिह्न 'में, पर' का लोप)–

समस्तपद	**विग्रह**	**समस्तपद**	**विग्रह**
सिरदर्द	सिर में दर्द	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
लोकप्रिय	लोक में प्रिय	गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश

5. जिस समास में दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य (महा+पुरुष=महापुरुष) अथवा उपमेय-उपमान (नर+सिंह=नरसिंह) संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। 6. जिस सामासिक शब्द का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो और किसी समूह का बोध कराता हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे-नवग्रह (नौ ग्रहों का समूह) 7. जहाँ पूर्व पद और उत्तर पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है; जैसे–'लंबोदर' अर्थात् लंबा है उदर जिसका (गणेश)। **(ख)** 1. जिस समस्तपद में दोनों पद समान हों, वहाँ द्वंद्व समास होता है। इसमें दोनों पदों को मिलाते समय मध्य स्थित योजक लुप्त हो जाता है; जैसे-'दाल और रोटी' का समस्तपद होगा दाल-रोटी; यहाँ दोनों पद समान हैं। समास करते समय 'और' का लोप हो गया है। 2. जिस समास में पहला (पूर्व) पद अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसका पहला पद प्रधान होता है। इस प्रक्रिया से बना समस्तपद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है; जैसे-प्रति + पल = प्रतिपल। यहाँ 'प्रति' अव्यय है। प्रतिपल समस्तपद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है। **(ग)** 1. **कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर–** कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान तथा दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है; जैसे- नीलकंठ में नील (विशेषण) और कंठ (विशेष्य) या घनश्याम में घन (उपमान) के समान श्याम (उपमेय); परंतु बहुव्रीहि समास में सारा समस्तपद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है। बहुव्रीहि में नीलकंठ का विग्रह होगा–नीला है कंठ जिसका (शंकर), घनश्याम का विग्रह होगा–घन के समान है जो (कृष्ण)। 2. **बहुव्रीहि और द्विगु समास में अंतर**–बहुव्रीहि समास में संपूर्ण सामासिक शब्द ही विशेषण का कार्य करता है; जैसे–त्रिफला = तीन फलों वाला। द्विगु समास में समस्तपद का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण होता है और उत्तरपद विशेष्य होता है; जैसे–त्रिफला = तीन फलों का समूह। **(घ)** **पंचवटी**-पाँच वटों का समूह (द्विगु समास) **देशभक्ति**-देश के लिए भक्ति (संप्रदान तत्पुरुष

समास) **गुणहीन**–गुण से हीन (अपादान तत्पुरुष समास) **यशप्राप्त**–यश को प्राप्त (कर्म तत्पुरुष समास) **(ङ)** 1. **पंचरत्न (द्विगु)** पाँच रत्नों का समूह **पंचरत्न (बहुव्रीहि)** पाँच रत्नों वाला 2. **त्रिनेत्र (द्विगु)** तीन नेत्रों का समूह **त्रिनेत्र (बहुव्रीहि)** तीन नेत्र हैं जिसके (शिव) **(च)** 1. कार्यकुशल (अधिकरण तत्पुरुष समास) 2. गुण-दोष (द्वंद्व समास) 3. गंगातट (संबंध तत्पुरुष समास) 4. नीलगगन (कर्मधारय समास) **(छ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ **(ज)** 1. समस्तपद 2. विभक्ति 3. यौगिक 4. के 5. के लिए

6. संधि

(क) 1. जब दो या दो से अधिक वर्ण परस्पर मिलते हैं, तो उनके रूप में विकार आ जाता है। इसी रूपांतर को संधि कहते हैं। संधि मुख्यत: तीन प्रकार की होती है–(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि। 2. **संधि का महत्व**–संधि करने और संधि-विच्छेद की क्रिया का ज्ञान होने पर बड़े व जटिल शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलती है। 3. दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। 4. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–(1) **दीर्घ संधि**–उदाहरण–

अ + अ = आ सत्य + अर्थ = सत्यार्थ
अ + आ = आ परम + आत्मा = परमात्मा

(2) **गुण संधि**–उदाहरण–

अ + इ = ए भारत + इंद्र = भारतेंद्र अ + ई = ए गण + ईश = गणेश

(3) **वृद्धि संधि**–उदाहरण–

अ + ए = ऐ एक + एक = एकैक अ + ऐ = ऐ राज + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य

(4) **यण् संधि**–उदाहरण–

अति + अधिक = अत्यधिक सु + अल्प = स्वल्प

(5) **अयादि संधि**–उदाहरण–

ए + अ = अय शे + अन = शयन
ऐ + अ = आय नै + अक = नायक

5. जब पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन होता है और दूसरे शब्द के प्रारंभ में स्वर या व्यंजन कोई भी वर्ण होता है, तो इनके परस्पर मेल को व्यंजन संधि कहते हैं। **(ख)** 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) **(ग)** 1. परमेंद्र 2. (त् + च) = उच्चारण 3. (: + च) = निश्चय 4. (: + ह) = मनोहर 5. (औ + अ) = पावक 6. (इ + इ) = कवींद्र **(घ) अति** + **उत्तम** = अत्युत्तम, यण् संधि **पर** + **उपकार** = परोपकार, गुण संधि **रजनी** + **ईश** = रजनीश, दीर्घ संधि **सु** + **आगत** = स्वागत, यण् संधि **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **(च)** 1. मेल 2. वर्णों 3. व्यंजन 4. स्वर **(छ)** 1. महा + औषधि 2. गण् + ईश 3. देव + आलय 4. अति + अधिक 5. राजा + ऋषि 6. महा + उत्सव 7. सत् + जन 8. जगत् + नाथ 9. दिक् + दर्शन

7. शब्द-भंडार

(क) 1. परस्पर समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। यद्यपि सभी शब्द संदर्भानुसार अपना स्वतंत्र अर्थ रखते हैं और संपूर्ण रूप से कोई शब्द किसी का पर्याय नहीं होता, फिर भी कुछ समानताओं के आधार पर उन्हें पर्यायवाची मान लिया गया है। **उदाहरण**–(1) आँख-दृग, लोचन, चक्षु, नेत्र, नयन (2) ईश्वर-ईश, दीनबंधु, भगवान, परमेश्वर, जगदीश, प्रभु, परमात्मा 2. किसी शब्द के विरोधी अर्थ वाले शब्द को विलोम शब्द कहते हैं। **उदाहरण–**

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
चल	अचल	सभ्य	असभ्य	साकार	निराकार
चर	अचर	समान	असमान	सक्रिय	निष्क्रिय

3. प्रत्येक भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं, जो एक से अधिक अर्थ देते हैं। वे शब्द प्रसंगानुसार अलग-अलग अर्थ देते हैं। इन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **प्रकृति**-मूलावस्था, कुदरत, स्वभाव। (2) **तारा**-आँखों की पुतली, नक्षत्र 4. कुछ शब्द उच्चारण की दृष्टि से इतने मिलते-जुलते हैं कि प्रयोगकर्ता उन्हें एक ही मान बैठता है, जबकि उनके अर्थ पूर्णत: भिन्न होते हैं। इन्हें समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–

शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
अनुसार	अनुरूप	अवलंब	सहारा
अनुस्वार	(ं)	अविलंब	शीघ्र

5. प्रत्येक भाषा में ऐसे शब्द बड़ी संख्या में पाए जाते हैं, जिनके अर्थ समान प्रतीत होते हैं परंतु उनमें सूक्ष्म अर्थ भेद होता है। ऐसे शब्दों को एकार्थक प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **उद्योग**–मेहनत, **प्रयास**–कोशिश (2) **अनुरोध**–बराबर के व्यक्ति से की गई प्रार्थना, **प्रार्थना**–बड़ों से की गई प्रार्थना 6. वह उपयुक्त संक्षिप्त शब्द, जो वाक्यांश अथवा अनेक संबंधित शब्दों के लिए शीर्षक का कार्य करता है, वाक्यांश के लिए एक शब्द कहलाता है। **उदाहरण**–(1) लोगों में चली आती सुनी-सुनाई बात–किंवदंती (2) तेज़ बुद्धि वाला–कुशाग्रबुद्धि **(ख)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब) **(ग)** 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) **(घ)** 1. जल, प्राण 2. पराजय, माला 3. जवाब, उत्तर दिशा 4. चिट्ठी, पत्ता 5. प्रारंभ, वगैरह 6. शयन, स्वर्ण 7. निचला होंठ, अंतरिक्ष 8. कानून, ब्रह्मा 9. आँखों की पुतली, नक्षत्र 10. जल, चमक **(ङ)** 1. अकथ-जो न कहा जा सके, अथक-बिना थके 2. अतल-गहरा, अतुल-पर्याप्त 3. आगम-शास्त्र, अगम-जहाँ जाना असंभव हो 4. द्रव-तरल पदार्थ, द्रव्य-धन 5. नीयत-इरादा, नियत-निश्चित 6. अनुसार-अनुरूप, अनुस्वार-(ं) 7. समान-बराबर, सम्मान-आदर 8. उधार-कर्ज, ऋण, उद्धार-मुक्ति, छुटकारा **(च)** 1. **श्रम**–केवल शारीरिक शक्ति से कार्य करना, **परिश्रम**–शरीर और मन से कोई कार्य करना 2. **घर**–परिवार से संबंध रखने वाला निवास स्थान, **आवास**–रहने का कोई भी स्थान 3. **विवेक**–अच्छाई और बुराई की पहचान, **ज्ञान**–किसी विषय या वस्तु की जानकारी 4. **अमूल्य**–जिसका मूल्य न आँका जा सके, **बहुमूल्य**–बहुत कीमती 5. **अनबन**–मनमुटाव **खटपट**-छोटा-मोटा झगड़ा 6. **शत्रु**–प्राण ले लेने का इच्छुक, **विरोधी**–किसी विषय को लेकर विरोध रखने वाला **(छ)** 1. मितभाषी 2. उपकृत 3. गोपनीय 4. धर्म प्रवर्तक 5. आयात 6. कटुभाषी 7. मुमुक्षू 8. निरुद्देश्य **(ज)** 1. आकाश में घूमने वाला 2. जो प्राणों का दु:ख देने वाला हो 3. जो व्यक्ति अपनी बुराई के लिए प्रसिद्ध हो 4. मास में एक बार होने वाला 5. जिसमें जानने की इच्छा हो 6. जिसके पास धन न हो 7. जिसका कोई आधार न हो 8. छिपकर टोह लेने वाला

8. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाए, उसे मुहावरा कहते हैं। **उदाहरण**–खरी-खोटी सुनाना-बुरा भला कहना। 2. लोक में प्रचलित उक्ति या कथन को लोकोक्ति कहते हैं। 3. **मुहावरे तथा लोकोक्ति में अंतर**–(1) मुहावरा वाक्य खंड होता है, जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है। (2) मुहावरे वाक्य के बीच में प्रयोग किए जाते हैं, अत: वाक्य का अंग बन जाते हैं। लोकोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती हैं, उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य के अंत में उदाहरणस्वरूप किया जाता है। (3) लोकोक्ति अपने आप में एक पूर्ण वाक्य है, जो एक कहावत के रूप में प्रयुक्त होता है। (4) पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति के स्वरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, जबकि मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं। **(ख)** 1. (य) 2. (ष) 3.(अ) 4. (व) 5. (श) 6. (ब) 7. (स) 8. (द) 9. (र)

10. (ल) **(ग)** 1. **धोखा करना, वाक्य-प्रयोग**–बुद्धूमल लाला अमीरचंद से चार सौ बीसी करके भाग गया। 2. **घर में सुविधा होना, वाक्य-प्रयोग**–तुम तो अंग्रेज़ी अपने मामा जी से पढ़ लिया करो, घर में ही गंगा बह रही हो तो बाहर भटकने से क्या लाभ है? 3. **छोटी सफलता पर घमंड करना, वाक्य-प्रयोग**–बेटे की नौकरी क्या लग गई, रामदयाल के व्यवहार से ऐसा लगता है, मानो चींटी के पंख निकल आए हैं। 4. **बहुत सम्मान देना, वाक्य-प्रयोग**–पाँच सौ मीटर की दौड़ में प्रथम आने पर छात्रों ने राहुल को सिर आँखों पर बैठा लिया। 5. **लज्जित होना, वाक्य-प्रयोग**–दारोगा ने रिश्वत में पाँच सौ रुपये लेकर चुल्लू भर पानी में डूब मरने का कार्य किया। 6. **बहुत क्रोधित होना, वाक्य-प्रयोग**–मुहूर्त से पहले ही खिड़कियों के शीशे टूटने पर पिता जी अंगारे उगलने लगे। 7. **बहुत हानि होना, वाक्य-प्रयोग**–नए व्यापार में हानि से सेठ जी की कमर ही टूट गई। 8. **छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना, वाक्य-प्रयोग**– इसमें आश्चर्य की क्या बात है, सलीम का तो स्वभाव ही है राई का पहाड़ बनाना। 9. **लज्जा अनुभव करना, वाक्य-प्रयोग**–नकल करते हुए पकड़े जाने पर हरीश का मुँह उतर गया। **(घ)** 1. (य) 2. (र) 3. (ल) 4. (व) 5. (अ) 6. (ब) 7. (स) 8. (द) **(ङ)** 1. **अपना अपराध स्वीकार करने के बजाय निरपराध को दोषी ठहराना, वाक्य-प्रयोग**– सभी जानते हैं कि मेरा मोबाइल राजपाल ने चुराया है। जब मैंने उससे इसके बारे में पूछा, तो वह मुझे ही दोषी ठहराने लगा। इसे कहते हैं–उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। 2. **अपने कार्यों के अनुरूप सभी को फल मिलता है, वाक्य-प्रयोग**–गरीबों को सताओगे तो इसका परिणाम भी भुगतना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल। जानते नहीं कहा भी गया है–जैसी करनी वैसी भरनी। 3. **अपराधी अपने अपराध के कारण भयभीत रहता है, वाक्य-प्रयोग**–कपूर साहब जी के घर में चोरी की जाँच-पड़ताल के लिए पुलिस गई, तो नौकर घबरा गया। पूछताछ करने पर वह कभी कुछ कहता तो कभी कुछ, उसके मुँह पर पसीना आ गया- ज़बान सूख गई। इसे कहते हैं–चोर की दाढ़ी में तिनका। 4. **किसी को उसकी आवश्यकता से कम वस्तु देना, वाक्य-प्रयोग**–इस पहलवान का आधा लीटर दूध से क्या होगा, यह तो इसके लिए ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। 5. **मूर्खों में थोड़ा पढ़ा-लिखा भी विद्वान समझा जाता है, वाक्य-प्रयोग**–गाँव में रामपाल ही मैट्रिक पास है। सभी लोग चिट्ठी पढ़वाने व लिखवाने उसी के पास आते हैं और उसे बड़ा विद्वान समझते हैं। इसे कहते हैं–अंधों में काना राजा। 6. **शक्तिशाली की ही विजय होती है, वाक्य-प्रयोग**–आखिर प्रेमपाल धन और शक्ति के बल पर चुनाव जीत ही गया। किसी ने ठीक ही कहा है, जिसकी लाठी उसकी भैंस। 7. **एक ही उपाय से दो काम निकल जाना, वाक्य-प्रयोग**–गोपाल इंटरव्यू देने आगरा जा रहा है। वहाँ चाचा जी से भी मिल लेगा। इसे कहते हैं–एक पंथ दो काज। **(च)** 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

9. संज्ञा

(क) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के भेदों के नाम हैं–(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा (4) समूहवाचक संज्ञा (5) द्रव्यवाचक संज्ञा 2. जिन शब्दों से किसी समूह अथवा समुदाय का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। **उदाहरण**–समाज, जनता, मेला, सभा, सेना, कक्षा, दल, परिवार, गुच्छा, काफ़िला, झुंड आदि। जिन शब्दों से द्रव्य (विभिन्न पदार्थों) का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–चाँदी, सोना, पीतल, लोहा, गेहूँ, सरसों आदि। 3. जब कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्ति विशेष का बोध न कराकर उस व्यक्ति जैसे गुणों या दोषों से युक्त अनेक व्यक्तियों का बोध कराती है, तब वह व्यक्तिवाचक न रहकर जातिवाचक बन जाती है। 4. कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा भी व्यक्तिवाचक संज्ञा के समान

प्रयुक्त होती है; जैसे–शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे। यहाँ 'शास्त्री जी' जातिवाचक संज्ञा के रूप में न होकर लाल बहादुर शास्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ, अत: व्यक्तिवाचक संज्ञा बन गया है। 5. भाववाचक संज्ञा जब बहुवचन में प्रयोग की जाती है, तो वह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है। 6. भाववाचक संज्ञाओं की रचना 5 प्रकार के शब्दों से होती है–

(1) जातिवाचक संज्ञाओं से

जातिवाचक संज्ञा	**भाववाचक संज्ञा**	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
इनसान	इनसानियत	ईश्वर	ऐश्वर्य
पशु	पशुता	शिशु	शैशव

(2) सर्वनाम शब्दों से

सर्वनाम	**भाववाचक संज्ञा**	**सर्वनाम**	**भाववाचक संज्ञा**
अपना	अपनापन, अपनत्व	स्व	स्वत्व
निज	निजता, निजत्व	सर्व	सर्वस्व

(3) विशेषणों से

विशेषण	**भाववाचक संज्ञा**	**विशेषण**	**भाववाचक संज्ञा**
सरल	सरलता	युक्त	युक्ति
भारतीय	भारतीयता	आज़ाद	आज़ादी

(4) क्रियाओं से

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**	**क्रिया**	**भाववाचक संज्ञा**
उतरना	उतराई	लिखना	लिखाई
उड़ना	उड़ान	पछताना	पछतावा

(5) अव्यय शब्दों से

अव्यय	**भाववाचक संज्ञा**	**अव्यय**	**भाववाचक संज्ञा**
कम	कमी	नित्य	नित्यता
जल्दी	जल्दबाज़ी	निरंतर	निरंतरता

(ख) 1. ड्राइवर, बस (जातिवाचक) 2. भारतवर्ष (व्यक्तिवाचक), संस्कृति (भाववाचक) 3. मनुष्य (जातिवाचक), प्रेम (भाववाचक) 4. ईमानदारी (भाववाचक), मूर्खता (भाववाचक) 5. सोने (द्रव्यवाचक), अँगूठी (जातिवाचक) 6. मेले (समूहवाचक), भीड़ (समूहवाचक) 7. मुसकुराहट (भाववाचक), दिल (जातिवाचक) **(ग)** 1. लंबाई, चौड़ाई 2. हरियाली 3. गहराई 4. निकटता 5. स्वास्थ्य **(घ)** 1. चालाकी 2. औचित्य 3. सफ़ेदी 4. देवत्व 5. शैशव 6. लड़कपन 7. पितृत्व 8. मातृत्व 9. मूर्खता 10. स्वामित्व 11. दुष्टता 12. हँसी 13. वकालत 14. डाका 15. चोरी **(ङ)** 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब) **(च)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

10. लिंग

(क) 1. शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते हैं। हिंदी में लिंग के दो भेद हैं–(1) **पुल्लिंग,** उदाहरण–लड़का, पुत्र, पिता, दादा, भाई, बकरा, वृक्ष, मच्छर, शेर, रीछ आदि। (2) **स्त्रीलिंग,** उदाहरण–लड़की, पुत्री, माता, नानी, बहन, लता, सुराही, चारपाई, पुस्तक, लेखनी, चींटी आदि। 2. लिंग की पहचान का निर्णय प्राय: दो प्रकार से किया जाता है–(1) शब्द के अर्थ से (2) शब्द के रूप से। प्राणीवाचक शब्दों का लिंग-निर्णय अर्थ के आधार पर किया जाता है तथा निर्जीव वस्तुओं या पदार्थों का लिंग-निर्णय रूप के आधार पर होता है। 3. **पुल्लिंग की पहचान के तीन नियम**–(1) संस्कृत से आए अंत में 'त्र' वाले शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे–अस्त्र, शस्त्र, शास्त्र,

नेत्र, चरित्र आदि। (2) शरीर के कुछ भागों के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे–सिर, हाथ, पैर, गला, मुँह, होठ, अँगूठा आदि। (3) महीनों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं; जैसे–मार्च, अप्रैल, अगस्त, चैत्र, वैशाख, जेठ आदि। (अपवाद–जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई आदि। **स्त्रीलिंग की पहचान के तीन नियम**–(1) शरीर के कुछ भागों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–नाक, जीभ, ठोड़ी, आँख, छाती, अंगुली, हड्डी आदि। (2) भोजन व मसालों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–सब्ज़ी, रोटी, दाल, हल्दी, मिर्च, लौंग आदि। (3) नदियों तथा झीलों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी, डल, झेलम आदि। 4. जो शब्द सदैव पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होते हैं नित्य पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं। **उदाहरण**–ड्राइवर, मैनेजर, मंत्री, राजदूत, चपरासी, प्रधानमंत्री, खटमल, तोता, कीड़ा, कौआ, पशु, पक्षी, उल्लू, भेड़िया, मच्छर, कीड़ा आदि। जो शब्द सदैव स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं, वे नित्य स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं। **उदाहरण**–सती, संतान, नर्स, धाय, सुहागिन, सवारी, कोयल, मैना, लोमड़ी, मकड़ी, जूँ, बुलबुल, गिलहरी, भेड़ आदि। **(ख) हिंदी**–स्त्रीलिंग **घड़ा**–पुल्लिंग **संतरा**–पुल्लिंग **बिल्ली**–स्त्रीलिंग **सुराही**–स्त्रीलिंग **आम**–पुल्लिंग **काँटा**–पुल्लिंग **नेत्र**–पुल्लिंग **कटहल**–पुल्लिंग **चचेरा**–पुल्लिंग **नाला**–पुल्लिंग **चील**–स्त्रीलिंग **ममेरी**–स्त्रीलिंग **पगड़ी**–स्त्रीलिंग **अंगूर**–पुल्लिंग **दूध**–पुल्लिंग **छाछ**–स्त्रीलिंग **लस्सी**–स्त्रीलिंग **(ग) सुत**–सुता **कहार**–कहारिन **बाघ**–बाघिन **पूज्य**–पूज्या **पंडा**–पंडाइन **दरज़ी**–दरज़िन **प्रिय**–प्रिया **हलवाई**–हलवाइन **मेहतर**–मेहतरानी **देव**–देवी **भील**–भीलनी **जोगी**–जोगिन **भवदीय**–भवदीया **नर**–नारी **ठाकुर**–ठकुराइन **मच्छर**–मादा मच्छर **खटमल**–मादा खटमल **भालू**–मादा भालू **उल्लू**–मादा उल्लू **बाज**–मादा बाज **आदमी**–औरत **(घ) रस्सी**–रस्सा **शिष्या**–शिष्य **सेविका**–सेवक **कांता**–कांत **आचार्या**–आचार्य **पाठिका**–पाठक **चंचला**–चंचल **प्रिया**–प्रिय **नायिका**–नायक **अनुजा**–अनुज **देवी**–देव **विधवा**–विधुर **मूर्खा**–मूर्ख **देवरानी**–देवर **विदुषी**–विद्वान **छिपकली**–नर छिपकली **मकड़ी**–नर मकड़ी **गिलहरी**–नर गिलहरी **कोयल**–नर कोयल **चील**–नर चील **मक्खी**–नर मक्खी **(ङ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग, स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग, स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. स्त्रीलिंग

11. वचन

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो भेद होते हैं–(1) **एकवचन**–शब्द के जिस रूप से एक वस्तु, प्राणी या पदार्थ का बोध होता हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–लड़का, कमीज़, साड़ी, बकरी, पुस्तक, टोपी आदि। (2) **बहुवचन**–शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं, प्राणियों या पदार्थों का बोध होता हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–लड़के, कमीज़ें, साड़ियाँ, बकरियाँ, पुस्तकें, टोपियाँ आदि। 2. वचन की पहचान दो प्रकार से की जाती है–(1) **संज्ञा या सर्वनाम शब्द के द्वारा**–जब वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम अपनी संख्या (एक या एक से अधिक) का बोध कराते हैं; जैसे–

(क)	**(ख)**	**एकवचन**	**बहुवचन**
● छड़ी रखो।	छड़ियाँ रखो।	छड़ी	छड़ियाँ
● बच्चा बैठा है।	बच्चे बैठे हैं।	बच्चा	बच्चे
● मैं लिख रहा हूँ।	हम लिख रहे हैं।	मैं	हम
● क्या वह आ गया?	क्या वे आ गए?	वह	वे

(2) **क्रिया के द्वारा**–कुछ संज्ञा शब्दों का एकवचन व बहुवचन दोनों में समान रूप रहता है; जैसे–साधु, छात्र, बालक, राजा, चोर, डाकू आदि। इस स्थिति में उनके वचन की पहचान वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया शब्दों द्वारा होती है; जैसे–

(क)	(ख)
• राजा सो गया है।	राजा सो गए हैं।
• पुलिस ने चोर पकड़ लिया है।	पुलिस ने चोर पकड़ लिए हैं।
• बालक उठ गया था।	बालक उठ गए थे।
• साधु चला गया था।	साधु चले गए थे।

3. निम्नलिखित परिस्थितियों में एकवचन कर्ता को बहुवचन में प्रयोग किया जाता है; जैसे-(i) किसी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए शब्द के एकवचन के स्थान पर बहुवचन रूप का प्रयोग किया जाता है; जैसे–(क) शिवा जी वीर पुरुष थे। (ख) मेरे नाना जी चिकित्सक हैं। (ग) गुरु जी पधारेंगे। जिन व्यक्तियों का हम आदर करते हैं, उनके प्रति एकवचन की क्रिया सम्मान नहीं दर्शा पाती है। अत: क्रिया का बहुवचन रूप प्रयोग किया जाता है। (ii) लोक-व्यवहार में कुछ शब्दों का बहुवचन रूप ही प्रयोग में आता है; जैसे–'तू' एकवचन के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग। 'तू' का प्रयोग केवल अत्यंत प्रिय या अत्यंत छोटे के लिए ही किया जाता है, अन्यथा यह अप्रिय लगता है और अपमानजनक भी; जैसे–

(क)	(ख)
(क) तू कब आएगा?	(क) तुम कब आओगे?
(ख) तूने क्या खाया?	(ख) तुमने क्या खाया?
(ग) तू कब उठेगा?	(ग) तुम कब उठोगे?

(iii) कभी-कभी बड़प्पन दिखाने में भी 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग कर दिया जाता है; जैसे-राजा बोला–''हम अकेले ही सैर को जाएँगे।'' पिता जी बोले–''हमें सुबह जल्दी उठना है।'' 4. जिन संज्ञा शब्दों के साथ 'दल, समूह, सेना, जाति' आदि प्रयुक्त होता है, उनका प्रयोग केवल एकवचन में ही किया जाता है; पदार्थसूचक शब्दों (दूध, पानी, तेल, घी, सोना, चाँदी, चाय तथा कॉफ़ी) आदि का प्रयोग एकवचन में होता है; जनता व भीड़ आदि शब्द एकवचन में प्रयोग किए जाते हैं। भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग प्राय: एकवचन में होता है। **(ख) चादर**-चादरें **चाबी**-चाबियाँ **गोली**-गोलियाँ **पुस्तक**-पुस्तकें **मक्खी**-मक्खियाँ **शक्ति**-शक्तियाँ **पंखा**-पंखे **साड़ी**- साड़ियाँ **नेता**-नेतागण **मित्र**-मित्रगण **झाड़ी**-झाड़ियाँ **संत**-संतजन **गरीब**-गरीबलोग **प्रजा**- प्रजाजन **पक्षी**-पक्षीवृंद **गौ**-गौएँ **मज़दूर**-मज़दूरवर्ग **श्रोता**-श्रोतागण **पाठक**-पाठकवृंद **विधि**- विधियाँ **राह**-राहें **पक्षी**-पक्षीवृंद **माला**-मालाएँ **रस्सा**- रस्से **नेता**-नेतागण **चिड़िया**- चिड़ियाँ **झील**-झीलें **(ग) वधुएँ**-बहुवचन **प्राण**-बहुवचन **आशाएँ**-बहुवचन **लू**- एकवचन **दर्शन**-बहुवचन **लिपि**-एकवचन **गलती**-एकवचन **गुरुजन**-बहुवचन **बोलियाँ**- बहुवचन **स्त्रियाँ**-बहुवचन **सोना**-एकवचन **धेनु**-एकवचन **मालाएँ**-बहुवचन **लताएँ**- बहुवचन **विधि**-एकवचन **लड़के**-बहुवचन **चुटियाँ**-बहुवचन **घोड़े**-बहुवचन **अमीरलोग**-बहुवचन **सेनाएँ**-बहुवचन **आँसू**-बहुवचन **गति**-एकवचन **वस्तु**-एकवचन **चील**-एकवचन **(घ) पंखे**-पंखा **स्त्रियाँ**-स्त्री **गौएँ**-गौ **बेलें**-बेल **खटियाँ**- खटिया **कलमें**-कलम **नायिकाएँ**-नायिका **जुएँ**-जू **संतजन**-संत **अमीरलोग**-अमीर **गलियाँ**-गली **कलाएँ**-कला **पाठकवृंद**-पाठक **लुटियाँ**-लुटिया **अबलाएँ**-अबला **रीतियाँ**-रीति **बहुएँ**-बहू **छात्राएँ**-छात्रा **गलतियाँ**-गलती **कुएँ**-कुआ **बालिकाएँ**- बालिका **(ङ)** 1. यात्रियाँ 2. पत्तियाँ 3. छात्राएँ 4. धातुएँ 5. कुएँ **(च)** 1. चुप होकर उसने अपने आँसू पोंछ डाले। 2. आज एक वर्ष बाद गुरु जी के दर्शन हुए। 3. तुम्हारे केश बहुत घने हैं। 4. गरमियों में रातें छोटी होती हैं। 5. सड़क पर लोग एकत्र हो गए। **(छ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

12. कारक

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया, अन्य संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। **कारक के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं**–(1) कर्ता कारक (2) कर्म कारक (3) करण कारक (4) संप्रदान कारक (5) अपादान कारक (6) संबंध कारक (7) अधिकरण कारक (8) संबोधन कारक 2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। **उदाहरण–नेहा** ने गीत गाया। 3. वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया के व्यापार (चेष्टा) का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। **उदाहरण–● कुत्ते** को मत मारो। ● शेर ने **हिरन** को मार डाला। 4. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो, वह करण कारक कहलाता है। **उदाहरण–●** नौकर **ताँगे** से गाँव गया। ● रवि ने **पेंसिल** से चित्र बनाया। 5. वाक्य में प्रयुक्त कर्ता जिसके लिए कोई क्रिया करे या जिसे कुछ दे, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। **उदाहरण–●** वैध जी **रोगी** के लिए औषधि लाए। ● रमन ने **बहन** को पुस्तक दी। **(ख)** 1. (i) पेड़ से फल गिरे। (ii) सूर्य पूर्व से निकलता है। 2. (i) अजय का गाँव दूर है। (ii) तुम्हारा नौकर कब आएगा। 3. (i) प्याला मेज़ पर रख दो। (ii) मैं दो दिन में आऊँगा। **(ग)** 1. **कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर**–दोनों कारकों में 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है। कर्म कारक में क्रिया के प्रभाव का भाव है; जबकि संप्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है। जैसे–● राघव ने **गेंद** को उठाया।→(क्रिया का प्रभाव → कर्म कारक) ● राघव ने **दादा जी** को चाय दी।→ (देने का भाव→संप्रदान कारक) 2. **करण कारक और अपादान कारक में अंतर**– करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, किंतु अर्थ की दृष्टि से दोनों में भेद है। करण कारक में किसी की सहायता से क्रिया की जाती है; जैसे–राजीव **साइकिल** से स्कूल जाता है। इस वाक्य में क्रिया साइकिल से संपन्न हो रही है। अत: 'साइकिल' करण कारक है। परंतु अपादान कारक में एक वस्तु दूसरे से अलग होनी पाई जाती है; जैसे–वे **गाँव** से आए हैं। यहाँ गाँव से अलगाव का बोध होने के कारण 'गाँव' अपादान कारक है। **(घ)** 1. अधिकरण कारक 2. अपादान कारक 3. संबंध कारक 4. संबंध कारक 5. संप्रदान कारक 6. कर्ता कारक, कर्म कारक 7. संबोधन कारक 8. करण कारक 9. संप्रदान कारक 10. करण कारक **(ङ)** 1. गरीबों को दान दो। 2. अपने भाई को समझाओ। 3. नरेश को गाँव जाना है। 4. मैं रात को आऊँगा। 5. परीक्षा फरवरी में होगी। 6. कपड़े अलमारी में रख दो। 7. राघव ताँगे से गाँव गया। 8. चोर लोग रस्सी से बाँधकर ले गए। 9. अनुराग सीढ़ी से छत पर चढ़ा। 10. राघव के पिता डॉक्टर हैं। **(च)** 1. टोंटी (अपादान कारक) 2. साइकिल (करण कारक) 3. छड़ी (करण कारक) 4. हिमालय (अपादान कारक) 5. कमरे (अपादान कारक) **(छ)** 1. कविता (कर्म कारक) 2. राघव (संप्रदान कारक) 3. पत्र (कर्म कारक) 4. खाने (संप्रदान कारक) 5. भिखारी (संप्रदान कारक) **(ज)** 1. कर्ता 2. को 3. सजीव 4. निर्जीव 5. करण

13. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण**– राजीव प्रात: शीघ्र उठता है। सर्वप्रथम **वह** अपने माता-पिता को प्रणाम करता है। **वह** राजीव (संज्ञा) के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। अत: 'वह' सर्वनाम है। सर्वनाम के छह भेद होते हैं–(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चय- वाचक

सर्वनाम (4) संबंधवाचक सर्वनाम (5) प्रश्नवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम 2. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं–**(क) उत्तम पुरुष**–बोलने वाला या लेखक अपने नाम के बदले जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–मैं, हम, मुझे, हमको आदि। **(ख) मध्यम पुरुष**– बोलने वाला या लेखक सुनने या पढ़ने वालों के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–तू, तुम, तुम्हें आदि। **(ग) अन्य पुरुष**–बोलने वाला या लिखने वाला 'अपने' तथा 'सुनने वालों' व 'पढ़ने वालों' के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–वह, वे, उसे, उनका आदि। 3. किसी निश्चित संज्ञा की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करने वाले शब्द को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। ये प्रमुख हैं–यह, वह, ये, वे, इन्हें, उन्हें, इन, उन। **उदाहरण**–(1) मेरा घर **यह** नहीं, **वह** है। (2) मैं कुछ आम लाया हूँ। **इन्हें** तुम खा लो। (3) **वे** किसके बच्चे हैं? (4) **ये** मेरी पुस्तकें हैं। (5) **वे** हमारे पशु हैं। (6) **उन्हें** यहाँ बुला लो। जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। प्रमुख अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं–'कोई, कुछ, किसी' आदि हैं। **उदाहरण**–(1) दाल में **कुछ** पड़ा है। (2) वहाँ **कोई** नहीं जा सकता। (3) मीना ने **किसी** से बात नहीं की। 4. जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न प्रकट होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण**–(1) शोर **कौन** मचा रहा है? (2) तुम्हारे थैले में **क्या** है? (3) वह **किसके** साथ स्कूल गया था? 5. स्वयं के लिए प्रयुक्त सर्वनाम शब्द को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। **उदाहरण**–(1) सारा काम मैं **स्वयं** कर लूँगा। (2) तुम घर **खुद** चले जाना। (3) वह **आप** ही उठकर खड़ा हो गया। 6. (1) आदरार्थक 'आप' का बहुवचन 'आप' या 'आप लोग' होता है, किंतु निजवाचक में 'आप' ही दोनों वचनों में होता है; जैसे–

पुरुषवाचक 'आप'	**निजवाचक 'आप'**
• आप क्या लेंगे?	• आप भला तो जग भला।
• आप लोग कब लौटेंगे?	• वह आप सारा काम कर लेगा।

(2) आदरार्थक 'आप' प्राय: मध्यम पुरुष और कभी-कभी अन्य पुरुष के लिए आता है, किंतु निजवाचक 'आप' तीनों पुरुषों के लिए आता है; जैसे–(1) **आप** यहाँ बैठिए। (मध्यम पुरुष) (2) शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे। **आप** जैसा सरल और ईमानदार व्यक्ति मिलना कठिन है। (अन्य पुरुष)। 7. जो सर्वनाम वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनाम से संबंध बताए, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–'जो-वह, जैसा-वैसा, जो-सो' आदि। **उदाहरण**–(1) जो वह चाहेगा, वह मैं नहीं करूँगा। (2) जो सोता है, सो खोता है। (3) जैसा करोगे, वैसा भरोगे। (4) जिसकी लाठी, उसकी भैंस। **(ख)** 1. कोई (अनिश्चयवाचक सर्वनाम) 2. कौन (प्रश्नवाचक सर्वनाम) 3. मैं (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम), उससे (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम) 4. जो, सो (संबंधवाचक सर्वनाम) 5. जिसकी, उसकी (संबंधवाचक सर्वनाम) 6. आप (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम) क्या, (प्रश्नवाचक सर्वनाम) 7. मेरे (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम) 8. उसका (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम) **(ग)** 1. तू 2. मैंने, उसे 3. आपका, आप 4. वह 5. तुम, उसके 6. वे 7. उन्हें **(घ)** 1. मुझे विद्यालय जाना है। 2. तुम्हें यहाँ किसने भेजा है? 3. हमें कल मुंबई जाना है। 4. मैंने तुझे बीस रुपए दिए थे। **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **(च)** 1. कोई कुछ 2. वे कुछ कोई 3. खुद 4. आप खुद स्वयं 5. मुझ वे

14. विशेषण

(क) 1. संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। **उदाहरण–काली** बकरी, **मीठे** आम, **थोड़ी** चाय 2. जो विशेषण शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताता है, उसे 'प्रविशेषण' कहते हैं। **उदाहरण**–(1) राम **बड़े** वीर थे। (2) वह अब **बिलकुल** ठीक है। इन उदाहरणों में 'वीर', 'ठीक' विशेषण हैं तथा 'बड़े', 'बिलकुल' प्रविशेषण हैं। 3. संज्ञा या सर्वनाम के गुण, रंग, आकार और दशा आदि का बोध कराने वाले शब्द को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। गुणवाचक विशेषण निम्नलिखित विशेषताओं का बोधक होता है। (1) **गुणबोधक**–अच्छा, विनम्र, शिष्ट, भला, सभ्य, ईमानदार, दयावान आदि। (2) **दोषबोधक**–दुष्ट, अभिमानी, कुटिल, बुरा, अशिष्ट, कुरूप, बेईमान, कायर, दुर्जन आदि। (3) **स्पर्शबोधक**–कोमल, मखमली, खुरदुरा, कठोर, गरम, ठंडा आदि। (4) **अवस्थाबोधक**–गीला, युवा, वृद्ध, बाल, तरल, ठोस, सूखा, किशोर आदि। (5) **स्थानबोधक**–विदेशी, देशी, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, बनारसी, इलाहाबादी, लखनवी आदि। (6) **रंगबोधक**–लाल, पीला, सतरंगी, बहुरंगी, चितकबरा, नीला, आसमानी आदि। (7) **आकारबोधक**–चौकोर, विशाल, सूक्ष्म, ठिगना, सुडौल, तिकोना, अंडाकार, त्रिभुजाकार, गोल, लंबा, ऊँचा आदि। (8) **स्वादबोधक**–नमकीन, चटपटा, कसैला, खट्टा, मीठा, कड़वा आदि। (9) **दशाबोधक**–स्वस्थ, अस्वस्थ, सुखी, दुखी, रोगी, बिगड़ैल, धनी, निर्धन, गरीब आदि। (10) **दिशाबोधक**–पूर्वी, पश्चिमी, ऊपरी, भीतरी, बाहरी आदि। (11) **कालबोधक**–वार्षिक, पिछला, आगामी, नया, पुराना, दैनिक, मौसमी, प्राचीन आदि। 4. जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे-दो लड़के, चार केले, पाँच पुस्तकें, कुछ लोग, तीसरी मंज़िल आदि। संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण। एक, दो, तीन, दूसरा, चौथा, दो गुना, तीन गुना, सभी, सब-के-सब, प्रत्येक, हरेक आदि शब्द निश्चित संख्यावाचक विशेषण होते हैं तथा थोड़े, सैकड़ों, हज़ारों, कुछ आदि शब्द अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं। 5. जिन शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण या नाप-तौल का पता चलता है, वे परिमाणवाचक विशेषण होते हैं; जैसे-थोड़ा आटा, अधिक रेत, चार मीटर कपड़ा, दो लीटर तेल, थोड़ा दूध आदि। परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण–जिन शब्दों से वस्तु या पदार्थ के निश्चित परिमाण का बोध हो, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–चार किलो चावल, तीन लीटर तेल, दस ग्राम चाँदी, दो मीटर कपड़ा, एक लीटर दूध आदि। **(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण**–जिन विशेषणों से विशेष्य के निश्चित परिमाण का ज्ञान न हो, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–कम दही, थोड़ा दूध, थोड़ी चीनी, सारा आटा, कुछ मिठाई आदि। 6. ऐसा सर्वनाम जो संज्ञा की ओर संकेत करता है, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–(1) **इस** कुरसी को बाहर ले जाओ। (2) **उस** लड़के को भीतर बुलाओ। (3) **ये** लोग यहाँ क्यों खड़े हैं? (4) **वे** लोग कहाँ जा रहे हैं? **सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर**–सर्वनाम के तुरंत बाद संज्ञा आने पर वह सर्वनाम न रहकर सार्वनामिक विशेषण बन जाता है। **उदाहरण–**

	सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
(1)	वह कल आएगा।	वह लड़का कल आएगा।

(2) मुझे कुछ चाहिए। मुझे कुछ केले चाहिए।
(3) वह मेरा पड़ोसी है। वह लड़का मेरा पड़ोसी है।

7. जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञा से बनाया जाता है, उसे व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–इलाहाबादी अमरूद, बनारसी साड़ी, भारतीय संगीत, जापानी मशीन, बंगाली रसगुल्ला आदि। यहाँ इलाहाबादी, बनारसी, भारतीय, जापानी तथा बंगाली व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बने विशेषण हैं (इलाहाबाद-इलाहाबादी, बनारस-बनारसी, भारत-भारतीय, जापान-जापानी, बंगाल-बंगाली)। 8. संख्यावाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराता है जबकि परिमाणवाचक विशेषण से किसी वस्तु के परिमाण का पता चलता है। जैसे-

संख्यावाचक विशेषण	**परिमाणवाचक विशेषण**
थोड़े आदमी	थोड़े चावल
अधिक आम	अधिक चाय
कम छात्र	कम समय
कुछ छात्र	कुछ पानी

(ख) विशेषण–1. इसी 2. बेरोज़गार 3. कुछ 4. हज़ारों 5. यह 6. कुछ **विशेष्य**–1. नगर 2. आदमी 3. लड़के 4. लोग 5. किताब 6. दूध **(ग)** (अ) **निश्चित संख्यावाचक विशेषण**-1. दो, चौथा **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण**-2. सैकड़ों, हज़ारों (ब) **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण**-1. चार किलो, तीन लीटर **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण** 2. कम, सारा **(घ)** 1. नरम–गुणवाचक विशेषण 2. भयानक–गुणवाचक विशेषण 3. एक–निश्चित संख्यावाचक विशेषण 4. इस–सार्वनामिक विशेषण 5. अंतिम–निश्चित संख्यावाचक विशेषण 6. हट्टा-कट्टा-गुणवाचक विशेषण **(ङ) नीति**- नैतिक **जाति**-जातीय **लखनऊ**-लखनवी **समय**-सामयिक **इतिहास**-ऐतिहासिक **बनारस**-बनारसी **पिता**-पैतृक **पुराण**-पौराणिक **श्रद्धा**-श्रद्धालु **ऊपर**-ऊपरी **शरीर**- शारीरिक **आगे**-अगला **(च)** 1. सारे (संख्यावाचक) 2. सारा (परिमाणवाचक) 3. सारा (संख्यावाचक) 4. थोड़ी (परिमाणवाचक) 5. थोड़े (संख्यावाचक) 6. थोड़ी (परिमाणवाचक) 7. थोड़ा-थोड़ा (परिमाणवाचक) **(छ)** 1. ऐतिहासिक 2. पौराणिक 3. मासिक 4. भूखा-प्यासा 5. भारतीय **(ज)** 1. उस (सार्वनामिक विशेषण) 2. कुछ (सर्वनाम) 3. आप, आपकी (सर्वनाम) 4. यह (सार्वनामिक विशेषण) 5. वह (सार्वनामिक विशेषण) **(झ)** 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

15. क्रिया

(क) 1. किसी कार्य, घटना या अस्तित्व का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। **उदाहरण**–(1) प्रिया गाती है। (कार्य होने का बोध) (2) पुस्तक मेज़ पर है।(वस्तु के अस्तित्व का बोध) (3) वर्षा में कपड़े भीग गए। (घटना के होने का बोध) 2. क्रिया के मूल अंशों को धातु कहते हैं। पढ़, लिख, खेल, चल, गा, सो, सुन, आ, बैठ आदि क्रियाओं के मूल रूप (धातु) हैं। इनसे अनेक क्रियाएँ बनती हैं। 'आ, जा, चल, खा, पी, देख, सुन, पढ़' आदि प्रत्येक धातु के मूल रूप में 'ना' जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है; जैसे–आना, जाना, चलना, खाना, पीना, देखना, सुनना, पढ़ना आदि। ये क्रियाएँ संज्ञा का भी काम करती हैं; जैसे-उसे **लिखना** आता है। 3. ऐसी क्रियाएँ जो अभीष्ट अर्थ प्रस्तुत नहीं कर पातीं, अपूर्ण क्रियाएँ कहलाती हैं। अपूर्ण क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिए जो शब्द प्रयोग किए जाते हैं, वे पूरक क्रिया

कहलाते हैं। 4. क्रिया का वह अंश जो मुख्य अर्थ देता है उसे मुख्य क्रिया कहते हैं। मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया सहायक क्रिया कहलाती है; जैसे–'बच्चा सोता है।' वाक्य में 'सोता' मुख्य क्रिया तथा 'है' सहायक क्रिया है। 5. ऐसे वाक्य जिनमें कर्ता के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया जाता तथा क्रिया का करना कर्ता में ही निहित रहता है, उन वाक्यों में प्रयुक्त होने वाली क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। **उदाहरण–**(1) लड़के खेलते हैं। (2) पक्षी उड़ते हैं। (3) अजय हँसेगा। जिस क्रिया के साथ कर्म रहता है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया का करने वाला कर्ता ही होता है; परंतु उसके कार्य का फल कर्म पर पड़ता है; जैसे–(1) मैं **पत्र** लिखता हूँ। (2) अर्जुन ने **बाण** चलाया। 6. **अकर्मक क्रिया की पहचान–**यदि क्रिया से पहले 'क्या' तथा 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर न मिले, तो वह क्रिया अकर्मक मानी जाती है; जैसे–कुत्ता भौंकता है। **प्रश्न**–कुत्ता 'क्या' भौंकता है? किसको भौंकता है? इन प्रश्नों का यहाँ कोई उत्तर नहीं मिलता, अत: क्रिया अकर्मक है। **सकर्मक क्रिया की पहचान**–यदि क्रिया से पहले 'क्या, किसे या किसको' लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर मिले, तो क्रिया सकर्मक होती हैं; जैसे–(1) मैं पत्र लिखता हूँ (क्या लिखता हूँ?–पत्र)–सकर्मक क्रिया (लिखता हूँ) (2) अर्जुन ने बाण चलाया (क्या चलाया?–बाण)–सकर्मक क्रिया (चलाया) 7. संरचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद हैं– (1) सामान्य क्रिया (2) संयुक्त क्रिया (3) नामधातु क्रिया (4) प्रेरणार्थक क्रिया (5) पूर्वकालिक क्रिया (6) विधिसूचक क्रिया। (7) तात्कालिक क्रिया। 8. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन प्रकार हैं–1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य। वाच्य के तीन भेद हैं–(1) **कर्तृवाच्य**– जिस वाक्य में क्रिया द्वारा कही गई बात का मुख्य विषय कर्ता हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्ता से होता है तथा क्रिया के लिए वचन भी कर्ता के अनुसार ही होता है। **उदाहरण–**(1) धोबी कपड़ा धो रहा है। (2) रीमा भोजन बनाती है। (3) रमेश पत्र लिखता है। (2) **कर्मवाच्य**–क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि उसका प्रयोग कर्म के अनुसार किया गया है अर्थात क्रिया के लिंग व वचन कर्म के अनुसार हैं और कर्ता की प्रधानता नहीं है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। **उदाहरण–**(1) लड़कों से पत्र लिखे गए। (2) डॉक्टर के द्वारा रोगी को दवा दी गई। (3) गायकों द्वारा गीत गाए जाएँगे। (3) **भाववाच्य**– क्रिया के जिस रूप में न कर्ता की प्रधानता हो और न कर्म की, अपितु जहाँ क्रिया का भाव ही मुख्य विषय हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। **उदाहरण–**(1) नेहा से बैठा नहीं जाता। (2) रवि से चला नहीं जाता। (3) अब उठा जाए। (4) कुछ खाया जाए। **(ख)** 1. जिस वाक्य में क्रिया का एक ही कर्म हो, वह एककर्मक क्रिया कहलाती है, जैसे–(1) राजीव साइकिल चला रहा है। (2) नेहा गीत गाती है। 2. जिस वाक्य में क्रिया के दो कर्म होते हैं, वह द्विकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे–(1) रमेश ने राघव को स्वेटर दिया। 'दिया' क्रिया के दो कर्म हैं–राघव, स्वेटर (2) मंत्री ने खिलाड़ी को पुरस्कार दिया। 'दिया' क्रिया के दो कर्म हैं–खिलाड़ी, पुरस्कार **(ग)** 1. लिखती–धातु 'लिख' 2. पढ़ेगा–धातु 'पढ़' 3. देखते–धातु 'देख' 4. जाता–धातु 'जा' **(घ)** 1. अकर्मक 2. सकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक 5. अकर्मक **(ङ)** 1. कर्तृवाच्य 2. कर्तृवाच्य 3. कर्तृवाच्य 4. भाववाच्य 5. भाववाच्य 6. कर्मवाच्य **(च)** 1. तुम गीत गा रहे हो। 2.

शायद हम सब मेला देखने जाएँ। 3. कवि कविता पढ़ता है। 4. लोगों ने त्योहार मनाया। **(छ) हाथ**–हथियाना **चक्कर**–चकराना **लालच**–ललचाना **रंग**–रँगना **अपना**– अपनाना **बात**–बतियाना **(ज)** 1. रोना 2. सोना 3. खेलना **(झ)** 1. विवेक ने राहुल को पुस्तक दी। 2. पुजारी ने भक्त को प्रसाद दिया। 3. चाचा जी ने दक्ष को घड़ी दी। **(ञ)** 1. अध्यापक छात्रों को हिंदी पढ़ाते हैं। 2. अजय रवि को पत्र लिखता है। 3. पिता जी ने भाई को रुपए दिए। **(ट)** 1. अध्यापक द्वारा विद्यार्थी को पढ़ाया गया। 2. मुझे मनोहर ने सूचना दी। 3. हमारे द्वारा व्याकरण पढ़ी जाती है। 4. पक्षियों से उड़ा जाता है। 5. बच्चों से खेला जाएगा। **(ठ)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✗ 7. ✓

16. अविकारी शब्द

(क) 1. पुरुष, वचन, लिंग या कारक इत्यादि के कारण जिन शब्दों में किसी प्रकार का विकार नहीं होता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्द के चार भेद होते हैं–(1) क्रियाविशेषण (2) संबंधबोधक अव्यय (3) समुच्चयबोधक अव्यय (4) विस्मयादिबोधक अव्यय 2. जो शब्द (पद) वाक्य में प्रयुक्त क्रियापद की विशेषता बताए, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण के निम्नलिखित कार्य हैं– (1) क्रिया के संपादित होने की रीति बताना। (2) क्रिया के होने की निश्चितता या अनिश्चतता बताना (अवश्य, शायद आदि शब्दों द्वारा) (3) क्रिया के होने में निषेध या स्वीकृति बताना (मत, हाँ, नहीं आदि शब्दों द्वारा) तथा (4) क्रिया के होने का स्थान, स्थिति, दिशा और परिणाम के विषय में बताना। 3. क्रिया के होने के समय की सूचना देने वाले क्रियाविशेषण को कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। **उदाहरण** –(1) तुम अब जा सकते हो। (3) राजीव परसों आएगा। (3) विद्यार्थी दिनभर पढ़ते रहे। 4. क्रिया के होने के स्थान का बोध कराने वाले क्रियाविशेषण को स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–(1) लड़के बाहर खेल रहे हैं। (2) कुत्ते इधर-उधर जा रहे हैं। (3) दादा जी भीतर बैठे हैं। 5. क्रिया की मात्रा या परिमाण का बोध कराने वाले क्रियाविशेषण को परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–(1) उतना खाओ, जितना पचा सको। (2) कुछ पढ़ लो। (3) वह ढेरों जलेबियाँ खा गया। 6. क्रिया की रीति अर्थात् 'होने' का 'ढंग' बताने वाले क्रिया विशेषण को रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। **उदाहरण**–(1) विमल शांतिपूर्वक बातें कर रहा था। (2) कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा था। (3) वह अचानक ही गिर पड़ा। 7. दो शब्दों, वाक्यों या उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्द को समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। **उदाहरण**–(1) मसूरी और नैनीताल ठंडे क्षेत्र हैं।–'और'–दो शब्दों को जोड़ रहा है। (2) तुम रुकोगे या जाओगे।–'या'–दो वाक्यों को जोड़ रहा है। (3) मैं लखनऊ गया था, ताकि मंत्री जी से मिल सकूँ।– 'ताकि'–दो उपवाक्यों को जोड़ रहा है। 8. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताता है, उसे संबंधबोधक कहते हैं। **उदाहरण**–(1) मंदिर के सामने पीपल का पेड़ है। (2) वह चोर आकाश की ओर देख रहा था। (3) पप्पू चाचा जी के साथ गाँव गया। 9. वाक्य में प्रयुक्त जिस अव्यय शब्द के द्वारा हर्ष, शोक, विस्मय, दुःख, ग्लानि, लज्जा आदि भाव प्रकट होते हैं; उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। **उदाहरण**–(1) वाह! क्या बात कही है। (2) हाय! डाकुओं ने मुझे कहीं का न छोड़ा। (3) छिः-छिः! इतनी गंदगी फैला रखी है। (4) शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया। (5) उफ़! कितनी उमस है। (6) हे

प्रभु! सबको सद्‌बुद्‌धि दो। 10. वह शब्द जो वाक्य में किसी शब्द के बाद आकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल देता है, उसे निपात कहते हैं। **उदाहरण–ही**– (1) वह मुझे **ही** क्यों परेशान करता है? (2) तुम हर बार लखनऊ **ही** क्यों जाते हो? (3) यह काम आपको **ही** करना होगा। (4) उसे रेलवे स्टेशन तुम **ही** लेकर जाओगे। **भी**–(1) हम **भी** चलेंगे, जल्दी क्या है? (2) मैं अकेली थी, रवि **भी** मेरे साथ था। (3) वह **भी** तो चलेगा बारात में। (4) हम **भी** तो प्रतीक्षारत हैं। **तो**–(1) मुझे बैठने **तो** दो। (2) मुझे उठ **तो** जाने दो। (3) मैं जाकर क्या करूँगा, भैया गए **तो** हैं। **तक**– (1) बात बनाते हो, तुम दिखाने **तक** नहीं गए बीमार को। (2) तुमने चिट्‌ठी **तक** नहीं लिखी। (3) मुझसे बैठा **तक** नहीं जा रहा है। **(ख)** 1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक समान घटकों, वाक्यांशों या वाक्यों को परस्पर मिलाते हैं। 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक वे अव्यय हैं जो एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को मुख्य उपवाक्य से मिलाते हैं। **(ग)** 1. तुम और वह गाँव जाओगे। 2. चाहे घड़ी लो, चाहे उसकी कीमत। 3. पारसचंद धनी ही नहीं, बल्कि दानी भी हैं। 4. परिश्रम करो अन्यथा सफलता से दूर ही रहोगे। 5. मैं समारोह में नहीं जा सकता; क्योंकि मैं बीमार हूँ। 6. यद्‌यपि वर्षा हुई, परंतु गरमी शांत न हुई। 7. आज 2 अक्टूबर अर्थात् शास्त्री जी का जन्मदिन है। 8. इतनी ज़ोर से बोलो कि सब सुन सकें। **(घ)** 1. उधर, इधर 2. मधुर 3. आज 4. एकाएक 5. प्रतिदिन 6. थोड़ा 7. आजकल, खूब 8. यथासमय **(ङ)** 1. कि 2. क्योंकि 3. तो 4. और 5. बल्कि **(च)** 1. भीतर 2. में 3. के बिना 4. के साथ 5. के सामने **(छ)** 1. शोकबोधक 2. क्रोधबोधक 3. विस्मयबोधक 4. हर्षबोधक 5. निवेदनबोधक 6. संबोधनबोधक 7. घृणाबोधक 8. हर्षबोधक **(ज)** 1. ही 2. तक 3. तो, भी 4. तक 5. भर 6. ही **(झ)** 1. धीरे-धीरे, रीतिवाचक 2. सहसा, रीतिवाचक 3. अधिक, परिमाणवाचक 4. अत्यंत परिमाणवाचक 5. ऊपर, स्थानवाचक 6. ध्यानपूर्वक, रीतिवाचक 7. अभी, कालवाचक

17. पद-परिचय तथा वाक्य-विचार

(क) 1. वाक्यों में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं। पदों का परिचय देना अर्थात् उनकी स्थिति बताना; उनका लिंग, वचन, कारक, भेद तथा अन्य पदों से संबंध बताना पद-परिचय कहलाता है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि वाक्य के अंतर्गत किसी शब्द की सभी भूमिकाओं का परिचय देना पद-परिचय कहलाता है। **उदाहरण**– 'नेहा पढ़ रही है।' इस वाक्य में 'नेहा' एक पद है। इसका व्याकरणिक परिचय होगा– व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक तथा 'पढ़ रही है' क्रिया की कर्ता। 2. शब्दों का ऐसा समूह, जो व्यवस्थित हो और अर्थ देता हो, उसे वाक्य कहते हैं। 3. वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया या विधान किया जाता है, उसे उद्‌देश्य कहते हैं। वाक्य में उद्‌देश्य के विषय में जो कुछ कहा या बताया जाए, उसे विधेय कहते हैं।

उदाहरण–वाक्य	**उद्‌देश्य**	**विधेय**
(1.) नौकरानी वस्त्र धो रही है।	नौकरानी	वस्त्र धो रही है।
(2) अजय भाषण दे चुका था।	अजय	भाषण दे चुका था।

4. अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं–(1) विधानवाचक वाक्य **उदाहरण**–रचना ने प्रश्न हल कर दिए हैं। (2) नकारात्मक वाक्य **उदाहरण**– वह क्रिकेट नहीं खेल पाया। (3) प्रश्नवाचक वाक्य **उदाहरण**–तुम आज मंदिर क्यों नहीं गए? (4) विस्मयवाचक वाक्य **उदाहरण**–अहा! कितना सुंदर दृश्य है। (5)

आज्ञावाचक वाक्य **उदाहरण**–सबसे प्रेम करो। (6) संदेहवाचक वाक्य **उदाहरण**–शायद आज आँधी आए। (7) इच्छावाचक वाक्य **उदाहरण**–जन्मदिन मुबारक हो। (8) संकेतवाचक वाक्य **उदाहरण**–यदि तुम मेहनत करते, तो सफल हो जाते। 5. रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं–(1) सरल या साधारण वाक्य, **उदाहरण**–राजीव हँस रहा है। (2) संयुक्त वाक्य, **उदाहरण**–अनुज बोलता है और राखी सुनती है। (3) मिश्र वाक्य, **उदाहरण**–मुझे सूचना मिली है कि आज मेहमान आएँगे। **(ख)** **उद्देश्य**–1. स्वावलंबी व्यक्ति 2. मैं 3. किसान 4. भिखारी 5. 'गोदान' **विधेय**–1. सदा सुखी रहता है। 2. नित्य रामचरितमानस का पाठ करता हूँ। 3. खेत जोत रहा है। 4. फुटपाथ पर बैठा था। 5. मुंशी प्रेमचंद की श्रेष्ठ रचना है। **(ग)** 1. शब्दों 2. वाक्य 3. उद्देश्य 4. उद्देश्य 5. समानाधिकरण 6. एक **(घ)** 1. आज्ञावाचक वाक्य 2. विधानवाचक वाक्य 3. इच्छावाचक वाक्य 4. इच्छावाचक वाक्य 5. संदेहवाचक वाक्य 6. आज्ञावाचक वाक्य 7. संकेतवाचक वाक्य 8. प्रश्नवाचक वाक्य **(ङ)** 1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. सरल वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. मिश्र वाक्य 6. संयुक्त वाक्य 7. मिश्र वाक्य 8. संयुक्त वाक्य 9. संयुक्त वाक्य 10. सरल वाक्य

18. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. बोलते अथवा कुछ पढ़ते अथवा लिखते समय भावानुसार अपनी बात समझाने के लिए हमें रुकना पड़ता है। यह रुकना या ठहरना ही 'विराम' है। लिखते समय इस विरामावस्था हेतु कुछ चिह्न निर्धारित कर लिए गए हैं, जिनका यथा संदर्भ प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को ही विराम-चिह्न कहते हैं। 2. वाक्य के सुंदर गठन और भावाभिव्यक्ति के लिए विराम-चिह्नों की बहुत उपयोगिता है। यदि इन चिह्नों का उपयोग न किया जाए, तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और वाक्य समझ नहीं आएँगे। **(ख)** 1. आपको क्या चाहिए? 2. शराब, शरीर और आत्मा का नाश करती है। 3. नहीं, यह नहीं हो सकता। 4. मोहित, अब शोर न मचाओ, चुपचाप पढ़ने बैठ जाओ। 5. जमाखोर व्यक्ति ईमानदार भी होते हैं। 6. विवरण के लिए नीचे देखें– 7. वह कष्ट सहता रहा; लोग आनंद लेते रहे। 8. सर्वनाम के चार भेद हैं:- 9. मुर्गे लड़कर लहूलुहान हो गए। 10. सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश जीवन के अंग हैं। 11. हाँ, मैं यह काम अवश्य करूँगा। 12. 'अंगद-रावण संवाद' पर एक टिप्पणी लिखिए। 13. राजा (उदास होकर)-अब क्या होगा? मंत्री (ढाढ़स बँधाते हुए)-भगवान पर भरोसा रखिए, राजन। 14. तिलक ने कहा था- ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' 15. 'गीता' एक धार्मिक ग्रंथ है।

19. अलंकार

(क) 1. शब्द तथा अर्थ की जिस विशेषता से काव्य का शृंगार होता है उसे अलंकार कहते हैं। अलंकार का कार्य काव्य का सौंदर्य बढ़ाना है। 2. अलंकार का वह रूप जिसमें विशिष्ट शब्द-प्रयोग के कारण भाषा में चमत्कार अथवा सौंदर्य आ जाए, उसे शब्दालंकार कहते हैं। ऐसे स्थान पर अलंकार शब्द पर आश्रित होते हैं अर्थात् शब्द बदल देने से उनका सौंदर्य अथवा अलंकार नष्ट हो जाता है। प्रमुख शब्दालंकार हैं–(1) अनुप्रास (2) यमक (3) श्लेष (1) **अनुप्रास अलंकार**–वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं। आवृत्ति का अर्थ है, एक से अधिक बार होना। वाक्य में प्रयुक्त वर्ण जब किसी निश्चित रूप से आवृत्ति करता है, तो अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे–(1) तरनि-तनुजा तट-तमाल-तरुवर बहु छाए। (2) विमल वाणी ने वीणा

ली कमल कोमल कर में सप्रीत (3) सुरमित सुंदर सुखद सुमन तुम पर खिलते हैं। (4) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में (2) **यमक अलंकार**–जहाँ एक शब्द बार-बार आए और उसका अर्थ बदल जाए, वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे–(1) काली घटा का घमंड घटा। (2) कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय। उहि खाए बौराय जग, यही पाए बौराय। (3) **श्लेष**–श्लेष का अर्थ है–चिपकना। जहाँ एक ही शब्द में एक ही बार प्रयुक्त होने पर दो या अधिक अर्थ चिपके (छिपे) होते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे–(1) माया महाठगिनी हम जानी। तिरगुन फाँस लिए कर डोले, बौले मधुरी बानी। (2) मधुबन की छाती को देखो। सूखी कितनी इसकी कलियाँ।। 3. प्रमुख अर्थालंकार निम्नलिखित हैं–(1) उपमा अलंकार (2) रूपक अलंकार (3) उत्प्रेक्षा अलंकार (4) अतिशयोक्ति अलंकार। (1) **उपमा अलंकार**–उपमा का अर्थ है–दो असमान वस्तुओं की तुलना करके उनमें कुछ समानता दिखाना। जिस वस्तु की तुलना की जाती है, उसे उपमेय और जिस वस्तु से तुलना की जाती है, उसे उपमान कहते हैं। दोनों वस्तुओं में कवि जो समानता दिखाता है, उसे साधारण धर्म तथा जिस शब्द से समानता सूचित की जाती है, उसे वाचक पद कहते हैं। यदि ये चारों शब्द उपस्थित हों, तो 'पूर्णोपमा' होती है। परंतु कई बार इनमें से एक या दो पद लुप्त भी हो जाते हैं, तब उसे 'लुप्तोपमा' कहते हैं। **उदाहरण**–(1) 'हरिपद कोमल कमल से' यहाँ भगवान के चरणों की तुलना कोमल कमल से की गई है। हरिपद (उपमेय), कमल (उपमान), कोमल (साधारण धर्म), से (वाचक पद) (2) हाय फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी। फूल (उपमेय), बच्ची (उपमान), कोमल (साधारण धर्म), सी (वाचक पद)। (2) **रूपक अलंकार**–जहाँ गुण की अत्यंत समानता दर्शाने के लिए उपमेय और उपमान को 'अभिन्न' अर्थात् 'एक' कर दिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। यहाँ एक प्रकार से उपमेय उपमान का ही रूप धारण कर लेता है। **उदाहरण**–मन-सागर, मनसा-लहरि। 4. **उत्प्रेक्षा अलंकार**–जहाँ उपमेय और उपमान की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना अथवा कल्पना कर ली जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा में मनोभावों मनु, मनहु, जनों, जनु, ज्यों, जनहु आदि शब्दों का प्रयोग होता है। **उदाहरण**–1. कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए। हिम के कणों से पूर्ण मानो, हो गए पंकज नए। 2. उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उसका लगा। मानो हवा के वेग से, सोता हुआ सागर जगा। **अतिशयोक्ति अलंकार**–जहाँ किसी का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि सीमा या मर्यादा का उल्लंघन हो जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। **उदाहरण**–1.आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस बार, तब तक चेतक था उस पार। 2. हनुमान की पूँछ में लगन न पाइ आग। लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग। **(ख)** 1. अलंकारों 2. आभूषण 3. शब्दालंकार 4. शब्दालंकार 5. अर्थालंकार **(ग)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗ **(घ)** 1. उपमा अलंकार 2. उपमा अलंकार 3. रूपक अलंकार 4. रूपक अलंकार 5. यमक अलंकार **(ङ)** 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

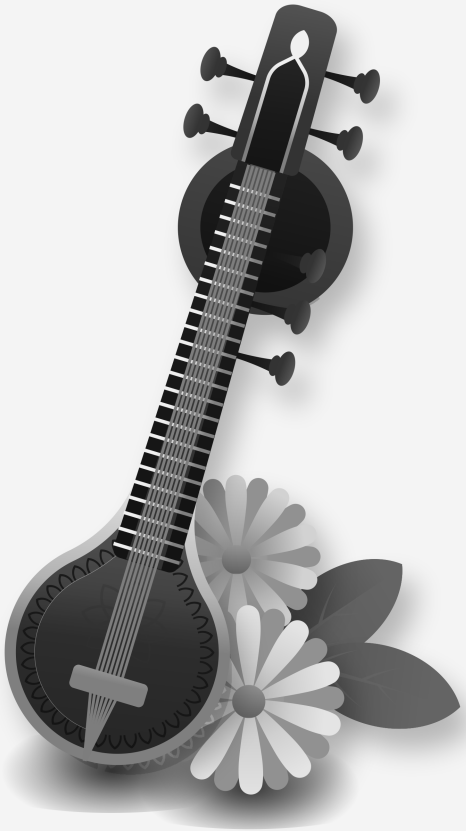

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com